बाइबल आधारित सुसमाचार का प्रचार और शिष्यत्व

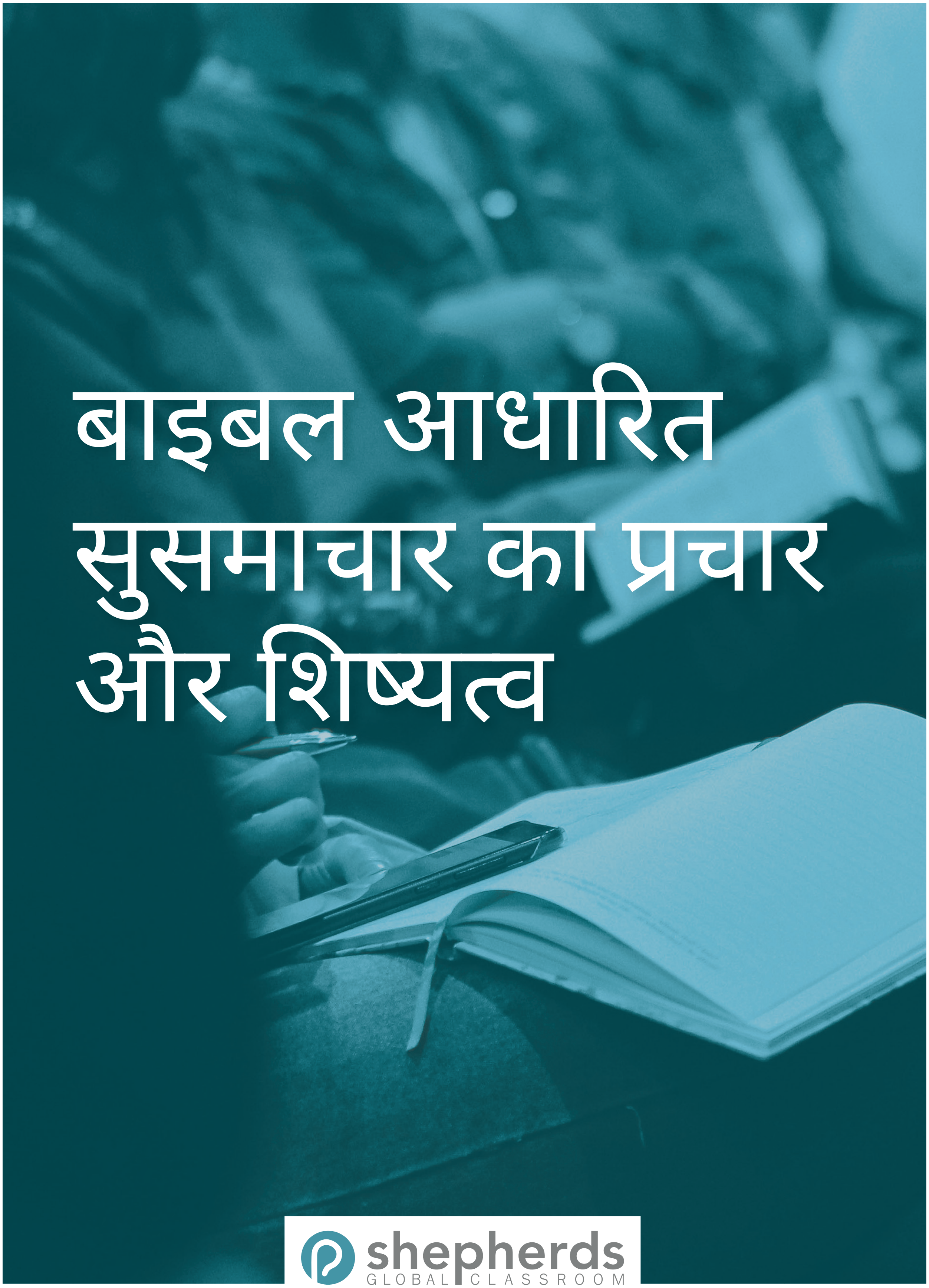

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

बाइबल आधारित सुसमाचार का प्रचार और शिष्यत्व

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

Shepherds Global Classroom का अस्तित्व इस पूरे संसार में उभरते हुए मसीही अगुवों के लिए एक पाठ्यक्रम प्रदान करके यीशु मसीह की देह को तैयार करने के लिए है। हमारा लक्ष्य संसार के हर देश में आत्मिक प्रशिक्षकों के हाथों में 20-पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम उपकरण को देकर स्वदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या को बढ़ाना है।

यह पुस्तक https://www.shepherdsglobal.org/courses से निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुख्य लेखक: Dr. Stephen K. Gibson डॉ. स्टीफन के. गिब्सन

कॉपीराइट© 2023 Shepherds Global Classroom
तीसरे अंग्रेज़ी संस्करण से हिन्दी भाषा में अनुवादित

सर्वाधिकार सुरक्षित।

तृतीय-पक्ष पाठ्यसामग्री पर उनके सम्बन्धित प्रकाशकों का कॉपीराइट है और उन्हें विभिन्न लाइसेंसों के अन्तर्गत साझा किया गया है।

जब तक संकेत न दिया जाए, सभी पवित्रशास्त्र के उद्धरण HINDI OV (RE-EDITED) बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट ©2012 द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया। इन्हें अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।

अनुमति सूचना:

इस पुस्तक को निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रिंट और डिजिटल प्रारूप में स्वतंत्रपूर्वक छापा और वितरित किया जा सकता है: (1) पुस्तक की सामग्री में किसी भी तरह से बदलाव नहीं किया जाना चाहिए; (2) इसकी प्रतियाँ मुनाफ़े के लिए बेची न जाएँ; (3) शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक का उपयोग/प्रतिलिपि बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही वे शिक्षा शुल्क ही क्यों न लेते हों; और (4) Shepherds Global Classroom की अनुमति और पर्यवेक्षण के बिना इस पुस्तक का अनुवाद न किया जाए।

विषय सूची

पाठ्यक्रम अवलोकन 5

(1) महान आज्ञा को स्वीकार करना 9

(2) उद्धार का धर्मशास्त्र 17

(3) सुसमाचार के प्रचार की तत्कालिकता 29

(4) सुसमाचार के आवश्यक बिन्दु 37

(5) सुसमाचार प्रचार और उसकी प्राथमिकता 43

(6) पवित्र आत्मा का कार्य 51

(7) प्रार्थना और उपवास 57

(8) यीशु का नियम 67

(9) "मिलाप" सुसमाचार का प्रस्तुतीकरण 79

(10) रोमन मार्ग 87

(11) सुसमाचार प्रचार 95

(12) खुले अवसर 105

(13) सुसमाचार के प्रचार के तरीकों को अपनाना 115

(14) बच्चों के बीच सेवकाई 125

(15) कलीसिया का रचना 139

(16) सच्चे शिष्य 147

(17) आत्मिक परिपक्वता की ओर 159

(18) छोटा समूह नियमावली 169

(19) शिष्यों के लिए प्रार्थना 183

अनुशंसित संसाधन 187

कार्यभारों का रिकॉर्ड 189

पाठ्यक्रम अवलोकन

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम कलीसिया को अपने उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करने के लिए एक उपकरण है।

पाठ्यक्रम स्थानीय कलीसिया की केंद्रीयता पर ज़ोर देता है, यह दर्शाता है कि सुसमाचार कलीसिया का उद्देश्य है, और यह कि सुसमाचार की विधि को कलीसिया को विकसित करने में मददग़ार साबित होना चहिये।

सुसमाचार की मूल बातों को समझाते हुए, यह आधुनिक तरीकों की कुछ त्रुटियों को सही करता है जो वास्तविक रूपांतरण और मसीही जीवन के लिए एक पापी की अगुआई नहीं करते हैं।

छात्र अपनी सेवकाई को विकसित करने के लिए सुसज्जित होगा।

पाठ्यक्रम के अधिकांश पाठों को अलग-अलग समूहों को सम्पूर्ण विषयों के रूप में सिखाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक पाठ को सुसमाचार प्रस्तुत करने का एक तरीका सिखाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

इस कोर्स में, छात्र सीख रहे हैं कि शिष्य कैसे बनाने हैं। Shepherds Global Classroom ने नए विश्वासियों के साथ उपयोग के लिए विशेष रूप से शिष्यता संसाधन तैयार किया है। यह शिष्यता पाठ पुस्तक, शिष्यता पाठों की खेती, shepherdsglobal.org से डाउनलोड के लिए उपलब्ध है। शिष्यता पाठों की खेती के सभी 26 पाठों में प्रत्येक में एक शिक्षक मार्गदर्शिका और छात्र पृष्ठ शामिल हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

(1) कलीसिया के स्वरूप और रचना के लिए सुसमाचार के निहितार्थ को समझाना

(2) सुसमाचार के मूल सिद्धांतों की समीक्षा करना

(3) विश्वासियों को प्रचार के व्यावहारिक तरीकों में प्रशिक्षित करना

(4) शिष्यत्व के लिए कलीसिया की जिम्मेदारी को समझना

(5) शिष्यत्व के कार्य को परिभाषित करना और वर्णन करना

(6) शिष्यत्व के लिए एक छोटे समूह का नेतृत्व करने के लिए व्यावहारिक तरीके सीखना

(7) नए विश्वासियों के शिष्यत्व में प्रयुक्त होने वाले पाठों की एक श्रृंखला प्रदान करना

कक्षा के अगुओं के लिए स्पष्टीकरण और निर्देश

पाठों के विशिष्ट भागों के निर्देशों के साथ पूरे पाठ्यक्रम में कक्षा के अगुवों के लिए लेख सम्मिलित किए गए हैं। उन्हें इटैलिक में दिया गया है।

यह चिन्ह ► एक विचार-विमर्श वाले प्रश्न को दर्शाता है। कक्षा के अगुए को प्रश्न पूछना चाहिए और छात्रों को जवाब देने की अनुमति देनी चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि विचार-विमर्श में प्रश्न का पूरी तरह से जवाब दिया जाए। पाठ सामग्री प्रश्न का उत्तर देगी। यदि एक ही छात्र अक्सर पहले उत्तर देता है, या कोई छात्र उत्तर नहीं देता हैं, तो अगुआ किसी अन्य छात्र से प्रश्न पूछ सकता है: "अभिषेक, आप इस प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे?"

प्रत्येक पाठ गृहकार्य/कार्यभार के साथ समाप्त होता है। कार्यभार अगले पाठ से पहले पूरा किया जाना चाहिए और सूचित किया जाना चाहिए। यदि कोई छात्र कार्यभार पूरा नहीं करता है तो वह बाद में कर सकता है। हालांकि, अगुआ छात्रों को उत्साहित करे कि समय सारणी मे बनें रहें ताकि वो कक्षा से ज्यादा सीखें।

छात्र कई प्रकार के लिखित कार्यों को पूरा करेंगे। आमतौर पर कक्षा के अगुए को कक्षा के शुरुआत में गृहकार्य इकट्ठा करना चाहिए। (दो गृहकार्यों (पाठ ६, कार्य १, और पाठ १४, कार्य १) को करके शिक्षक को देने की आवश्यकता नहीं है, बस सूचित करना है।)

छात्र कक्षा में सीखे गए तरीकों का उपयोग करके कई लोगों को सुसमाचार भी प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक प्रस्तुति के बाद, वे अपने अनुभवों के बारे में लिखेंगे और प्रस्तुतियों को कक्षा में साझा करेंगे। वे वयस्कों के लिए एक सुसमाचार उपदेश और बच्चों के लिए पाठ तैयार करेंगे। इस पाठ्यक्रम में दो परीक्षाएं हैं, पाठ 5 और 10 के बाद। छात्रों को किसी भी सामग्री को देखे बिना या दूसरे से बात किये बिना अपने आप से उत्तर लिखना है। कक्षा के अगुए के लिए कोई उत्तर कुंजी प्रदान नहीं की गई है, क्योंकि सभी उत्तर पाठ में आसानी से मिलेंगे।

पाठ 13 में सुसमाचार पर्चे बांटने के दिशानिर्देश शामिल हैं। छात्रों को जानने की आवश्यकता होगी कि बांटने के लिए सुसमाचार पर्चे कहाँ से प्राप्त करने होंगे। यदि संभव हो तो, उस कक्षा सत्र के लिए पुस्तिकाओं की आपूर्ति का प्रबंध करें।

यदि छात्र Shepherds Global Classroom से एक प्रमाण पत्र अर्जित करना चाहता है, तो उसे कक्षा के सत्रों में उपस्थित होना होगा और कार्यभार पूरा करना होगा। पाठ्यक्रम के अंत मे एक प्रपत्र दिया गया है जिसमे पूरा किया गया कार्य अंकित होगा।

पाठ 1

महान आज्ञा को स्वीकार करना

परिचय

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 28:18-20 को पढ़ना हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि यह आज्ञा सिर्फ प्रेरितों के लिए थी।

► क्या यह आदेश केवल उन लोगों के लिए था जिन्होंने इसे उस दिन सुना था? अपना उत्तर बताएं।

विलियम कैरी का जीवन काल 1761-1834 तक का था। वह इंग्लैंड के रहने वाले थे। वह एक जूता बनानेवाले थे, जिन्होंने सुसमाचार फैलाने की तीव्र इच्छा महसूस की। उनकी कलीसिया विदेशी सेवकाई के काम में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखती थी। उनका मानना था कि परमेश्वर ने पहले ही तय कर रखा था कि वह किसे बचाएंगे, और वह मानव सहायता पर निर्भर नहीं है।

पासवानों के एक सम्मेलन में, केरी ने विचार-विमर्श के लिए एक विषय का सुझाव दिया: उन्होंने पूछा कि जैसे यीशु ने महान आज्ञा के साथ-साथ संसार के अंत तक कलीसिया के साथ रहने का वादा किया, क्या कलीसिया का भी काम संसार के अंत तक उस महान आज्ञा को मानना नहीं है। सम्मेलन के अगुए ने कहा, "बैठ जाओ, जवान। आप एक उत्साही [कट्टरपंथी] हैं। यदि परमेश्वर बुतपरस्त को परिवर्तित करना चाहते हैं, तो वह आपकी या मेरी मदद के बिना करेंगे।"

हम जानते हैं कि कलीसिया को संसार के अंत तक निर्देशों को मानने की आज्ञा दी गई है। यीशु ने उन लोगों के साथ युगों के अंत तक रहने का वादा किया जो सुसमाचार की ज़िम्मेदारी को उठाते हैं, जो दर्शाता है कि कलीसिया को दी गयी ज़िम्मेदारी तमाम पीढ़ियों तक की है। प्रेरित अपने जीवन काल के दौरान कार्य पूरा नहीं कर सके, लेकिन यीशु ने कहा कि सुसमाचार का प्रचार प्रत्येक राष्ट्र में किया जायेगा (मत्ती 24:14)।

इसलिए सुसमाचार के प्रचार की जिम्मेदारी कलीसिया की प्रत्येक पीढ़ी को मीरास में मिली है।

► मत्ती 28:18-20 के विवरण पर फिर से गौर कीजिए। विशेष रूप से आज्ञा क्या है?

यीशु की विशिष्ट आज्ञा थी कि कलीसिया हर जगह जाए और उसके लिए शिष्य बनाए।

आज्ञा में सुसमाचार का प्रचार करना शामिल है क्योंकि एक व्यक्ति तब तक शिष्य नहीं हो सकता जब तक कि वह परिवर्तित न हो।

आज्ञा का अर्थ है कि कलीसिया पुरे उत्साह के साथ सुसमाचार और शिष्यत्व को अपनी प्राथमिकताएं बनाये; अन्यथा, ये उसके होने के कारण को पूरा नहीं कर रहा है।

वाक्यांश "सम्पूर्ण विश्व" (हर देश का मतलब हर जातीय समूह) से पता चलता है कि विदेशी सेवकाई की आज्ञा है, क्योंकि जातीय समूहों के पास तब तक सुसमाचार नहीं पहुँचता है जब तक उन्हें बताया नहीं जाता। किसी भी श्रेणी के लोगों को छोड़ा नहीं जाना चाहिए।

आदेश केवल सुसमाचार प्रचार करने के लिए नहीं है। शिक्षण की प्रक्रिया आवश्यक है क्योंकि हमें परिवर्तित लोगों को जो कुछ भी यीशु ने आज्ञा दी थी, उसे सिखाना है।

एक शिक्षक व्यक्तिगत रूप से मसीह की आज्ञाओं को मानने के लिए पूर्ण रूप प्रतिबद्ध होना चाहिए क्योंकि उसे एक अच्छा उदाहरण होने की आवश्यक्ता है, जो यह दर्शाए कि मसीह की आज्ञाकारिता का जीवन कैसे जीना है।

> मैं पहले से कहीं ज्यादा आश्वस्त हूं कि अगर हम अपने गुरु और अपने पहले शिष्यों को दिए गए आश्वासन को अपने मार्गदर्शक के रूप में पूरी तरह से लेना चाहते हैं, तो हम उसे हमारे समय के अनुकूल ले सकते हैं, जैसे वे मूल रूप में दिए गए थे।
> (जे. हडसन टेलर, "कॉल टू सर्विस")।

विश्वासी भी मसीह की आज्ञाओं को मानने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए क्योंकि मसीह की आज्ञा का पालन किये बिना मसीह की आज्ञाओं को सीखना पर्याप्त नहीं है। यदि वह जो सीख रहा है उसका पालन नहीं करता है, तो वह शिष्यत्व के कार्य का विरोध कर रहा है। शिष्यत्व की प्रक्रिया केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण है।

सुसमाचार का प्रचार वचन आधारित प्राथमिकता है

महान आज्ञा के अलावा, बाइबल में कई कथन हैं जो बताते हैं कि कलीसिया के लिए सुसमाचार का प्रचार परमेश्वर की प्राथमिकता है।

कक्षा के अगुए के लिए सूचना: छात्रों को नीचे दिए गए प्रत्येक संदर्भों को देखना है और यह बताना है कि कैसे सुसमाचार का प्रचार वचन आधारित प्राथमिकता है। प्रदान की गई टिप्पणियों के साथ उनकी मदद करें।

मत्ती **9:36-38**। यीशु चाहता थे कि उनके शिष्य पापियों के लिए उनकी करुणा को साझा करें और प्रार्थना करें कि परमेश्वर आध्यात्मिक फसल को काटने के लिये मज़दूर भेजे।"

प्रेरितों **4:29**। जब कलीसिया ने पहली यातना का सामना किया तो उनकी पहली चिंता जिस्मानी संकट नहीं था, लेकिन यह कि सुसमाचार में बाधा आ सकती है। उन्होंने प्रार्थना की कि उत्पीड़न के बावजूद परमेश्वर का वचन फैले।

प्रेरितों **11:18**। यहूदी कलीसिया ने परमेश्वर को महिमा दी कि अन्यजातियों को उद्धार प्रदान किया गया।

फिलिप्पियों **1:18**। पौलुस ने इस बात पर ख़ुशी जताई कि जब उन्हें कारावास का सामना करना पड़ा तब भी मसीह का प्रचार किया गया था।

इफिसियों **6:19**। पौलुस ने प्रभावी प्रचार के लिए प्रार्थना की विनती की।

रोमियों **10:13-15**। पौलुस ने सुसमाचार के संदेशवाहकों की तत्काल आवश्यकता पर ज़ोर दिया, क्योंकि उद्धार उन लोगों के लिए है जो सुनते हैं और विश्वास करते हैं।

► ऐसे कुछ कारण क्या हैं कि एक विश्वासी की इच्छा **लोगों को बचते हुए देखने** की हो?

क्यों एक विश्वासी को खोए हुओं के उद्धार पाने की इच्छा रखनी चाहिए?

- उसे यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने की इच्छा रखनी चाहिए जिन्होंने स्वर्ग को छोड़ दिया और खोए हुए लोगों के उद्धार के लिए अपने जीवन का बलिदान दे दिया।
- उसकी इच्छा होनी चाहिए कि परमेश्वर की महिमा हो जब एक विद्रोही परमेश्वर के आराधक के रूप में परिवर्तित हो।
- उसे सुसमाचार का प्रसार मसीह की जीत और उसके प्रायश्चित के रूप में देखना चाहिए।
- उसे उस काम में भाग लेने की चाह हो जो परमेश्वर की प्राथमिकता है।
- उसके पास खोए हुओं के लिए करुणा होनी चाहिए जो अपने पापों के लिए अनंत के न्याय का सामना कर रहे हैं।

► क्या यह संभव है कि किसी व्यक्ति के पास प्रचार करने की इच्छा के लिए कुछ गलत कारण हो? कुछ गलत कारण क्या होंगे?

सेवकाई में सफलता और स्थानीय कलीसिया की उन्नति की इच्छा रखना गलत नहीं है।

ध्यान दें कि हम सफलता पाकर गर्व से फूलें नहीं, अन्य कलीसियाओं के साथ प्रतिस्पर्धा ना करें, या तर्क को बढ़ावा ना दें।

कुछ विश्वासियों को सुसमाचार बांटना परमेश्वर द्वारा एक विशेष उपहार और बुलाहट है (इफिसियों 4:11)। अगुओं को याद रखना चाहिए कि सभी विश्वासियों उसी तरह से प्रचार करने के लिए कुशलता हांसिल नहीं हैं। परन्तु, प्रत्येक विश्वासी को कलीसिया के अपने मिशन को पूरा करने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए और सुसमाचार को साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

क्या वजह है कि कुछ मसीही सुसमाचार प्रचार नहीं करते हैं

► क्यों सभी मसीही प्रचार नहीं करते हैं?

कक्षा के अगुए के लिए सूचना: छात्रों को उन कारणों को सूचीबद्ध करना चाहिए जो वे निम्नलिखित सूची को देखने से पहले सोच सकते हैं।

- सामान्य आत्मिक उत्साह की घटी
- प्रचार के लिए व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी का एहसास ना होना
- मालूम नहीं कि आत्मिक बातचीत की पहल कैसे की जाए
- सुसमाचार प्रस्तुत करना मालूम नहीं
- आपत्तियों का जवाब देने में असमर्थ होने का डर
- दुनिया से अलग होने पर शर्मिंदगी
- संदेह करना कि उसके प्रयास प्रभावी होंगे या नहीं
- सताव

► क्या इनमें से कोई भी कारण पर्याप्त है?

प्रारंभ करना

► यदि कोई व्यक्ति खोए हुए के उद्धार के लिए कुछ नहीं कर रहा है, तो उसे आरंभ करने के लिए क्या करना आवश्यक है?

यदि उसके पास कोई आत्मिक उत्साह नहीं है तो उसे व्यक्तिगत आत्मिक जागृति की आवश्यकता है।

यदि कोई व्यक्ति आत्मिक रूप से जीवित है, उत्सुक है, और महान आज्ञा की पूर्ति में शामिल होने के लिए अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी को महसूस करता है तो दो निम्नलिखित कारक उसे शुरू करने के लिए अधिक आवश्यक है।

1. विश्वास - उसे यह महसूस करने की ज़रूरत है कि परमेश्वर सुसमाचार को शक्तिशाली बनाने के लिए क्या करता है।
2. तैयारी - उसे सुसमाचार सुनाने के लिए प्रशिक्षण से लैस होना चाहिए।

► एक छात्र समूह के लिए यूहन्ना 4:28-30, 39 पढ़े। लोगों को यीशु के पास लाने के लिए सामरी महिला को किन बातों ने योग्य बनाया?

> यह उनका कलीसिया जीतने का तरीका था - उन लोगों के समर्पित जीवन के माध्यम से जो उद्धारकर्ता को इतनी अच्छी तरह से जानते थे कि उसकी आत्मा और विधि ने उन्हें दूसरों को बताने के लिए विवश किया (रॉबर्ट कोलमैन, द मास्टर प्लान)।

उसके पास कोई प्रशिक्षण नहीं था। उसके पास अनुग्रह का अनुभव और दूसरे को यीशु के बारे मे बताने की प्राथमिकता थी

यदि किसी व्यक्ति के पास दो चीजें हैं, अनुग्रह का अनुभव और दूसरों को बताने की इच्छा, तो उसके पास सुसमाचार प्रचारक होने की सबसे महत्वपूर्ण योग्यता है। प्रशिक्षण अच्छा है; लेकिन अगर किसी व्यक्ति में उन दो योग्यताओं का अभाव है, तो कोई भी प्रशिक्षण उसे एक अच्छा प्रचारक नहीं बना सकता है।

महत्वपूर्ण मुद्दा: आपको शुरुआत करने के लिए क्या चाहिए?

► आप सुसमाचार को फैलाने के लिए क्या कर रहे हैं? आप जो कर रहे हैं क्या उससे संतुष्ट हैं?

► आपको सुसमाचार ज्यादा उत्साह और प्रभावी ढंग से साझा करने मे क्या चीज मदद कर सकती है?

एक सुसमाचार प्रचारक का चरित्र

आइए उस व्यक्ति के बारे में बात करें जो महान आज्ञा को स्वीकार कर सकता है।

यहां तक कि एक नया विश्वासी भी उसकी गवाही को साझा कर सकता है और उस सच्चाई के बारे में बता सकता है जिसके द्वारा उसने उद्धार प्राप्त किया।

हालांकि, जो व्यक्ति लम्बे समय तक एक सुसमाचार प्रचारक की तरह परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया जा सकता है उसमें कुछ ख़ास विशेषताओं का होना आवश्यक होता है।

.(1) उद्धार पाया व्यक्ति

सुसमाचार प्रचारक एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसने उद्धार पाया हो, क्योंकि

1. उसे साझा करने के लिए एक गवाही की आवश्यकता है।
2. वह बिना अनुभव के उद्धार को नहीं समझ सकता है।
3. उसके पास परिवर्तित चरित्र होना चाहिए जो उद्धार पाते समय प्राप्त होता है।

> हमारा मानना है कि मसीही संचार को बनाए रखने के लिए मुख्य कुंजी संचारकों में स्वयं को ढूंढना है और पहचानना वे किस तरह के लोग हैं। वे ऐसे ना जाने जाए कि उन्हें मसीही विश्वास, प्रेम और पवित्रता के लोग होने की आवश्यकता है। उन्हें पवित्र आत्मा के स्पर्श की सामर्थ का व्यक्तिगत और उसमे बढ़ने का अनुभव होना की आवश्यकता हैं, ताकि यीशु मसीह की छवि सदा उनके चरित्र और दृष्टिकोण में स्पष्ट रूप से देखी जा सके। (द लॉसैन कमेटी फॉर वर्ल्ड इवेनजिलाइज़ेशन, द विलोबैंक रिपोर्ट)।

उद्धार ना पाया हुआ व्यक्ति जब धार्मिक कार्य करता है, तो वह यह नहीं समझ पाता है कि वह क्या कर रहा है और उसके उद्देश्य गलत होते हैं।

.(2) मसीही जीवन में निरन्तरता

हालांकि हमें सुसमाचार को साझा करने के अवसर को कभी चूकना नहीं चाहिए, लेकिन सुसमाचार सुनाना सबसे अधिक तब प्रभावशाली होता है जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से सुसमाचार सुनता है, जिस पर वह भरोसा करता है। जो लोग आप पर सबसे ज्यादा भरोसा करते हैं, वे वही लोग होने चाहिए जो आपको सबसे अच्छे से जानते हैं। सुसमाचार प्रचारक की एक ऐसी जीवनशैली हो जो कि परमेश्वर को समर्पित होने के साथ साथ निरंतर परमेश्वर की आज्ञाकारिता की हो।

.(3) कलीसिया से जुड़े हुए

सुसमाचार प्रचारक को एक कलीसिया का प्रतिबद्ध सदस्य होने की आवश्यकता है क्योंकि

1. वह लोगों को विश्वासियों के समूह मे बुलाने मे सक्षम होना चाहिए।
2. उसे विश्वासी को शिष्य बनाने में कलीसिया की मदद की आवश्यकता होती है।
3. उसे आत्मिक जवाबदेही की आवश्यकता होती है।
4. उसे कलीसिया के समर्थन और प्रोत्साहन की जरूरत होती है।

उसे अपने आत्मिक भाइयों और बहनों पर भरोसा होना चाहिए। उन्हें कलीसिया के नेतृत्व और काम का सम्मान करना चाहिए।

यदि उसे लगता है कि वह मसीही हो सकता है और कलीसिया के बिना अपनी सेवकाई कर सकता है, तो वह कलीसिया को नहीं समझता है और सुसमाचार के निमंत्रण को नहीं समझता है।

(4) सत्य के प्रति विश्वासयोग्य

सुसमाचार प्रचारक को यह विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर का वचन ही बांटने योग्य असली ख़ज़ाना है। बाइबल उद्धार और परमेश्वर के साथ संबंधों के प्रति नियम लागू करती है। हम अपने संदेश को अधिक स्वीकार्य बनाने के लिए सच्चाई को कभी नहीं बदल सकते (1 कुरिन्थियों 4:1-2)।

बाइबिल की वजह से, हम जानते हैं कि हर व्यक्ति या तो अनन्त स्वर्ग या अनन्त नरक में जाएगा। सुसमाचार प्रचारक इस दृढ़ विश्वास से प्रेरित है।

(5) आत्मा से भरा

पवित्र आत्मा सुसमाचार के संदेश को शक्ति देता है। वह पाप को दोषी मानता है, आत्मिक इच्छा देता है, और पापी को विश्वास के साथ अनुक्रिया देने में सक्षम बनाता है।

सुसमाचार प्रचारक केवल तभी प्रभावी है जब पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, उसे विनम्रतापूर्वक परमेश्वर पर निर्भर होना चाहिए। उसका जीवन प्रार्थना से भरा होना चाहिए। उसे परमेश्वर से मार्गदर्शन माँगना चाहिए।

सुसमाचार प्रचारक को आत्मा से भरे रहने की चाहत होनी चाहिए। आत्मा का एक भराव है जो हृदय को शुद्ध करती है और सेवकाई के लिए बल प्रदान करती है। यीशु ने प्रेरितों से कहा कि वे आत्मा के इस कार्य की अपेक्षा करें (प्रेरितों 1:4-5)। प्रेरितों के द्वारा पिन्तेकुस्त के दिन में आत्मा से भरने का अनुभव किया गया (प्रेरितों 1:8, 2:4, 15:8-9)।

ऐसे भी एक समय आता है जब परमेश्वर आत्मा का विशेष अभिषेक करता है ताकि प्रचारक एक विशेष चुनौती का सामना कर सकें (प्रेरितों के काम 13:9-12)।

.पाठ 1 कार्यभार

(1) वर्णन करते हुए कुछ पद लिखिए कि पिछले 12 महीनों में आप व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व में किस प्रकार भागीदार थे। भविष्य के लिए आपके लक्ष्य क्या हैं? आप इस पाठ्यक्रम से क्या हासिल करना चाहते हैं?

(2) आपके क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार के लिए कलीसियाओं द्वारा क्या किया जा रहा है? सवालों का निरीक्षण करें और पूछें, फिर 2-3 पृष्ठ का विवरण लिखें।

पाठ 2

उद्धार का धर्मशास्त्र

परिचय

कक्षा के अगुए के लिए सूचना: इस पाठ में चर्चा किए गए पवित्रशास्त्र के अध्यायों के अलावा, फुटनोट्स में कई पवित्रशास्त्र के अध्याय दिए गए हैं। हो सकता है कि कक्षा के पास कक्षा के समय उन सभी को देखने और पढ़ने का समय ना हो। कक्षा का अगुवा कुछ अध्यायों को पढ़ने के लिए चुन सकता हैं।

उद्धार शब्द का तात्पर्य उस बदलाव से है जो किसी व्यक्ति को बचाए जाने पर होता है। सुसमाचार के प्रचार का लक्ष्य पापी को उद्धार के अनुभव की ओर ले जाना है।

► 1 थिस्सलुनीकियों 1 पढ़ें। थिस्सलुनीकियों लोगों में क्या बदलाव देखे गए जब उन्होंने उद्धार का अनुभव प्राप्त किया?

यह समझने के लिए कि किसी व्यक्ति को उद्धार पाने की आवश्यकता क्यों है, और यह समझने के लिए कि किसी व्यक्ति के उद्धार पाने पर क्या होता है, हमें उद्धार से पहले की पापी की स्थिति को समझना चाहिए।

उद्धार से पहले की मानव स्थिति

► आप किसी व्यक्ति के बचाये जाने से पहले की स्थिति का वर्णन कैसे करेंगे?

आदम के पाप के कारण, प्रत्येक व्यक्ति पैदा होने पर परमेश्वर से अलग हो जाता है (रोमियों 5:12)। इसका मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति आत्म-केंद्रित है और अपने ही हिसाब की जिंदगी जीता है।

पापी की चार विशेषताओं को नीचे दिए गए अनुच्छेद में दिया गया है।

जैसे ही कोई व्यक्ति चुनाव करना शुरू करता है, वह पाप करना शुरू कर देता है। हर एक पापी पाप की कई क्रियाओं का दोषी है (रोमियों 3:23)।

पाप परमेश्वर के नियम का उल्लंघन है (1 यूहन्ना 3:4, याकूब 2:10-11)। क्योंकि परमेश्वर पूर्णतः न्यायी है, वह पाप यूँ ही नहीं टाल देता है और प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा किए गए कर्मों अनुसार लेखा देना

होगा (2 कुरिन्थियों 5:10, प्रकाशितवाक्य 20:12-13)। किसी भी व्यक्ति के दोष या दण्ड की आज्ञा जिसके वो योग्य है पर कोई सवाल ही नहीं उठता है। हर एक पापी पहले से ही दोषी ठहराया जा चूका है (यूहन्ना 3:18-19)।

पापी परमेश्वर का दुश्मन है (रोमियों 5:10)। एक पापी, परमेश्वर के साथ तब तक संबंध स्थापित नहीं कर सकता है जब तक कि परमेश्वर के खिलाफ किए उसके अपराधों को हटाया नहीं जाता है।

पापी की भी ऐसी अवस्था है जो उसे परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करने के लिए अयोग्य बनाता है क्योंकि वह अपनी इच्छाओं में भ्रष्ट है (इफिसियों 2:3)। क्योंकि वह पाप का गुलाम है इसलिए पापी अपनी पापमय अवस्था बदलने में निर्बल है (रोमियों 5:20, 7:23)।

तो वह उद्धार क्या है जिसकी पापी को जरूरत है? क्योंकि पापी दोषी है, और उद्धार का अर्थ है क्षमा। क्योंकि वह परमेश्वर का दुश्मन है, और उद्धार का मतलब है पुनर्मिलन या मिलाप। क्योंकि वह भ्रष्ट है, और उद्धार का मतलब है शुद्ध होना। क्योंकि वह शक्तिहीन है, और उद्धार का अर्थ है छुटकारा। ये उद्धार के कुछ ही पहलू हैं जिनकी पापी को आवश्यकता है।

उद्धार के क्षण में, पापी को क्षमा कर दिया जाता है, परमेश्वर के साथ मेल मिलाप स्थापित हो जाता है, शुद्ध हो जाता है, और पाप की शक्ति से छुटकारा पाता है। पौलुस ने कुरिन्थियों की विश्वासियों की पिछली पापमय स्थिति का वर्णन किया जिसमें कई भयंकर पाप शामिल थे। उन्होंने कहा, "परमेश्वर की आत्मा से धोए गए, और पवित्र और धर्मी ठहरे... " (1 कुरिन्थियों 6:11)।

क्रूस की आवश्यकता

कोई भी व्यक्ति अपने पाप के लिए भुगतान नहीं कर सकता है। पाप अनंत परमेश्वर के विरुद्ध की गयी क्रिया है, और मानवता के पास भुगतान करने के लिए अनंत मूल्य का कुछ भी नहीं है।

वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था जो एक व्यक्ति अपनी जरूरत के लिए कर पाता; इसलिए, कोई भी आवश्यकता मानवता के लिए निर्धारित नहीं की जा सकती है जो उद्धार की क्रिया को पूरा करेगी (गलातियों 3:21)। यदि मनुष्य का स्वयं से उद्धार पाना संभव होता तो यीशु के लिए क्रूस पर मरना आवश्यक नहीं होता (गलातियों 2:21)।

► यदि परमेश्वर क्षमा करना चाहता, तो उन्होंने बिना क्रूस के ही क्षमा क्यों नहीं कर दिया?

क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिए ज़रूरी है कि वह सच्चाई और न्याय के साथ न्याय करें (रोमियों 2:5-6)।

कल्पना कीजिए कि यदि मसीह का बलिदान नहीं हुआ होता। क्या होता अगर परमेश्वर ने प्रायश्चित के बिना पापों को माफ कर दिया होता?

यदि परमेश्वर प्रायश्चित के बिना पाप को क्षमा कर देता है तो ऐसा प्रतीत होगा कि:

- पाप महत्वहीन प्रतीत होता।
- परमेश्वर ना केवल अन्यायी है बल्कि अपवित्र भी है।
- परमेश्वर की दृष्टि में सही और गलत काम करने वाले व्यक्ति के बीच अंतर बहुत ही कम है।

यदि बिना प्रायश्चित के क्षमा मिल, तो परमेश्वर की आराधना न्यायी और पवित्र परमेश्वर के रूप में नहीं होती जो कि वो है। प्रायश्चित के बिना क्षमा मिल जाना परमेश्वर को सम्मान देने के बजाय उसका अपमान करना होता।

लेकिन, परमेश्वर प्रेम करने वाले हैं और क्षमा करना चाहते है। उन्होंने नहीं चाहा कि मानवता को पापी अवस्था में छोड़ें कि वे सदा के लिए खो जाए, भले ही वे इसके योग्य थे।

क्रूस पर यीशु के बलिदान ने उस अनंत मूल्यवान बलिदान को पूर्ति की जिसकी आवश्यकता थी। यीशु ने योग्यता प्राप्त की (1) पापरहित होकर (2 कुरिन्थियों 5:21) (सिद्ध और स्वयं के उद्धार की जरूरत नहीं है), और (2) परमेश्वर और मनुष्य दोनों होकर।

प्रायश्चित वह प्रदान करता है जो क्षमा के लिए आधार के रूप में आवश्यक है। अब, परमेश्वर उस व्यक्ति को क्षमा कर सकता है जो पश्चाताप करता है और उसके वादे पर विश्वास करता है। कोई भी जो क्रूस के बलिदान को समझता है वह नहीं सोच सकता है कि पाप परमेश्वर के लिए गंभीर नहीं है।

प्रायश्चित एक ऐसा मार्ग प्रदान करता है कि परमेश्वर अधर्मी को धर्मी बना देता है जो वादे पर भरोसा रखता है और नीतिमान भी ठहरता है। रोमियों 3:20-26 एक तार्किक विवरण देता है कि प्रायश्चित कैसे काम करता है।

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर द्वारा दिया गया उद्धार का साधन ही एकमात्र मार्ग है। यदि कोई व्यक्ति मसीह में विश्वास द्वारा अनुग्रह से मिले उद्धार को अस्वीकार कर देता है, तो उसे बचाया नहीं जा सकता है (मरकुस 16:15-16, प्रेरितों 4:12, इब्रानियों 2:3)।

इसलिए यह सिद्धान्त जानना आवश्यक है कि केवल अनुग्रह के द्वारा ही उद्धार है, जो सिर्फ विश्वास से ग्रहण होता है।। उद्धार केवल अनुग्रह से है क्योंकि हम इसे कमाने या इसके योग्य होने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते है। यह केवल विश्वास से ही संभव है क्योंकि इसे प्राप्त करने के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हम केवल परमेश्वर के वायदे पर विश्वास कर सकते हैं।

पहला अनुग्रह

► पहले क्या होता है: मनुष्य का परमेश्वर को प्रतिउत्तर या मनुष्य के भीतर परमेश्वर का कार्य?

परमेश्वर का अनुग्रह पापी के हृदय में पहुंचता है, उसे उसके पापों के लिए कायल करता है और उसमे क्षमा मांगने की इच्छा पैदा करता है (तीतुस 2:11, यूहन्ना 1:9, रोमियों 1:20)। पापी परमेश्वर की सहायता के बिना अपने पापों को छोड़ने में असहाय है (यूहन्ना 6:44)। परमेश्वर पापी को सुसमाचार का प्रतिउत्तर देने की क्षमता देता है। यदि कोई व्यक्ति बचाया नहीं गया है तो यह इसलिए नहीं क्योंकि उस पर कोई कृपा नहीं है बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वह उसके अनुग्रह का प्रतिउत्तर नहीं देता जो परमेश्वर ने उसे दिया है।

यीशु सारे जगत के पापों के लिए मरा, और परमेश्वर चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति बचाया जाए (2 पतरस 3:9, 1 यूहन्ना 2:2, 1 तीमुथियुस 4:10)। परमेश्वर की कृपा हर व्यक्ति को प्रतिउत्तर देने की क्षमता देती है, लेकिन वह किसी को मजबूर नहीं करता है। यही कारण है कि परमेश्वर पापी को पश्चाताप और विश्वास को चुनने के लिए बुलाता हैं (मरकुस 1:15)।

पश्चाताप को परिभाषित करना

► पश्चाताप क्या है?

पश्चाताप का मतलब है कि एक पापी खुद को दोषी और सजा के योग्य देखता है और वह अपने पापों से मुक्त होने के लिए तैयार है।

यशायाह के इस वचन में पश्चाताप का वर्णन है:

दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। (यशायाह 55:7)।

पश्चाताप का मतलब यह नहीं है कि पापी को अपने जीवन को सही करना है और क्षमा प्राप्त करने के लिए स्वयं को परमेश्वर के समक्ष धार्मिक बनाना है। यह असंभव है, क्योंकि एक व्यक्ति जो पाप के बंधन में है और खुद को मुक्त नहीं कर सकता है; परन्तु पापी परमेश्वर से अपने पापों से मुक्त होने के लिए तैयार होना चाहिए।

► उद्धार अनुग्रह से प्राप्त होता है; तो फिर उद्धार के लिये पश्चाताप क्यों आवश्यक है?

क्षमा के लिए केवल विश्वास की आवश्यकता होती है, लेकिन मसीह में सच्चा विश्वास हमेशा एक व्यक्ति को अपने पापों का पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। मसीह की ओर मुड़ना (विश्वास करना) और पाप से दूर होना (पश्चाताप) एक ही समय में होगा, लेकिन यह विश्वास है जो पाप से फिरने को संभव बनाता है। यह छुड़ाने वाला विश्वास परमेश्वर की ओर से एक उपहार है (इफिसियों 2:8-9)। पश्चाताप के बिना उद्धार नहीं हो सकता। यदि कोई व्यक्ति पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं है, तो वह पाप से बचना नहीं चाहता है।

यदि कोई व्यक्ति पश्चाताप नहीं करता है तो वह पाप की दुष्टता को स्वीकार नहीं कर रहा है। यदि वह देख नहीं पाता कि उसे पाप को क्यों त्यागना है, तो वह यह नहीं देख पा रहा कि उसका पाप वास्तव में बुरा है। यदि वह यह नहीं देख पाता है कि उसका पाप बुरा है तो वह वास्तव में यह नहीं समझ पा रहा कि उसे क्षमा की आवश्यकता क्यों है।

यदि किसी व्यक्ति ने बिना किसी बहाने के खुद को वास्तव में दोषी और दंड के योग्य नहीं माना है तो उसने पश्चाताप नहीं किया है। यदि वह स्वीकार करता है कि वह एक पापी है, लेकिन एक ऐसा धर्म चाहता है जो उसे पाप जारी रखने की अनुमति देगा, तो उसने पश्चाताप नहीं किया क्योंकि वह वही करना चाहता है जो उसे दोषी बनाता है।

उद्धार पाने वाले विश्वास को परिभाषित करना

► यदि किसी व्यक्ति में उद्धार पाने वाला विश्वास है, तो इसका क्या अर्थ है कि वह विश्वास करता है?

(1) वह देखता है कि वह खुद को सही ठहराने के लिए कुछ नहीं कर सकता है।

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। (इफिसियों 2:8-9)।

उसे पता चलता है कि वह कुछ भी नहीं कर सकता (काम करता है) जो उसे बचाने के लायक बना देगा, आंशिक रूप से भी नहीं।

(2) वह मानता है कि मसीह का बलिदान उसकी क्षमा के लिए पर्याप्त है।

> और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी (1 यूहन्ना 2:2)।

बलिदान का अर्थ वह त्याग है जो हमारी क्षमा को संभव बनाता है।

(3) वह मानता है कि परमेश्वर उसे केवल विश्वास की शर्त पर क्षमा करता है।

> यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (1 यूहन्ना 1:9)।

यदि उसे लगता है कि दूसरे भी नियम है तो वह पूरी तरह से अनुग्रह के बजाय कार्यों द्वारा आंशिक रूप से बचाए जाने की उम्मीद करता है।

उद्धार

► एक छात्र समूह के लिए प्रेरितों 26:16-18 पढ़े। इन वचनों के अनुसार पौलुस की सेवकाई क्या होगी?

पौलुस की सेवकाई लोगों को उद्धार की ओर ले जाएगी। वचन 18 उद्धार का वर्णन करता है। इसमें अंधकार से प्रकाश की ओर मुड़ना और शैतान की शक्ति से परमेश्वर तक, क्षमा प्राप्त करना, और पवित्र होने वालों की मीरास प्राप्त करना शामिल है। यह मसीह में विश्वास करने से होता है।

पापी से मसीही में उद्धार पाना एक महान रूपांतरण है। बाइबिल इसे एक नई रचना (2 कुरिन्थियों 5:17) कहती है। पुरानी चीजें समाप्त हो गई हैं, और सब कुछ नया हो गया है।

उद्धार पाया व्यक्ति मूर्तियों और किसी भी धार्मिक प्रथाओं को छोड़ देता है जो परमेश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा से विपरीत होगा (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

परिवर्तन आम तौर पर दूसरों के लिए अचंभित करने वाला है (1पतरस 4:3-4)। उन्हें समझ नहीं आता कि कोई व्यक्ति इतना क्यों बदलेगा। व्यक्ति के करीबी दोस्त और रिश्तेदार उसे सता सकते हैं (मत्ती 10:34-36)।

परिवर्तित व्यक्ति अब दुनिया की इच्छाओं और प्राथमिकताओं को साझा नहीं करता है। यह फ़र्क स्पष्ट करता है कि उसने उद्धार पा लिया है(1 यूहन्ना 2:15)। परिवर्तित व्यक्ति अन्य विश्वासियों से प्यार करता है और संगती करने की इच्छा रखता है (1 यूहन्ना 3:14)।

एक खराईदार पासवान "निर्णय" से संतुष्ट नहीं होता लेकिन ऐसे विश्वासहियों से जो लगातार मसीह के साथ रिश्तों मे हो; विश्वासी जो परमेश्वर के वचन के लिए भूखे रहते हैं, जो मसीही प्रेम में चलते हैं, जो लगातार मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान को विश्वास द्वारा साझा करते हैं, और जो बिना रुके प्रार्थना करते हैं (तीमुथियुस "बाइबलीय सुसमाचार प्रचार और परिवर्तन की खराई" को बनाये रखता है)।

जब वह उद्धार पाता है तो उसकी की इच्छाएँ बदल जाती हैं। उसके पास अब भी लुभाने वाली बातें होंगी, लेकिन वह पाप के लिए लुभाने वाली बातों का विरोध करने में सक्षम होता है क्योंकि वह अब पापी इच्छाओं से नियंत्रित नहीं किया जाता है। उसे परमेश्वर के वचन की इच्छा है क्योंकि उसने परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव किया है (1 पतरस 2:2-3)।

परिवर्तित व्यक्ति परमेश्वर से प्यार करता है और उसे प्रसन्न करना चाहता है। वह परमेश्वर की आज्ञाओं को कठोर और अप्रिय नहीं मानेगा (1 यूहन्ना 5:2-4)।

परिवर्तित व्यक्ति परमेश्वर के साथ मे व्यक्तिगत रिश्ते बनाये रखता है, जिन्हे वो खाश तौर से प्रार्थना मे व्यक्त करता है (1 कुरिन्थियों 1:2)।

► अपने शब्दों में, उस रूपांतरण के बारे में बताएं जो किसी व्यक्ति के उद्धार पाने पर होता है।

नए जन्म के लक्षण

बाइबल कहती है कि जब कोई व्यक्ति फिर से जन्म लेता है, तो सभी बातों को नया किया जाता है। नई बातों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- एक नया स्वभाव - दिव्य स्वभाव (2 पतरस 1:4)

- एक नया स्वामी - पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह (मत्ती 23:10, रोमियों 8:14)
- परमेश्वर के वचन की एक नई भूख (1 पतरस 2:2)
- प्रेम के प्रति एक नया दृष्टिकोण (रोमियों 5:5, 1यूहन्ना 4:7-8)
- बेटे या बेटी के रूप में परमेश्वर के साथ एक नया रिश्ता (यूहन्ना 1:12)
- पवित्र आत्मा के रूप में नया सहायक (यूहन्ना 14:16, रोमियों 8:26-27)
- यीशु मसीह में एक नया वकील अगर हम पाप में गिरते हैं (1 यूहन्ना 2:1)
- अनन्त जीवन की एक नई और जीवित आशा (रोमियों 8:12, 1 यूहन्ना 3:2)

उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन

► वो कौन से ग़लत कारण हो सकते है जिससे व्यक्ति को लगे कि वह एक मसीही है ?

एक व्यक्ति को लग सकता है कि वह एक मसीही है क्योंकि

- उसे बपतिस्मा दिया गया था।
- वह एक कलीसिया का सदस्य है।
- वह कुछ मसीही सिद्धांतों को मानता है।
- वह कुछ धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करता है।
- वह सही कार्यों के आदर्श का पालन करता है।
- उसे आत्मिक अनुभव है।
- उसने विश्वास करने का निर्णय लिया और इसकी घोषणा की।

बाइबल के अनुसार, ये सारे कारण पर्याप्त नहीं कि साबित करें कि व्यक्ति एक मसीही है।

बाइबल हमें बताती है कि हम जान सकते हैं कि हम बचाये गये हैं। हमें पूरा यक़ीन हो सकता है कि परमेश्वर ने हमें स्वीकार कर लिया है। हमें डर में जीने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि परमेश्वर की आत्मा हमें यक़ीन दिलाती है कि हम परमेश्वर द्वारा गोद ली गयीं संतानें हैं (रोमियों 8:15-16)।

यह आश्वासन इतना सिद्ध है कि हमें न्याय के दिन से डरने की जरूरत नहीं है (1 यूहन्ना 4:17)। कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें उम्मीद है कि उन्हें स्वर्ग में स्वीकार किया जाएगा, लेकिन हम इससे बेहतर आश्वासित हो सकते हैं। इतना मानना काफ़ी नहीं है कि मानवता को उद्धार सामान्य रूप से बख़्शा गया है; एक व्यक्ति को पूरा आश्वासन होना चाहिए कि वह पापों से मुक्त हो चुका है।

► कोई व्यक्ति कैसे जान सकता है कि वह मुक्त हो चुका है?

कुछ लोग अपनी भावनाओं पर निर्भर रहते हैं, लेकिन भावनाएं अस्थाई हैं और भटकाने वाली हो सकती हैं।

एक परिवर्तित जीवन इस बात का प्रमाण है कि वह व्यक्ति मुक्त हो चुका है, लेकिन यह प्रमाण पहले चरण में विद्यमान नहीं है। उद्धार के परिणाम अभी तक प्रकट नहीं हुए हैं, इसलिए, एक परिवर्तित जीवन आश्वासन का आधार नहीं हो सकता है।

विश्वासी अपने उद्धार के बारे में यह जानकर सुनिश्चित हो सकता है कि उसने उद्धार के लिए वचन का पालन किया है। यदि किसी ने वास्तव में पश्चाताप किया है और बाइबल के निर्देशों के अनुसार विश्वास किया है तो उसे यह विश्वास करने का अधिकार है कि परमेश्वर उसे क्षमा करता है। जब कोई पश्चाताप करता है और विश्वास करता है, परमेश्वर अपनी आत्मा की साक्षी देते हैं कि वह परमेश्वर की संतान बन गया है।

अगर कोई व्यक्ति यह महसूस करने की कोशिश करता है कि वह मुक्त हो चुका है, जबकि उसने वास्तव में पश्चाताप नहीं किया है तो वह भ्रमित होकर ख़ुद को धोखा दे सकता है।

यदि कोई व्यक्ति (1) वास्तव में पश्चाताप करता है, (2) पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के वादे पर विश्वास करता है, और (3) आत्मा की साक्षी प्राप्त करता है तो वह धोखा नहीं खाएगा। यह आश्वासन परमेश्वर के वचन पर आधारित है, जो हमेशा विश्वसनीय है। परमेश्वर हमेशा अपने वादे को पूरा करते हैं।

उद्धार के पहलुओं के लिए 10 शब्द

सुलहः इस शब्द का अर्थ है कि जो शत्रु हैं, उन्होंने फिर से सुलह कर ली है। उद्धार द्वारा, हम परमेश्वर के साथ सुलह करते हैं (2 कुरिन्थियों 5:19, रोमियों 5:1। ये छंद न्यायोचित और सामंजस्य दोनों के बारे में बात करते हैं।)।

परिशुद्धिः इस शब्द का अर्थ है कि पुराना लेखा-जोखा नष्ट कर दिया जाता है। उद्धार द्वारा, हमारे पापों का पुराना लेखा-जोखा मिटा दिया जाता है। (इब्रानियों 8:12)

समाधानः यह शब्द एक ऐसी क्रिया को संदर्भित करता है जो किसी के क्रोध को दूर करने के लिए निभायी गयी हो। उद्धार द्वारा, यीशु के बलिदान से परमेश्वर का क्रोध जो हमारे खिलाफ था दूर हो जाता है। (1 यूहन्ना 2:2)

छुटकारा: इस शब्द का अर्थ किसी को किसी के चगुंल से छुड़ाना है। उद्धार द्वारा, हमें शैतान और पाप की चंगुल और शक्ति से बचाया जाता है। (लूका 1:74; रोमियों 6:6, 12-18)

पाप से मुक्ति: इस शब्द का अर्थ है कि मूल्य चुकाया गया था ताकि कोई मुक्त हो सके। उद्धार में, यीशु की मृत्यु वह मूल्य है जिसके द्वारा हम पाप के बंधन और दण्ड से मुक्त हैं। (इफिसियों 1:7, तीतुस 2:14)

न्यायोचित: इस शब्द का अर्थ है कि किसी को धर्मी या निर्दोष घोषित किया गया है। उद्धार द्वारा, एक दोषी पापी को धर्मी गिना जाता है क्योंकि यीशु ने उसके बदले कष्ट झेला। (2 कुरिन्थियों 5:19, रोमियों 5:1। ये छंद न्यायोचित और सामंजस्य दोनों के बारे में बात करते हैं)।

शुद्धिकरण : इस शब्द का अर्थ है कि किसी को पवित्र किया गया है। उद्धार द्वारा, एक पापी को परमेश्वर की पवित्र संतान में बदल दिया जाता है। बहुत से लोग विश्वासियों को "पवित्र" कहते हैं(इफिसियों 1:1, कुलुस्सियों 1:1, फिलिप्पियों 1:1)।

गोद लेना: इस शब्द का अर्थ है कि कोई दूसरे व्यक्ति का कानूनी वंशज बन जाता है। उद्धार द्वारा हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं। (यूहन्ना 1:12, रोमियों 8:15)

पुनः उत्पत्ति/नया जन्म: इस शब्द का अर्थ है कि कोई व्यक्ति पुनः जीवन प्राप्त करता है। उद्धार द्वारा विश्वासी एक नया जीवन आरम्भ करता है। (इफिसियों 2:1, यूहन्ना 7:38-39, गलातियों 4:29, यूहन्ना 3:5)

मुहर लगाना: इस शब्द का अर्थ है कि किसी के स्वामित्व को दिखाने के लिए कुछ निशान लगाया गया है। उद्धार द्वारा, हमारे भीतर पवित्र आत्मा हमें किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचान देती है जो परमेश्वर का है। (इफिसियों 1:13)

.त्रुटि से बचना: पश्चाताप के बिना धर्म

वहाँ एक इस प्रकार का व्यक्ति है जो सहजता से सोच लेता है कि वह पापों से मुक्त हो जाता है जब वह सुनता है कि उद्धार विश्वास द्वारा अनुग्रह से प्राप्त होता है। उसने वास्तव में पश्चाताप नहीं किया है क्योंकि उसने नहीं देखा कि उसे उसकी जरूरत है। उसने खुद को कभी भी पापी के रूप में नहीं देखा जो परमेश्वर के न्याय के योग्य था। .वह सोचता है कि अनुग्रह का मतलब है कि वह अपने तरीके से जी सकता है। क्योंकि वह मसीहत की सच्चाई को स्वीकार करता है, वह सोचता है कि वह एक मसीही है हालांकि उसमे कोई बदलाव नहीं हुआ है। उसने कभी भी अपनी इच्छा को समर्पित नहीं किया; इसके बजाय, उसने

परमेश्वर को अपने जीवन के एक हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया और अभी भी ज्यादातर अपनी मर्जी के अनुसार रहता है। यह वचन के अनुसार परमेश्वर के साथ उद्धार पाए रिश्ते की शुरुआत नहीं है।

.पाठ 2 कार्यभार

(1) इस पाठ में हमने उद्धार के पहलुओं के लिए 10 शब्दों का अध्ययन किया है। कुछ अनुच्छेद में, समझाएं कि कौन से पहलु परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में सबसे महत्वपूर्ण लग रहे हैं। क्या कुछ ऐसे हैं जिनके बारे में आपको और अधिक सोचने की आवश्यकता है?

(2) आपके देश में और विशेष रूप से आपके अपने क्षेत्र में दिखाई देने वाली मसीहत के रूपों के आधार पर, लोग क्या सोचते हैं कि मसीही होने का मतलब क्या है? 2-3 पृष्ठों में, कई प्रकार के लोगों का वर्णन करें और वे क्या कहेंगे कि एक मसीही कौन है। समझाएं कि पश्चाताप, विश्वास या अन्य सिद्धांत को लेकर उनकी अवधारणा में क्या गलत है।

पाठ 3

सुसमाचार के प्रचार की तत्कालिकता

परिचय

► क्या सुसमाचार को सुने बिना किसी व्यक्ति का उद्धार हो सकता है? क्या सुसमाचार प्रचार का कार्य आवश्यक है?

पवित्रशास्त्र में हम उन उदाहरणों को देखते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह उन तक पहुँचा जो इज़राइल या कलीसिया के संपर्क में कभी नहीं आये है। मूसा के होने से पहले और पवित्र शास्त्र का एक भी पृष्ठ लिखे जाने से पहले अय्यूब ईमानदार था और उसने बुराई को अस्वीकार कर दिया था। बालाम का परमेश्वर के साथ संबंध था और नबी के रूप में जाना जाता था जो बिना मूर्छित हुए परमेश्वर से संदेश प्राप्त करता था। अबीमेलेक ने इब्राहीम की तुलना में अधिक सही तरीके से काम किया इस के बाद इब्राहीम का विचार, "निश्चित रूप से परमेश्वर का भय इस जगह पर नहीं है।" रोमियों 1:21-32 अन्यजाति का वर्णन करता है जो पथ भ्रष्ट थे; ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि वे कभी भी परमेश्वर के बारे में नहीं जानते थे, बल्कि इसलिए कि वो जो जानते थे उसे उन्होंने अस्वीकार किया।[1]

" यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।" (भजन सहिता 25:14) वाचा मनुष्य के साथ परमेश्वर के संबंध की शब्दावली है, इसके लिए अनुग्रह का प्रावधान आवश्यक है क्योंकि सभी ने पाप किया है। यदि एक व्यक्ति परमेश्वर पर पूरी तरह से श्रद्धा रखता है, तो परमेश्वर उसे उसके साथ रिश्ते में आने का रास्ता दिखाएगा।

बाइबल कहती है, उद्धार यीशु के नाम के अलावा किसी अन्य नाम द्वारा संभव नहीं है (प्रेरितों के काम 4:12)। हालांकि, पुराने नियम में जिन लोगों को बचाया गया था, वे यीशु के नाम को नहीं जानते थे। उन्होंने अपने विश्वास को परमेश्वर की मुक्ति और क्षमा प्रदान करने के वादे पर छोड़ दिया, और उसने इसे यीशु के द्वारा प्रदान किया। उसी प्रकार, जिन लोगों ने अभी तक यीशु का नाम नहीं सुना है, वे उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं जिसे वह यीशु के माध्यम से प्रदान करता है।

---

[1] भजन सहिता 19 और रोमियों 10:18 भी देखें।

तो, इसका क्या मतलब है कि उद्धार किसी अन्य नाम के द्वारा संभव नहीं है? इसका मतलब है कि उद्धार का कोई वैकल्पिक साधन नहीं है। किसी व्यक्ति को उद्धार की किसी अन्य योजना से बचाया नहीं जा सकता। इसका अर्थ यह भी है कि जो व्यक्ति यीशु के बारे में जानता है वह उसे अस्वीकार न करें, क्योंकि उसे अस्वीकार करने से उद्धार से इंकार करना होगा या उद्धार के कुछ अन्य साधनों को खोजना होगा।

"सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी"(यूहन्ना 1:9)। पवित्र आत्मा यीशु के प्रकाश को उन लोगों के लिए भी लाता है जिन्होंने उसके बारे में नहीं सुना है।

कई लोगों को दर्शन या अन्य विशेष प्रकटीकरण प्राप्त हुए हैं जो उन्हें मानव दूत से सुसमाचार सुनने से पहले परमेश्वर के पास लाए थे। उदाहरण के लिए, आधुनिक समय में कई मुसलमान परमेश्वर से संदेश प्राप्त करने के बाद परिवर्तित हुए है।

► क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना है जिसने वास्तव में सुसमाचार को समझने से पहले परमेश्वर से विशेष संचार प्राप्त किया हो ?

इसलिए, हम देखते हैं कि किसी व्यक्ति के लिए परमेश्वर को खोजना संभव है और यहां तक कि मानव दूतों के माध्यम से सुसमाचार को सुनने के बिना भी बचाया जा सकता है। तो भी, बाइबिल सुसमाचार को एक संदेश के रूप में वर्णित करती है जिसे सभी को सुनने की तत्काल आवश्यकता है।

रोमियो की पुस्तक सुसमाचार की तात्कालिकता का वर्णन करती है। प्रेरित ने कहा कि सुसमाचार "परमेश्वर की सामर्थ्य है उद्धार के लिए "(पतरस 1:16)। उसने कहा कि वह सभी का कर्ज़दार है, उन्हें सुसमाचार देने के लिए (पतरस 1:14)। वह उस सत्य को स्थापित करता हैं जिसके द्वारा हम क्षमा करने के वादे पर विश्वास कर लेने से ही धर्मी ठहराए जाते हैं। (पतरस 3:26, 5:1)

> उत्तर के विशाल मैदान में, मैंने कभी-कभी सुबह के सूरज में एक हजार गाँवों का धुआँ देखा है जहाँ कभी कोई मिशनरी नहीं रहा - ऐसे गाँव जिनके लोग बिना मसीह के, बिना परमेश्वर के, और दुनिया में बिना उम्मीद के हैं।
> (रॉबर्ट मोफ़त)

फिर, तात्कालिकता की समझ आती है। उसने कहा, "फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?" (रोमियो 10:14)। उसने कहा, "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियो 10:17)। परमेश्वर सुसमाचार को सुनने वालों मे बचाने वाला विश्वास पैदा करने के लिए इस्तेमाल करता है। सुसमाचार का प्रचार करना परमेश्वर के लिए एक साधारण तरीका है पापियों को बचाने के लिए।

अगर उन्हें दूत के बिना बचाया जा सकता है, तो एक दूत इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

.मिशनरियों की आवश्यकता क्यों है?

मिशनरी स्टीव हाइट ने (मिशनरियों की आवश्यकता क्यों है*?)* इस सवाल का जवाब इस तरह दिया:

> इसका सरल उत्तर है वह मनुष्य, जब उन्होंने प्रकाश देखा, तो उसे अस्वीकार कर दिया। यूहन्ना 1:9 हमें सूचित करता है कि यीशु वह ज्योति है जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाश देता है। पौलुस ने घोषणा की कि सृष्टि ने परमेश्वर का ज्ञान कराया (रोमियों 1:19-20) और वह, यहाँ तक कि जब मनुष्य परमेश्वर को जानते थे, तब भी उसे परमेश्वर की तरह महिमा नहीं दी (रोमियो 1:21)। यूहन्ना इस तरह की स्थिति का आकलन करता है: "और दंड की आज्ञा का कारण यह है, कि ज्योति जगत में आई, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना" (यूहन्ना 3:19)। मनुष्य का भ्रष्ट हृदय अपनी धोखेबाज़ी और हताश दुष्टता के कारण अंधेरे को प्राथमिकता देता है (यिर्मयाह 17:9), पाप भरा हृदय परमेश्वर से हट जाता है।
>
> इसलिए, मिशनरियों को फिर से ज्योति उठाने की आवश्यकता है। दूसरा मौका देने वाले परमेश्वर अपने राजदूतों को सुसमाचार की जलती मशाल के साथ भेजता हैं उन्हें अंधकार से ज्योति की ओर मोड़ने के लिये (प्रेरितों के काम 26:18)।

जब यीशु ने सुसमाचार सुनाने के लिए शिष्यों को भेजा, तो उन्होंने कहा कि यदि कोई नगर उनके संदेश को स्वीकार नहीं करता है, तो वे उस नगर को छोड़ने से पहले अपने जूते की धूल को झाड़ लें। उन्होंने कहा कि धूल न्याय के दिन उनके खिलाफ एक गवाही होगी। उनके जूतों की धूल इस बात का प्रमाण थी कि सुसमाचार का एक संदेशवाहक उनके शहर में आया था। क्योंकि जो लोग सुसमाचार को अस्वीकार करते हैं, वे उन लोगों की तुलना में अपने ऊपर बुरा न्याय लाते हैं, जिन्होंने सुसमाचार नहीं सुना। यीशु ने कहा कि वे सदोम के लोगों की तुलना में अधिक कठोरता से न्याय के हक़दार होंगे। यह हमें बताता है कि सुसमाचार उन लोगों के लिए काफी लाभकारी होता है जो उसे सुनते हैं (मरकुस 6:11)।

पास्टर एरिक हिमेलिक ने इस स्पष्टीकरण के साथ सवाल (मिशनरियों की आवश्यकता क्यों है?) का जवाब दिया:

> हम मिशनरियों को भेजते हैं क्योंकि सुसमाचार का संदेश संबंधों के आधार पर सबसे बढ़िया ढ़ंग से बताया जाता है। सुसमाचार की सच्चाई परमेश्वर के बारे में औपचारिक तथ्यों का भाव या

धार्मिक विश्वास के वैकल्पिक उत्तरों पर चिन्ह लगाना मात्र नहीं है; यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में समाविष्ट है। मिशनरी मसीह के लिए राजदूत हैं, उनका संदेश है, और उनके मिलाप की सेवकाई है (2 कुरिन्थियों 5:20)।

मिशनरियों की जरूरत इसलिए है क्योंकि सुसमाचार संदेश को सीधे और संबंधों को ध्यान में रखकर नहीं बताया गया तो, अधिकांश लोग खो जाएंगे। हम यह विश्वास नहीं करना चाहते हैं कि हमारी निष्क्रियता के कारण लोग खो रहे हैं, लेकिन रोमियों 10:13-15 स्पष्ट है: "और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें?" दुखद सच यह है, वे नहीं सुनेंगे। मिशनरीयों का भेजना और समर्थन करना अत्यावश्यक है। यह आशा करना कि परमेश्वर हमारे लिए वह कार्य करेगा जिसे करने के लिए उन्होंने हमें बुलाया है, कोई समाधान नही है। परमेश्वर ने हमें महा आज्ञा दी है; और जिसे ज्यादा दिया गया है उससे ज्यादा अपेक्षा भी है। हम परमेश्वर के अनुग्रह के जवाब में और विश्वास में मिशनरियों को भेजते हैं कि परमेश्वर अपनी दुनिया में काम कर रहा है और लोगों को अपने महान हृदय की ओर आकर्षित कर रहा है।

सुसमाचार का व्यावहारिक उपयोग

सुसमाचार एक प्रभावशाली साधन है जिसे परमेश्वर ने खोए हुए को बचाने के लिए तैयार किया है। यह उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियो 1:16) आइये एक बार फिर इस सवाल पर विचार करें। यदि एक व्यक्ति को बिना सुसमाचार सुने बचाया जा सके, तो हम मिशनरियों को क्यों भेजें? आइये कुछ मिलते जुलते प्रश्नों पर विचार करते हैं। अगर किसी व्यक्ति को मेरी प्रार्थना के बिना बचाया जा सकता है, तो मैं उसके लिए प्रार्थना क्यों करूँ? यदि किसी व्यक्ति को एक से अधिक बार सुसमाचार सुने बिना बचाया जा सकता है, तो हमें उसे फिर से क्यों बताना चाहिए? यदि किसी व्यक्ति को बिना कलीसिया के बचाया जा सकता है, तो कलीसिया क्यों होनी चाहिए? स्पष्ट उत्तर है, "हाँ, उसे बचाया जा सकता है, लेकिन इसकी संभावना बहुत कम है।" यह सब अन्य ज़रिए है जो परमेश्वर ने खोए हुए को बचाने के लिए तैयार किये हैं।

> 2011 के बाद से दुनिया की आबादी सात अरब से अधिक हो गई है। हर दिन 153,000 से अधिक लोग मारे जाते हैं, लेकिन दुनिया की आबादी अभी भी हर दिन 220,000 बढ़ती जा रही है। हर मिनट 100 से ज्यादा लोगों की मौत होती है। जब से आपने इस पाठ को पढ़ना शुरू किया है तब से 1,000 से अधिक लोग मर चुके होंगे। मरने से पहले उनमें से कितने लोगों ने सुसमाचार सुना है?

परमेश्वर का वचन पापियों को परमेश्वर के पास लाने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जाने वाला उपकरण है। बाइबल यहां तक कहती है कि लोग परमेश्वर के वचन द्वारा नया जन्म पाते हैं (1 पतरस 1:23, 25)।

मिशनरियों को लगभग ऐसा कोई नहीं मिलता जो सुसमाचार सुनने के पहले ही बचाया गया हो। यह तथ्य कि परमेश्वर सुसमाचार के बिना एक ईमानदार व्यक्ति को बचाएगा, उसकी निष्पक्षता को दर्शाता है, लेकिन यह हमारे साधारण ज़रियों की लापरवाही को उचित नहीं ठहराता जो उसने तैयार किए हैं। सामान्य तौर पर, जो सुसमाचार नहीं सुनता है वह खो जाएगा। " और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय। " (1 कुरिन्थियों 9:16)।

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 9:35-38 पढ़िए चाहिए।

यीशु के पास लोगों की ज़रूरतों के लिए बहुत करुणा थी। वह प्रचार और चंगाई में व्यस्त थे।

यीशु लोगों की आत्मिक ज़रूरतों के बारे में सबसे अधिक चिंतित थे। वह चाहते थे कि उन्हें बचाया जाए और वे परमेश्वर को जानें। इस गद्यांश में, हमने पढ़ा कि यीशु ने लोगों की भीड़ को देखा और उनकी आत्मिक आवश्यकताओं के लिए तीव्र करुणा महसूस की। उन्होंने देखा कि जैसे वे चरवाहे के बिना भेड़ थे। उन्होंने सेवकाई की तुलना कटनी के काम से भी की, और उन्होंने दुःख जताया कि वहाँ कुछ ही मजदूर थे।

यीशु ने अपने शिष्यों को एक प्रार्थना दी। उन्होंने उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा कि परमेश्वर मज़दूरों को फसल की कटनी के लिए भेजे।

► यीशु ने शिष्यों को यह प्रार्थना करने के लिए क्यों कहा? निश्चित रूप से परमेश्वर यह करना चाहते हैं चाहे हम प्रार्थना करें या नहीं, है ना?

जब हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर मज़दूरों को भेजेंगे, तो हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना कर रहे होते हैं। लिहाज़ा, हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना का जवाब देंगे।

एक और कारण है कि विश्वासियों को इस प्रार्थना को करना चाहिए। यीशु चाहते थे की उनके चेले उनकी करुणा को बांटे और उनकी सेवकाई के लिए प्रचार करे। यदि वे इस प्रार्थना को ज्यादातर करते, तो वे फसल की गंभीरता से परवाह करना शुरू करते। वे काम करने मे भागीदार होने की इच्छा रखते और दूसरों को भी इसके लिए राजी करते

हमें उन्हीं बातों की परवाह करने की इच्छा रखनी चाहिए, जिनके बारे में यीशु ने ध्यान दिया था। हमें वह प्रार्थना करनी चाहिए जो उन्होंने शिष्यों को दीं, ताकि हमारे लिए भी इसका वही प्रभाव हो।

.एक मिशनरी कहानी

मिशनरियों की एक टीम जेल के एक शिविर में प्रचार करने के लिए गई थी। वहाँ हजारों कैदी थे, और उनमें से अधिकांश हत्यारे और आतंकवादी थे। मिशनरियों ने बाहर मंच पर प्रचार किया। मंच के चारों ओर, उनकी रक्षा के लिए बंदूकों के साथ गार्ड तैनात थे। सुसमाचार के उपदेश के अंत में, उपदेशक ने पूछा कि क्या कोई कैदी नया नियम प्राप्त करने के लिए आगे आना चाहता है। तीस लोग आगे आए।

कुछ हफ्तों बाद मिशनरियों ने फिर से शिविर का दौरा किया। सेवा से पहले, वार्डन ने उन्हें बताया कि नया नियम लेने वाले पुरुषों में से सभी तीस कैदियों की अन्य कैदियों द्वारा हत्या कर दी गयी। मिशनरियों ने फिर से सुसमाचार प्रचार किया, और अंत में उन्होंने फिर से जो आगे आये उन्हे नया नियम देने की पेशकश की। तीन सौ पुरुष आगे आए। वे जानते थे कि तीस लोग सुसमाचार को स्वीकार

करने के कारण मर गए थे, लेकिन क्योंकि सुसमाचार उनके लिए मूल्यवान था, वे अपने जीवन को जोखिम में डालने के लिए तैयार थे। उन्हें उनके द्वारा सुने गए संदेश के मूल्य का एहसास हुआ।

.पाठ 3 कार्यभार

(1) इन दो प्रश्नों में से प्रत्येक का उत्तर कुछ वाक्यों में लिखें। क्या एक व्यक्ति जो कभी भी सुसमाचार नहीं सुनता है उसके पास उद्धार का कोई अवसर है ? हमें मिशनरियों और प्रचारकों को क्यों भेजना चाहिए?

(2) योना की पुस्तक पढ़ें। सुसमाचार के दूत की तत्परता पर ध्यान दें। इस कहानी में परमेश्वर की चिंता क्या थी? योना की चिंताएं क्या थीं? अपने निरीक्षणों के 1-2 पृष्ठ लिखें।

पाठ 4

सुसमाचार के आवश्यक बिन्दु

कक्षा के अगुए के लिए सूचना

प्रत्येक बिंदु के लिए, किसी को वचन के पदों को पढ़ना है, फिर किसी को बिंदु के स्पष्टीकरण को पढ़ने दें। कक्षा चर्चा के प्रत्येक प्रश्न पर संक्षेप में चर्चा करें।

सुसमाचार के आवश्यक बिंदु

निम्नलिखित बिन्दु सुसमाचार के मुख्य तत्व हैं। किसी व्यक्ति का उन्हें पूरी तरह से समझे बिना बचाया जाना संभव है। फिर भी, इनमें से किसी भी बिन्दु का खंडन सुसमाचार की नींव को हटा देता है। एक व्यक्ति या संगठन जो इन मुख्य तत्वों में से किसी का भी इंकार करता है, उद्धार के एक झूठे उपाय पर भरोसा करते हुए, एक अन्य सुसमाचार को विकसित करता है।

जब आप किसी के साथ सुसमाचार को बांटते हैं, तो कुछ अंक विशेष रूप से त्रुटियों के कारण महत्वपूर्ण होंगे जिन्हें वह पहले से ही मानता है। उदाहरण के लिए, यदि वह मानता है कि उद्धार केवल एक निश्चित संगठन के माध्यम से है तो वह यह विश्वास करेगा कि उद्धार के लिए संगठन की सदस्यता की आवश्यकताएं अनिवार्य हैं। उसे यह जानना होगा कि एक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से क्षमा प्राप्त करता है और परमेश्वर के साथ सीधे संबंध में आता है।

(1) परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी ही छवि में रचा ताकि परमेश्वर उसके साथ रिश्ते स्थापित कर सके (उत्पत्ति 1:27, प्रेरितों के काम 17:24-28)

यह सत्य हमारे अस्तित्व के उद्देश्य और उद्धार के लक्ष्य को दर्शाता है। इस सत्य का खंडन उन धर्मों के द्वारा किया जाता है जो व्यक्तित्व वाले परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं। यह सत्य दुनिया की वास्तविक समस्या को दर्शाता है; लोग परमेश्वर के साथ रिश्ते मे नहीं

► क्या हो अगर कोई व्यक्ति यह नहीं मानता कि परमेश्वर उससे प्यार करता है?

.(2) पहले लोगों ने पाप किया और परमेश्वर से अलग हो गए (उत्पत्ति 3:3-6)।

यह पाप की उत्पत्ति और दुनिया की स्थिति के वास्तविक कारण को दर्शाता है। दुनिया पाप के कारण दुःख और कष्ट का स्थान है। परमेश्वर के प्रारुप के कारण अभी भी खुशी और उद्देश्य क़ायम है, लेकिन दुनिया परमेश्वर की योजना के मुताबिक नहीं है।

► क्या होगा अगर कोई व्यक्ति यह नहीं मानता कि पाप ही दुनिया की वास्तविक समस्या है?

.(3) प्रत्येक जन परमेश्वर से अलग और उसके प्रति अवज्ञाकारी पैदा हुआ है (रोमियों 3:10-23)।

प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के प्रति इच्छानुसार पाप करने का दोषी है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसने हमेशा वही किया है जो सही है।

► क्या हो अगर कोई व्यक्ति सोचता है कि वह अपने द्वारा की गई चीजों को उचित सिद्ध कर सकता है?

.(4) हर पापी जिसे दया नहीं मिलती, उसका परमेश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा और अनन्त दंड को भोगेगा (इब्रानियों 9:27, रोमियों 14:12, प्रकाशितवाक्य 20:12)।

यह पापी की मुक्ति की आवश्यकता की गंभीरता और तात्कालिकता को दर्शाता है।

► क्या हो अगर कोई व्यक्ति यह नहीं मानता है कि एक धर्मी परमेश्वर है जो उसके पापों के बारे में क्रोधित है?

.(5) कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पापों का भुगतान करने के लिए कुछ नहीं कर सकता है (रोमियों 3:20, इफिसियों 2:4-9)।

अच्छे काम और उपहार पाप के लिए भुगतान नहीं कर सकते, क्योंकि पाप अनंत परमेश्वर के खिलाफ एक जुर्रत है और सब कुछ पहले से ही उसका है।

► क्या हो अगर कोई व्यक्ति यह मानता हो कि उसे स्वयं को क्षमा के योग्य बनाना चाहिए?

.(6) क्षमा करने का एक आधार होना चाहिए, क्योंकि पाप गंभीर है और परमेश्वर न्यायी है (रोमियों 3:25-26)।

परमेश्वर क्षमा करने की इच्छा रखता है; लेकिन, अगर वह बिना किसी आधार के क्षमा कर देता है, तो पाप तुच्छ प्रतीत होगा, और परमेश्वर अन्यायपूर्ण प्रतीत होगा।

► मसीह की मृत्यु क्यों आवश्यक थी?

.(7) परमेश्वर के पुत्र, यीशु ने एक पाप रहित जीवन जीया और बलिदान के रूप में मर गया ताकि हमारे पापों को क्षमा किया जा सके (यूहन्ना 3:16, रोमियों 5:8-9)

क्योंकि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उसके बलिदान को अनंत मूल्य है और दुनिया में किसी को भी क्षमा करने का आधार प्रदान करता है। यदि वह सिर्फ एक आदमी होता, तो उसके बलिदान का सीमित मूल्य होता। यीशु का लहू हमारे लिए दिए गए उनके जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। उसके लहू के बिना कोई उद्धार नहीं है (इब्रानियों 9:22)। यदि वह परमेश्वर नहीं होता, तो वह हमें पूरी तरह से बचा नहीं सकता था; और, हम बिना आशा के, उद्धार के दूसरे तरीके देख रहे होते।

► क्यों कुछ धर्मों का मानना है कि लोग कर्मों द्वारा बचाए जाने चाहिए?

.(8) यीशु मृतकों में से शारीरिक रूप से जी उठे, उन्होंने परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनी पहचान को साबित किया और अनन्त जीवन देने की अपनी सामर्थ का प्रदर्शन किया (यूहन्ना 20:24-28, प्रकाशितवाक्य 1:18)।

यीशु के पुनरुत्थान से इंकार करने वाले पंथ आमतौर पर उनके ईश्वर होने और उद्धार के लिए उनके बलिदान की प्रचुरता से भी इंकार करते हैं। फिर, वे उद्धार के अन्य उपाय का आविष्कार करते हैं।

► वे कौन सी बातें हैं जो हम जानते हैं क्योंकि यीशु मृतकों में से जी उठे हैं?

.(9) यीशु का बलिदान सभी पापों की क्षमा के लिए पर्याप्त है (1 यूहन्ना 1:9, 1 यूहन्ना 2:2)।

यदि कोई व्यक्ति इस सच्चाई से इंकार करता है, तो वह कर्मों के सुसमाचार पर विश्वास करेगा। कई धर्मो का विश्वास है कि एक व्यक्ति कैसे आंशिक रूप से अपना उद्धार प्राप्त कर सकता है। यह लोगों को एक धार्मिक संगठन के नियंत्रण में रखता है जो बताता है कि उन्हें उद्धार प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए।

► क्यों कुछ लोगों को लगता है कि उन्हें अपने धार्मिक संगठन के बिना बचाया नहीं जा सकता है?

.(10) **परमेश्वर हर उस व्यक्ति को क्षमा करता है जो स्वीकार करता है कि वह पापी है, अपने पाप का पश्चाताप करता है, और परमेश्वर के वादों को मानता है कि वह क्षमा करेगा (मरकुस 1:15, 1 यूहन्ना 1:9)।**

किसी भी मानव संगठन को अधिकार नहीं है कि उद्धार के लिए जो आवश्यक है उसमें मिलावट करें या उद्धार के लिए किसी अन्य उपाय को प्रस्तुत करें।

► किस व्यक्ति को यह मानने का अधिकार है कि वह बच गया है?

.(11) **पश्चाताप का अर्थ है कि व्यक्ति अपने पापों के लिए क्षमा चाहता है और अपने पापों को छोड़ने के लिए तैयार है (यशायाह 55:7; यहेजकेल 18:30, यहेजकेल 33:9-16; मत्ती 3:8)।**

पश्चाताप का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर को स्वीकार करने से पहले व्यक्ति को अपने जीवन को परिपूर्ण बनाना है; केवल परमेश्वर ही पापियों को उनके पापों की शक्ति से मुक्ति दिला सकते हैं। पश्चाताप का मतलब है कि व्यक्ति को अपने पापों के लिए इतना खेदित है कि वह अपने पापों को छोड़ने के लिए तैयार है। यदि कोई व्यक्ति अपने पापों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है, तो उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। अगर कोई व्यक्ति अभी भी अपनी इच्छा से पाप में जी रहा है, तो उसने पश्चाताप नहीं किया है।

► पश्चाताप क्यों आवश्यक है?

.(12) **एक पश्चाताप करने वाला पापी, परमेश्वर से प्रार्थना करता है और परमेश्वर से उसे क्षमा करने के लिए कहता है, वह विश्वास करने पर क्षमा प्राप्त करता है (रोमियों 10:13, प्रेरितों 2:21)।**

प्रत्येक व्यक्ति को यीशु की वजह से परमेश्वर की दया प्राप्त होती है। किसी व्यक्ति को परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने के लिए किसी संस्था या मानव प्रतिनिधि की अनिवार्यता नही है। वह व्यक्ति इसे व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करता है और परमेश्वर के साथ सीधे रिश्ता शुरू करता है।

► हम कैसे निश्चित कर सकते हैं कि एक व्यक्ति क्षण भर में मसीही बन सकता है?

.पाठ 4 कार्यभार

(1)

कुछ अनुच्छेदों में, वर्णन करें कि आपके उद्धार के समय इनमें से एक या दो बिंदुओं का विशेष रूप से आपके लिए कितना महत्व था।

(2) शोध करने के लिए एक पंथ या गैर-मसीही धर्म चुनें। 2-3 पृष्ठों में, बताएं कि वे सुसमाचार के कुछ आवश्यक बिंदुओं को कैसे नकारते हैं। वर्णन करे वे कौन सा गलत सुसमाचार बताते हैं और बताये कैसे वो गलत सिद्धांतों पर निर्भर है। वर्णन करे कि आप सत्य के लिए कैसे उन्हें पवित्र शास्त्र से साक्ष्य देंगे।

पाठ 5

सुसमाचार प्रचार और उसकी प्राथमिकता

परिचय

► एक छात्र को समूह के लिए इफिसियों 1:4-9 पढ़ना चाहिए। इस अध्याय में कौन से महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाए जाते हैं?

सुसमाचार प्रचार वर्णन

सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया एक ऐसी कलीसिया है जो केवल अनुग्रह द्वारा सिर्फ विश्वास से उद्धार का वचन आधारित सुसमाचार सिखाती है। मसीह के बलिदान में मिलाया गया मनुष्य का कोई भी अच्छा काम हमें उद्धार पाने में मदद नहीं कर सकता।

सच्चे सुसमाचार को प्रचारित करना सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया की प्राथमिकता है क्योंकि जो सुसमाचार जानते हैं वह मानते हैं कि सुसमाचार का प्रचार करना किसी अन्य बात से अधिक महत्वपूर्ण है।

सुसमाचार परमेश्वर द्वारा कलीसिया को सौंपा गया विशेष ख़ज़ाना है जिसे वह दुनिया के साथ बाँटना चाहता है।

अधिकांश सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया को कुछ ख़ास विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं को अगले भाग में दिया गया है:

1. सुसमाचार प्रचारक बाइबल के पूर्ण अधिकार में विश्वास करते हैं। बाइबल के पूर्ण अधिकार को अस्वीकार करने का अर्थ, सुसमाचार को विवादास्पद बनाना होगा।
2. सुसमाचार प्रचारक मसीही धर्म के ऐतिहासिक, मूलभूत सिद्धांतों में विश्वास करते हैं। उन सिद्धांतों का खंडन करना सुसमाचार का खंडन करना होगा। उदाहरण के लिए, ऐसे धर्म-संप्रदाय जो मसीह के प्रभुत्व को अस्वीकार करते हैं, यह भी अस्वीकार करते हैं कि मसीह का बलिदान उद्धार के लिए पर्याप्त है, इसके बजाय कर्म के सुसमाचार को सिखाते है।

3. सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया में व्यक्तिगत आत्मिक अनुभव पर ज़ोर दिया जाता है। यह विशेषता इसलिए मौजूद है क्योंकि वे व्यक्तिगत उद्धार और होशोहवास में किये विश्वास में यक़ीन करते हैं। इस विश्वास की वजह से, प्रचारक अविश्वासियो को सुसमाचार प्रचार और विश्वासियों के आत्मिक निर्माण पर ज़ोर देते हैं।

► आपकी कलीसिया इन विशेषताओं को कैसे प्रदर्शित करती है? क्या वहाँ ऐसी अन्य विशेषताएं भी हैं जो बताए की सुसमाचार प्राथमिक है?

सुसमाचार की केन्द्रीयता

सुसमाचार कलीसिया को अपना मिशन देता है। कलीसिया जो सुसमाचार को अपनी प्राथमिकता नहीं बनाता है वह परमेश्वर द्वारा दिए गए मिशन को भूल गया है।

हमने मत्ती 28:18-20 में दी गई महान आज्ञा का अध्ययन किया है। कलीसिया का प्राथमिक कार्य क्या है?

जहाँ कहीं भी प्रचार किया जाता है, वहाँ कलीसिया का निर्माण होता है। पूरे इतिहास में सच्ची कलीसिया वहीं मिली जहां सुसमाचार का प्रचार हुआ। कलीसिया की विरासत प्रेरितों के समय से संस्थानों की निरंतरता में नहीं मिलती है, लेकिन विश्वसनीय सुसमाचार प्रचार की निरंतरता में मिलती है।

> मसीह के प्रभुत्व और कलीसिया के विश्व मिशन के बीच एक सीधा संबंध है। यह मत्ती के महान आज्ञा में स्पष्ट रूप से सामने आता है। यह निश्चित रूप से है, क्योंकि स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी अधिकार पिता परमेश्वर द्वारा परमेश्वर पुत्र को दिए गए हैं कि कलीसिया के पास सभी जातियों को शिष्य बनाने की जिम्मेदारी है।
> (जे. हर्बर्ट केन, "द वर्क ऑफ एवेंजलिस्म")

कलीसिया द्वारा बनाए गए सभी संस्थानों को सुसमाचार की प्राथमिकता पर काम करना चाहिए। उदाहरण के लिए, पासबानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम मे उनको कलीसिया की अगुवाई मे इसके सुसमाचार प्रचार और शिष्यता मिशन को पूरा करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए।

संस्थाएं अपने स्वयं के अस्तित्व की ख़ातिरदारी के चक्कर में असली मिशन को भूल जाती हैं। सुसमाचार के नए सिरे से ज़ोर देने से संस्थान हमेशा सुधार की ओर बढ़ते हैं।

कलीसिया विश्वास, स्तुति आराधना, मसीही जीवन और कलीसिया नीति की परंपराओं को विकसित करती है; लेकिन सुसमाचार के नए सिरे से ज़ोर देने के द्वारा परंपरा के सुधार में मार्गदर्शन होता है।

सुसमाचार प्राथमिकता के खो जाने के उदाहरण

उदाहरण 1

जैसे कलीसिया प्रचार के मिशन को पूरा करने के लिए काम करती है, इसके लिए योजनाएँ बनाना, टीम बनाना, कार्यक्रम विकसित करना और समर्थन तलाशना आवश्यक है। कलीसिया व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थानों का निर्माण करती है। अक्सर, आत्मिक पुनरुत्थान के समय में संस्थाएं बनती हैं जब लोग प्रतिबद्ध होते हैं और कलीसिया अपने मिशन को पूरा करने के लिए प्रेरित होती है।

संस्थान आवश्यक हैं। एक संस्थान मात्र लोगों और संसाधनों का दीर्घकालिक संगठन है। संस्थानों के बिना, कोई कलीसिया का निर्माण नहीं होगा, कोई विदेशी मिशन नहीं होगा, बाइबल या किसी अन्य साहित्य का प्रकाशन नहीं होगा, कोई मसीही स्कूल या शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं होंगे, और सेवकाई के लिए आर्थिक सहायता भी नहीं होगी। यहाँ तक की स्थानीय कलीसिया एक संस्थान है जो तब तक अस्तित्व में नहीं है जब तक कि लोगों का एक समूह इसके लिए प्रतिबद्ध नहीं है।

यदि कोई संस्था सफल होती है, तो यह कई लोगों और बड़ी पूंजी के साथ बड़ी हो सकती है। संस्था को बनाए रखने के लिए बहुत प्रयास और खर्च करना पड़ता है। संस्था में काम करने वाले लोगों को लगता है कि संस्थान का निर्माण प्राथमिक लक्ष्य है। वे सोचते हैं कि उनका काम संस्थान को चालू रखना है इसके बजाय कि संस्थान के असली मिशन को पूरा करें।।

हालाँकि संस्थाएं आवश्यक हैं, फिर भी उन्हें अक्सर सुसमाचार की प्राथमिकता के आधार पर आंकना और सुधारना चाहिए।

उदाहरण 2

क्योंकि सेवकाई द्वारा पैसा कमाने की क्षमता है इसलिए कुछ लोगों ने व्यवसाय के रूप में सेवकाई को शुरू किया है। सेवकाई के खर्चों के लिए सेवकाई का चीजों को बेचना गलत नहीं है, और आर्थिक सहायता को तलाशना गलत नहीं है। हालांकि, यदि कोई व्यक्ति सुसमाचार की प्राथमिकता की बजाय पैसे से ज्यादा प्रेरित होता है, तो उसका हृदय दोषी है और उसका काम परमेश्वर को प्रसन्नता नहीं देता है (1 पतरस 5:1-2, 2 पतरस 2:3)।

शिमोन एक ऐसा व्यक्ति था जो आत्मिक वरदान चाहता था ताकि उसे पद और आर्थिक लाभ हो सके, लेकिन प्रेरित ने उसे बताया कि उसके हृदय में खोट थी (प्रेरितों के काम 8:18-23)।

► एक पासबान की उस परिस्थिति में क्या गलत है जो अपनी कलीसिया को बेचने की कोशिश करता है? उसकी समझ मे की कलीसिया क्या है मे क्या गलत है?

उदाहरण 3

समन्वयता एक दूसरे धर्म द्वारा विरोधात्मक विश्वास और प्रथाओं के विषय में मसीही धर्म का मिश्रण है। नए नियम के समय से सामरी धर्म समन्वयता का उदाहरण है। विदेशी जो मूर्तियों की पूजा करते थे वे इजरायल के क्षेत्र में चले गए और इज़राइल के धर्म को उनकी मूर्ति पूजा के साथ मिला दिया; यीशु ने कहा कि वे नहीं जानते कि उन्होंने क्या उपासना की थी (यूहन्ना 4:22)।

समन्वयता का एक और उदाहरण हैती के इतिहास से भी मिलता है। जब हैती एक फ्रांसीसी उपनिवेश बस्ती थी, तो अफ्रीका से आये गुलामों को मसीहत में परिवर्तित होने की आवश्यकता थी। उन्होंने अपने पूर्व धर्मों को रोमन कैथोलिक धर्म के साथ मिलाया था। काफी हैतीवासी अब भी वूडू का अभ्यास करते हैं, जो आत्माओं की पूजा करना है, लेकिन वे मसीही चिन्हों और मसीही संतों के नामों का उपयोग करते है।

कभी-कभी समन्वयवाद हुआ क्योंकि मसीही धर्म एक ऐसे राष्ट्र के साथ जुड़ा था जो दूसरे राष्ट्र पर हावी था। लोगों को राजधारी राष्ट्र को खुश करने की आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने इसके धार्मिक रीति-रिवाजों को स्वीकार किया लेकिन अपनी मूल मान्यताओं को बनाए रखा।

► मसीही धर्म और अन्य धर्मों के बीच मिश्रण के कौन से उदाहरण आपने देखे हैं?

सांसारिक उद्देश्यों के कारण समन्वयता हो सकती है। अगर लोगों को लगता है कि सुसमाचार को स्वीकार करने से उन्हें आर्थिक लाभ, राजनीतिक प्रभाव, या प्रभावशाली लोगों के पक्ष में लाया जाएगा, तो वे वास्तव में परिवर्तित हुए बिना, मसीही धर्म की दिखावट को स्वीकार करते हैं। फिर, वे अपनी पुरानी मान्यताओं और प्रथाओं का पालन करते हैं लेकिन उन्हें मसीही नामों से बुलाते हैं। यह सबसे अच्छा होता है जब कलीसिया उन चीजों की पेशकश के बिना प्रचार करे जिसके कारण लोग गलत इरादों से प्रतिउत्तर देते हैं।

मसीहत विदेशी धर्म लगता है जब सुसमाचार विदेशी मिशनरियों द्वारा लाया जाता है। जो भी हो, मसीहत के लिए यह महत्वपूर्ण है कि इसका रोपण प्रत्येक संस्कृति मे हो और वह उस स्वरूप को ले जो कि वहाँ के घरों मे उस संस्कृति मे हो। इसे विदेशी धर्म की तरह नहीं दिखना चाहिए। हालांकि, मिशनरियों और

प्रचारकों के लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि संस्कृति की किस बात को मसीहत के साथ नही मिलाया जा सकता है। यह पहचान करना एक प्रक्रिया है जिसे स्थानीय मसीहियों द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए और इसे जल्दी समाप्त नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण 4

कभी-कभी किसी धर्म को राष्ट्र का स्थापित धर्म माना जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ देशों में, अधिकांश लोग मुस्लिम हैं। अन्य देशों में, अधिकांश लोग खुद को रोमन कैथोलिक मानते हैं। बहुत से लोग वास्तव में अपने धर्म के नैतिक आदर्शों का पालन नहीं करते है और केवल कभी-कभी धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते है; लेकिन वे कहते हैं कि वे उस धर्म के अनुयायी हैं।

बहुत से लोग खुद को मसीही कहते हैं क्योंकि उनके सामाजिक दायरे में सभी अच्छे लोगों को मसीही माना जाता है। उन्होंने वास्तव में पश्चाताप नहीं किया है। वे नैतिकता के अपने आदर्श का पालन करते हैं।

सुसमाचार पश्चाताप और मसीह की अधीनता की बुलाहट है। यीशु ने कहा कि एक व्यक्ति उसका शिष्य तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वह स्वयं को नहीं नकारता और एक सच्चा अनुयायी नहीं बनता है (लूका 9:23)।

एक मसीही की परिभाषा को एक पापी समाज में लोकप्रिय होने के लिए अनुकूलित नहीं किया जा सकता है। एक समाज की सामान्य नैतिकता हमेशा मसीही नैतिकता से बहुत कम होती है, और एक मसीही दुनिया के साथ विरोधाभासों में रहता है।

► आपके समाज मे अकसर पश्चाताप के बिना लोकप्रिय मसीहत कैसे प्रकट होती है?

उदाहरण 5

हम यह उम्मीद नहीं कर सकते हैं कि सभी मसीही सभी सिद्धांतों पर सहमत होंगे। मसीहियों के बीच भिन्नत है, भले ही वे बाइबल को सिद्धांतों के लिए अपने अधिकार के रूप में स्वीकार करते हैं।

कभी-कभी कलीसियाएं उन सिद्धांतों को अधिक महत्व देती हैं जो उन्हें अन्य कलीसियाओं से अलग करते हैं, लेकिन वे सिद्धांत उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जितने कि मसीहत के मूलभूत सिद्धांत हैं। एक कलीसिया

को किसी अन्य कलीसिया के लिए यह नहीं कहना चाहिए कि वो असल मसीही नहीं हैं, यदि वो कलीसियाएं मूल सुसमाचार की शिक्षा देती हैं।।

एक कलीसिया को अन्य कलीसियाओं से लड़कर अपनी पहचान स्थापित नहीं करनी चाहिए। पहले स्वयं को सुसमाचार के साथ स्थापित करना चाहिए, फिर सदस्यों के प्रतिबद्ध समूह की संगति का निर्माण करना चाहिए।

► किस आधार पर एक कलीसिया को दूसरी कलीसिया को वास्तव में सही मायने में मसीही के रूप में स्वीकार करना चाहिए?

उदाहरण 6

यहां तक कि एक सच्चे सिद्धांत पर इस हद तक जोर दिया जा सकता है कि यह अन्य सत्य का खंडन करता प्रतीत होता है। अनुग्रह पर ज़ोर देते हुए, एक कलीसिया परेमश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की आवश्यकता को कम कर सकती है। लेकिन उद्धार पाने के क्षण पर जोर देते हुए, एक कलीसिया का शिष्य बनाने की प्रक्रिया को भूल सकती है। धर्म त्यागी के लिए परेमश्वर की विश्वसनीयता पर बल देने के द्वारा, कलीसिया धर्मत्यागी के संकट के खिलाफ़ चेतावनी देने में असफल हो सकती है। आत्मिक वरदानों का सम्मान करते हुए, कलीसिया गहरी आत्मिकता और मसीही चरित्र का सम्मान करने में असफल हो सकती है।

सिद्धांत में असंतुलन समय के साथ दिखता है और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। कोई भी शिक्षा जो कि (1) पाप के प्रति लापरवाही का कारण बनती है, (2) उद्धार के आश्वासन की संभावना को दूर करता है, (3) उस व्यक्ति के मार्ग में अधिक कठिनाइयाँ डालती है जो कि सुसमाचार का प्रतिउत्तर देता है, या (4) सुसमाचार को छुपाता है, यही शिक्षा है जो सिद्धांत को असंतुलित करती है।

ऐतिहासिक जागृतियां और सुधार

कलीसिया के इतिहास में कई बार सुसमाचार को महान संस्थानों द्वारा भुला दिया गया लगता है। संस्थागतवाद, समन्वयता और सैद्धान्तिक असंतुलन जैसी त्रुटियाँ, सुसमाचार की तुलना में अधिक दिखाई देने लगी। अगुवों को आत्मिक उदाहरण माना जाता था, लेकिन वे गलत मकसद, गलत चरित्र, और सांसारिक चीजों में रुचि प्रदर्शित कर रहे थे।

परमेश्वर ने कभी-कभी कलीसिया में महान जागृति को भेजा है। जागृति के साथ दीर्घकालिक और व्यापक परिणामों के तीन पहलू हैं।

1. वहाँ धर्मशास्त्रीय सुधार है, जब एक उपेक्षित आत्मिक सत्य को पुनः प्राप्त किया जाता है।
2. वहाँ आत्मिक नवीनीकरण है, साथ ही बहुत प्रार्थना, उत्साहपूर्ण आराधना, और कई सारी आत्माओं का बचना होता है।
3. वहाँ सेवकाई की नयी विधियाँ हैं, जैसे कि कलीसिया सुसमाचार बांटने और शिष्य बनाने के नए तरीके खोजती है।

प्रोटेस्टेंट सुधार (1500 के दशक में पूरे यूरोप में) केवल अनुग्रह द्वारा सिर्फ विश्वास से उद्धार के सुसमाचार की प्राप्ति थी। हजारों लोगों ने उद्धार का अनुभव किया। वचन को आम भाषाओं में अनुवाद किया गया और उपलब्ध कराया गया।

एनाबैप्टिस्ट (1500 और बाद में पूरे यूरोप में) ऐसे लोग थे जो चिंतित थे क्योंकि सुधार के कई अनुयायियों ने सोचा था कि सही सिद्धांतों पर विश्वास करना उद्धार के लिए पर्याप्त था। बहुत से लोगों ने सुसमाचार की सच्चाई को स्वीकार करने के लिए हामी तो भर दी, लेकिन परिवर्तन का अनुभव नहीं किया। एनाबैप्टिस्टस ने व्यक्तिगत परिवर्तन पर जोर दिया।

पीटिस्ट (जर्मनी में 1600 के दशक के उत्तरार्ध) वे लोग थे जिन्हें शिष्यत्व के महत्व का एहसास था। उन्होंने मसीही परिपक्वता के लिए उन्होंने मसीही परिपक्वता के लिए छोटा झुण्ड सेवकाई और विश्वासियों को प्रशिक्षित करने की व्यवस्था को विकसित किया।

मेथोडिस्ट जागृति (इंग्लैंड में 1700 के अंत में) जॉन वेस्ले की सेवकाई के साथ शुरू हुई। इंग्लैंड की कलीसिया के अधिकांश याजकों ने इनकार कर दिया कि उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन संभव था। वेस्ले ने उपदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति यह जान सकता है कि उसे मसीह में जीवित विश्वास और पवित्र आत्मा से उद्धार का आश्वासन है।

► आपको कौन से महान सत्य को अपने समाज में जोर देने की आवश्यकता है?

निष्कर्ष

कई मसीही संस्थान, बड़े और छोटे (स्थानीय कलीसिया सहित), सुसमाचार की प्राथमिकता के लिए प्रतिबद्धता के साथ शुरू हुए। लेकिन समय के साथ, उनमें से कई उस प्राथमिकता से अलग हो जाते हैं।

कलीसिया की प्रभावशीलता को नए ढ़ंग से करने के लिए, हमें अजीब नए सिद्धांतों या नए प्रकाशन की आवश्यकता नहीं है। हमें जो कुछ चाहिए वह सुसमाचार की प्राथमिकता के सुसमाचार प्रचारवाले सिद्धान्त की प्राप्ति है।

पाठ 5 कार्यभार

आप अगली कक्षा की शुरुआत पाठ 5 की परीक्षा के साथ करेंगे। तैयारी में परीक्षा के प्रश्नों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

परीक्षा पाठ 5

(1) सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया की तीन विशेषताएँ क्या हैं?

(2) वे कौन से छह तरीके हैं जिनसे एक कलीसिया सुसमाचार की प्राथमिकता खो सकती है?

(3) चार संकेत क्या हैं कि सिद्धांत असंतुलित हैं?

(4) दीर्घकालिक उन्नत्ति के तीन पहलू क्या हैं?

(5) निम्नलिखित में से प्रत्येक के बारे में एक सही कथन लिखें:

- प्रोटेस्टेंट सुधार ...
- एनाबैप्टिस्टस ...
- पीटिस्ट्स...
- मेथोडिस्ट जागृति...

पाठ 6
पवित्र आत्मा का कार्य

कक्षा के अगुए के लिए सूचना

पिछले पाठ के अंत में प्रदान किया गया परीक्षा दें। छात्रों को किसी भी सामग्री को देखने या एक-दूसरे से बात किए बिना याद करके उत्तर लिखना है।

पवित्र आत्मा पर निर्भरता

जब हम सेवकाई का प्रशिक्षण प्राप्त करने और विधियों को सीखने का पूरा प्रयास करते हैं, तो एक खतरा है कि हम सेवकाई के लिए मानवीय क्षमताओं पर निर्भर होंगे। परंतु जैसा कि प्रेरित पौलुस ने कहा था, “यह नहीं, कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है।।” (2 कुरिन्थियों 3:5)।

पौलुस ने कहा कि वह मानव ज्ञान के साथ या मानव प्रतीतीकरण के आधार पर उपदेश नहीं देता है; परन्तु वह पवित्र आत्मा के सामर्थ और प्रमाण पर निर्भर था ताकि सुनने वालों का विश्वास मानव ज्ञान पर ना होकर, परमेश्वर पर आधारित हो (1 कुरिन्थियों 2:4-5)। पौलुस शिक्षित था परंतु आत्मिक परिणाम के लिए उसे अपने ज्ञान और कौशल से अपेक्षा नहीं थी।

थिस्सलुनीकियों को लिखते हुए पौलुस ने कहा “क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है” (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)। और वे लोग पाप बोधित हुए सुसमाचार के द्वारा, परमेश्वर के सामर्थ के कारण।

यीशु ने प्रेरितों से प्रतिज्ञा किया कि पवित्र आत्मा पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय मे संसार को दोषी ठहराएगा (यूहन्ना 16:8)। यीशु ने कहा कि कोई भी उसके पास नहीं आ सकता, जब तक कि पिता उन्हें आकर्षित ना करें (यूहन्ना 6:44)।

पवित्र आत्मा के कार्य के कुछ पहलू

- वह पापी को दोषी ठहराता है (यूहन्ना 16:8)।
- वह पाप में मृत व्यक्ति को आत्मिक जीवन देता है (यूहन्ना 3:5, इफिसियों 2:1)।

- वह परिवर्तित संत का संरक्षण करता है (इफिसियों 1:13, इफिसियों 4:30)।
- वह संरक्षित संत को नियुक्ति करता है (प्रेरितों के काम 13:2, 4)।
- वह नियुक्त किए गए संत को सशक्त बनाता है। (प्रेरितों के काम 1:8)।
- वह सशक्त सन्त को सिखाता है (यूहन्ना 14:26, यूहन्ना 16:13; 1 यूहन्ना 2:27)।
- वह सीखे हुए संत की अगुवाई करता है (गलातियों 5:25)।
- वह उस संत के शरीर के कामों को वश मे करता है जो उसकी अगुआई में है और उसे धार्मिकता में स्थापित करता है (रोमियों 8:13) ।

► पवित्र आत्मा पर निर्भरता हमारे सुसमाचार प्रचार के नजरिए को कैसे मार्गदर्शित करता है? हम पवित्र आत्मा पर निर्भर होने के कारण क्या अलग करते हैं?

प्रशिक्षण का मूल्य

► हमें प्रशिक्षण और सुसमाचार प्रचार की विधियों के बारे में क्या सोचना चाहिए?

हमें परमेश्वर के सत्य का संचार करने के लिए बुलाया गया है। हमें बहुत अच्छी तरह से संवाद करना चाहिए ताकि हमें समझा जा सकें।

हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि, क्योंकि हम पवित्र आत्मा पर निर्भर हैं हमें प्रशिक्षण के द्वारा अपनी क्षमताओं का विकास नहीं करना है।

पौलुस ने कहा कि उन्होंने लोगों को मनाने की कोशिश की (2 कुरिन्थियों 5:11)। उसने तीमुथियुस से कहा कि वह परमेश्वर के सत्य को (2 तीमुथियुस 2:15) सही ढंग से संवाद करने में सक्षम होने के लिए अध्ययन करें। बिशप की योग्यताओ में से एक है कि, वह सिखाने की क्षमता रखता है। (2 तीमुथियुस 2:24)।

अप्पुलोस एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में अत्यधिक प्रभावी था। उसे बोलने में निपुण, पवित्र शास्त्र में सामर्थी, और आत्मा में जोशीला बताया गया है (प्रेरितों के काम 18:25-26) उसकी स्वाभाविक क्षमताओं ने, आत्मिक वरदानो के साथ उसे महान आशीष बना दिया।

प्रेरित पतरस हमें बताता है कि सुसमाचार की आशा को समझाने के लिए हमेशा तैयार रहें (1 पतरस 3:15)।

परमेश्वर के वचन हमें बताते हैं कि यदि हम परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए समर्पित हैं तो वह स्वाभाविक क्षमताओं और प्रशिक्षण को आशीष देकर उपयोग करेंगे।

.पवित्र आत्मा का भरना

प्रेरितों के काम 1:4-5 में, यीशु ने चेलों से कहा कि वे पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की प्रतीक्षा करें, जिसे उन्होंने "पिता का वादा" कहा। इस घटना में शक्ति का एक समर्थन शामिल होगा जो उन्हें दुनिया भर में गवाह बनाएगा (प्रेरितों के काम 1:8)।

हालांकि शिष्यों का उद्धार हो गया था, उनकी एक आन्तरिक आवश्यकता थी जिसे यीशु के शारीरिक रूप से दिखाई देने वाली अगुवाई के बिना सेवकाई के लिए तैयार होने से पहले पूरा किया जाना था। यहाँ तक कि सबसे महान शिक्षक द्वारा तीन साल का प्रशिक्षण भी उन्हे पूरी तरह से तैयार नहीं कर पाया, इसलिए आंतरिक समस्या बनी हुई थी। इससे पहले कि उनकी सेवाकाई पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त और मार्गदर्शित हो पाती, जैसा कि परमेश्वर ने योजना बनाई थी, उन्हे आवश्यकता थी उनके हृदय मे एक विशिष्ट आवश्यकता की जिसे पवित्र आत्मा के खाश कार्य के द्वारा पूरा होना था।

> शक्तिशाली उपक्रम जो गुरु उनके हाथो में सौपने पर था, वह मनुष्य कि शक्ति से परे था। इसलिए उसने उनके लिए पवित्र आत्मा के अनंत संसाधन उपलब्ध कराए। उसे दुनिया को पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे आश्वस्त करना था; और इसीलिए, उसने उनके साथ रह कर उनकी सेवकाई मे जबरदस्त सामर्थ और आश्चर्यजनक परिणाम दिए।
> (ए. बी. सिम्पसन, मिशनरी सन्देश)

इस समस्या ने तीन साल के प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न अवसरों पर खुद को दिखाया था। वे कभी-कभी स्वाभाव में प्रतिशोधी होते थे, जबकि वे उन लोगों पर आग गिरा देना चाहते थे जिन्होंने उनका तिरस्कार किया था (लुका 9:54-55)। वे कभी-कभी गर्व से सांप्रदायिक होते थे, जब वे एक आदमी को मंत्री बनाने के लिए मना करते थे जो उनके द्वारा अधिकृत नहीं था (मार्क 9:38)। वे स्वार्थी और गर्व से महत्वाकांक्षी थे, जैसे कि जब दो जनो ने ऊँचा पद माँगा तो वे दुसरों द्वारा ना पसंद किये गए (मरकुस 10:35-41)

उन्होंने तर्क दिया कि उनमें से कौन सबसे महान था (मरकुस 9:33-34)। सच तो यह है कि वह यीशु मसीह के पूछने पर कि वह क्या बात कर रहे हैं, शर्मिंदा हो गये, इस बात को दर्शाता है कि वे जागरूक थे कि उनका उद्देश्य और बेहतर होना चाहिए था।

उनके आखरी सामूहिक भोजन में, यीशु ने शिष्यों के पैर धोए, और उनसे कहा कि वे सेवकपन का ऐसा ही रवैया रखें जो उसने प्रदर्शित किया है (यूहन्ना 13:14)। उनके पास इस तरह की विनम्रता नहीं थी;

उन्होंने उसी शाम एक दूसरे की सेवा करने से मना कर दिया था। समस्या ज्ञान की कमी नहीं थी, बल्कि घमंड था।

यीशु ने उनसे कहा कि उनके बीच में ऐसा घनिष्ट प्यार होना चाहिए कि वे एक दूसरे के लिए अपना जीवन देने को तैयार रह सकें (यूहन्ना 15:12-13)। उन्हें लगा कि उनके पास यह प्यार है, लेकिन नहीं; क्योंकि वे यीशु की गिरफ़्तारी पर भाग गए थे, जब कि उन्होंने दावा किया था कि वे उसके साथ मृत्यु का सामना करेंगे (मार्क 14:31, 50)।

ये वे लोग थे जिन पर मसीह की शारीरिक उपस्थिति के बिना कलीसिया की अगुवाई करने और उसका विस्तार करने की ज़िम्मेदारी थी। यीशु को पता था कि वे इस सेवकाई के लिए तैयार नहीं थे, जब तक कि उनकी आंतरिक आवश्यकता पूरी नहीं हो जाती, इसलिए उन्होंने उनसे कहा कि वे यरूशलेम में तब तक प्रतीक्षा करें जब तक वे पिता कि प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं कर लेते। (प्रेरितों 1:4-5)। इस प्रतिज्ञा की पहचान पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के साथ होती है। यह इतना आवश्यक था कि उन्हें इसके बिना कलीसिया की स्थापना और बढ़ोतरी के लिए आगे नहीं बढ़ सकते थे।

उसने उन्हे जो नहीं बताया वह यह कि उन्हे और प्रशिक्षण की आवश्यकता है, और ना यह बताया कि बढ़ोतरी एक लंबी प्रक्रिया है। उन्हें यरूशलेम में आध्यात्मिक संकट / चरमबिन्दु के घटने की प्रतीक्षा करनी थी।

पिन्तेकुस्त के दिन शिष्यों के अनुभव को पवित्र आत्मा के भरने के रूप में वर्णित किया गया है (प्रेरितों के काम 2:4)। हालाँकि, उस घटना में कई बातें हुईं, लेकिन बाद में पतरस ने संकेत दिया कि आत्मा का प्रमुख कार्य यह था कि उसने उनके हृदयों को शुद्ध किया था (प्रेरितों 15:8-9)। यह शिष्यों की आवश्यकता थी। उनकी आंतरिक आवश्यकताओं के सभी प्रमाणों ने उनके हृदय की समस्या की ओर इशारा किया, जो विरासत में मिली भ्रष्टता थी, जिससे उन्हें शुद्ध होने की आवश्यकता थी। जब यह शुद्धिकरण पवित्र आत्मा के बपतिस्मे (या भरने) के द्वारा हुआ, तो उन्होंने अपनी खुद की सुरक्षा या पदोन्नति को मुख्य लक्ष्य मानना छोड़ दिया था।

> वे परमेश्वर कि शक्ति के आधार पर और परमेश्वर कि महिमा के लिए कम करने वाले परमेश्वर कि बुलाहट का अनुसरण करने वाले एक शक्तिशाली गवाहों का एकजुट और अभिषिक्त दल बन गए ।

पिन्तेकुस् के दिन की घटना ने कलीसीया के सामर्थी सुसमाचार प्रचार के युग का लोकार्पण किया। कलीसिया सिद्धान्तों में

असहमति, यहूदीवादी विधर्म, आंतरिक शिकायतें, ढ़ोंगियों, शैतानी प्रतिरोध, उत्पीड़न और कष्टों के बावजूद कलीसिया आनन्दपूर्वक और विजयी भाव से बढ़ती गयी।

.विश्वासी के पास वही आवश्यकता हो सकती है जो शिष्यों के पास थी। इस आवश्यकता को पवित्र आत्मा के भरे जाने से पूरा किया जा सकता है।

यह कहने की बात नहीं है:

1. उस विश्वासी के पास तब तक पवित्र आत्मा नहीं है जब तक कि वह इस विशेष भराई को प्राप्त नहीं करता है।
2. जब तक यह भराई नहीं होती तब तक विश्वासी में पवित्र आत्मा का कोई भी कार्य नहीं होता है।
3. आत्मा के भरने के अलावा और कोई उपाय नहीं है जो ह्रदय को साफ करता हो।
4. आत्मा से भरे हुए प्रत्येक व्यक्ति के पास एक प्रेरिताई कि सेवकाई होगी।

हमें यह नहीं मानना चाहिए कि हमारा अनुभव बिल्कुल शिष्यों के अनुभव जैसा होगा। फिर भी, सेवकाई के लिए हृदय की सफाई और सशक्तिकरण की आवश्यकता अभी भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

शिष्यों के उदाहरण से हम देख सकते हैं:

1. कि अगर किसी व्यक्ति को इसकी आवश्यकता है, तो वह सेवकाई या पवित्र जीवन जीने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं है।
2. कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को इस हालात मे नहीं छोड़ना चाहता है।
3. यह समाधान प्रशिक्षण या दीर्घकालिक आध्यात्मिक बढ़ोतरी नहीं है।
4. यह संभव है कि उचित खोज के बाद एक पल में इसे पूरा किया जा सके।

एक विश्वासी पवित्र आत्मा के इस कार्य को कैसे प्राप्त कर सकता है?

पतरस ने कहा कि यह विश्वास द्वारा प्राप्त किया गया था (प्रेरितों के काम 15:8-9)। यीशु ने चेलों को वादा देकर और उम्मीद पैदा करके विश्वास रखने के लिए तैयार किया।

इसलिए, यदि कोई व्यक्ति अपनी आवश्यकता को देखता है और उसे पूरा करने में परमेश्वर की इच्छा देखता है, तो वह विश्वास के द्वारा यह अनुग्रह प्राप्त कर सकता है।

.पाठ 6 कार्यभार

प्रत्येक छात्र को प्रार्थना में खुद को जांचना चाहिए और लिखित में इन सवालों के जवाब देने हैं। इस पेपर को कक्षा के अगुए को देने की आवश्यकता नहीं है

- क्या मैं पवित्र आत्मा पर निर्भर हूं, या क्या मैं केवल वही करता हूँ जो मेरी क्षमताएं अनुमति देती है?
- क्या मेरे पास कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिनसे पता चलता है कि चेलों को पवित्र आत्मा से भरने की ज़रूरत थी?
- क्या ऐसे कार्य, आदतें, दृष्टिकोण या लक्ष्य हैं जिन्हें मैंने परमेश्वर के सामने समर्पण नहीं किया?
- क्या मैं इच्छुक हूँ कि पवित्र आत्मा मुझे पूरी तरह से शुद्ध करे, ताकि मुझे परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल किया जा सके?

पाठ 7

प्रार्थना और उपवास

परिचय

> कलीसिया को आज अधिक या बेहतर उपकरणों, नए संगठन या अधिक उपन्यास विधियों की जरूरत नहीं है, परन्तु उन लोगो की आवश्यकता है जिन्हें पवित्र आत्मा उपयोग कर सकता है - प्रार्थना के मनुष्य, प्रार्थना में पराक्रमी मनुष्य। पवित्र आत्मा तरीकों से नहीं, पर व्यक्ति के द्वारा बहते है। वह उपकरण पर नहीं, बल्कि व्यक्तियों पर उतरते है। का नहीं परन्तु प्रार्थना के मनुष्य का अभिषेक करता है।[2]

► उपरोक्त कथन से ई. एम. बाउंड्स किन त्रुटियों को ठीक करने का प्रयास कर रहे थे?

प्रार्थना का कार्य परमेश्वर पर निर्भरता का बयान करता है। जो व्यक्ति अपने कार्य में बहुत व्यस्त होता है वह सोचता है कि उसका कार्य परमेश्वर के कार्य से जो उसके प्रार्थना के प्रति उत्तर में करता है ज्यादा महत्वपूर्ण है।

क्योंकि हम पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते है, प्रार्थना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। पौलुस ने लोगों से सुसमाचार के प्रसार के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा (2 थिस्सलुनीकियों 3:1, कुलुस्सियों 4:3, इफ़िसियों 6:19)।

प्रार्थना क्यों महत्वपूर्ण है?

► हम जानते हैं कि विश्वासीयों के लिए प्रार्थना महत्वपूर्ण है। ऐसे कौन से कारण हैं जो एक ऐसे व्यक्ति के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो एक प्रचारक है?

सुसमाचार प्रचारक के लिए प्रार्थना महत्वपूर्ण है:

---

[2] E. M. Bounds (ई. एम. बाउंड्स), *Power through Prayer (प्रार्थना के माध्यम से शक्ति)* 13 जनवरी, 2023 को https://ccel.org/ccel/bounds/power/power.I_1.html से ली गयी है।

> यदि आपको आत्माओं को जीतने से अधिक ज्ञान बढ़ाने का मन है तो रुक जाएं और तब तक प्रार्थना करें जब तक आपकी आत्माओं को जीतने की इच्छा ज्ञान हांसिल करने की इच्छा से अधिक ना हो जाये।
> (विलियम स्मिथ, यूनियन बाइबल कॉलेज के संस्थापक)।

1. **सुसमाचार** प्रचारक को **आत्मिक रूप से जीवित होना चाहिए**। प्रार्थना प्राण का श्वास है। सुसमाचार प्रचारक दूसरों को परमेश्वर के साथ रिश्ते में जोड़ता है जिसे वह पहले ही अनुभव कर रहा होता है।
2. **परमेश्वर के साथ प्रार्थना में समय बिताए बिना प्रचारक सेवकाई के लिए सही जुनून को बनाए नहीं रख सकते**। प्रार्थना के बिना, प्रचार करने की कोशिश करने वाले व्यक्ति में गलत प्रेरणाएं होंगी (शायद व्यक्तिगत सफलता को तलाशना या बहस का लुत्फ़ उठाना)।
3. **सुसमाचार** प्रचारक को **पापी को** कायल करने और बचने **की इच्छा देने के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर होना चाहिए**। सुसमाचार प्रचार अकेले मनुष्य प्रयास नहीं है। सुसमाचार प्रचारक पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर निर्भर करता है। केवल मानवीय तर्क एक पापी को अपने अपराध स्वीकार करने और परमेश्वर को खोजने की इच्छा प्रेरित नहीं कर सकता (यूहन्ना 16:8; यूहन्ना 6:24)।
4. **सुसमाचार** प्रचारक परमेश्वर **पर निर्भर रहता है कि** वचनों के उसके उपयोग का अभिषेक करे (रोमियों **1:16,** यशायाह **55:11)**।
5. **सुसमाचार** प्रचारक को **अपने सेवकाइ में परमेश्वर के** मार्गदर्शन **की आवश्यकता है (प्रेरितों 11:12)**।

प्रार्थना का अभ्यास

एक व्यक्तिगत प्रार्थना का जीवन

प्रत्येक मसीही को दैनिक प्रार्थना में विश्वासयोग्य होना चाहिए, और उस व्यक्ति के लिए तो और भी अधिक महत्वपूर्ण है जो सुसमाचार प्रचार में प्रभावशाली होना चाहता है।

उसके पास हर दिन एक विशेष समय होना चाहिए जो कि वह परमेश्वर के साथ अकेले में बिताए। यदि संभव हो, तो वह एक व्यक्तिगत स्थान पर हो। उसे जल्दी उठने की आवश्यकता है, ताकि वह दिन की व्यस्तता से पहले बिना विचलित हुए प्रार्थना कर सके। यदि उसके लिए सुबह में विशेष प्रार्थना के लिए समय निकालना मुश्किल है, तो उसे दिन की शुरूआत में कुछ मिनटों के लिए परमेश्वर से बात करने के लिए समय निकालना चाहिए।

अच्छा होगा कि वह रोज़ाना कुछ वचन पढ़े और उनका मनन करे, उसके जीवन मे इसकी सच्चाई को पूरा होने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता रहे।

एक प्रार्थना सूची

जिन विषयों के बारे में हमें प्रार्थना करनी है, उन विषयों की एक सूची बना लेना समझदारी होगी। अन्यथा, हो सकता है कि हम कुछ महत्वपूर्ण बातों को याद ना रख सकें। हमें विश्व-व्यापी प्रसार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, विशेषकर उन देशों में जहाँ मसीहियों को सताया जाता है। हमें अपने देश में सुसमाचार की सफलता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा अपनी स्थानीय कलीसिया हमारे समुदाय के लिए परमेश्वर के मिशन को पूरा करे। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें व्यक्तिगत रीति से सुसमाचार को प्रभावी रूप से साझा करने में मदद करें।

> जिन व्यक्तिों के कंधों पर जगत के मसीहकरण की प्रारंभिक जिम्मेदारी थी, वे एक सर्वोच्च अनुरोध के साथ यीशु के पास आए। उन्होंने यह नहीं कहा, ''प्रभु, हमें प्रचार करना सिखा,'' ''प्रभु हमें चमत्कार करना सिखा,'' या ''प्रभु हमें बुद्धिमान होना सिखा'' लेकिन उन्होंनें कहा, ''प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखा''
> (बिली ग्राहम)।

कई बार एक सूची एक व्यक्ति को प्रार्थना करने में मदद करती है जब उसे ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती हैं।

हर बार जब आप प्रार्थना करते हैं तो प्रार्थना सूची का उपयोग करना आवश्यक नहीं होता हैं। कभी-कभी आप कुछ विषयों के बारे में प्रार्थना करने की आवश्यकता महसूस करते हैं, और आप उन्हें सूची के बिना याद कर सकते है।

► प्रार्थना सूची में और क्या बातें होनी चाहिए?

प्रार्थना के लिए नामों की सूची

उन दस लोगों की सूची बनाएं जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से जानते है जिन्हें उद्धार की आवश्यकता हैं। ऐसे लोगों की सूची जिनके साथ आप अक्सर संपर्क में रहते है। हर दिन उनके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रतिबद्ध रहें। यदि परमेश्वर ने एक अवसर खोला है तो उनसे बातचीत करें; अगर उनके पास बोलने का कोई अवसर नहीं है, तो प्रार्थना करना जारी रखें। दूसरों की गवाही के अनुसार जिन्होंने ऐसा किया है, यदि आप ऐसा करते हैं, तो एक साल बीतने से पहले उन लोगों में से कुछ को बचा लिया जाएगा।

प्रार्थना के साथी

एक मसीही के लिए नियमित रूप से प्रार्थना करने के लिए एक मित्र होना अच्छा है। उन्हें जरूरतों और जीत को एक साथ साझा करना चाहिए। वे हर हफ्ते, या अधिक बार मिल सकते हैं।

पति और पत्नी भी इस तरह से प्रार्थना कर सकते हैं; लेकिन यह अच्छा है अगर पति के पास प्रार्थना करने के लिए एक पुरूष हो, और पत्नी के पास प्रार्थना के साथी के रूप में एक महिला हो।

► कक्षा के सदस्यों के पास पहले से ही प्रार्थना भागीदारों को लेकर क्या अनुभव हैं?

प्रार्थना टहल

प्रार्थना टहल इसलिए की जा सकती है क्योंकि एक सेवकाई पड़ोसियों के लिए एक ज़िम्मेदारी और भार को महसूस करती है। एक समूह या व्यक्ति उस क्षेत्र से टहलता हुए वहाँ की आवश्यकता के लिए प्रार्थना करता है। प्रार्थना मौन हो सकती है। वे उन लोगों से बात कर सकते है जिनसे वे मिलते हैं, लेकिन टहलने का प्राथमिक उद्देश्य प्रार्थना है। एक क्षेत्र में सेवकाइ की शुरूआत में या बाद में प्रार्थना टहल की जा सकती है।

प्रार्थना केंद्र

कुछ कलीसियाओं ने एक सार्वजनिक स्थान पर अस्थायी प्रार्थना केंद्र स्थापित किये होते हैं जहाँ से कई लोग गुज़रते हैं। उन्होंने लिखा होता है ''प्रार्थना केद्र'', और जो लोग गुजर रहें होते हैं उनके साथ प्रार्थना करने की पेशकश करते हैं। वे पूछते हैं, ''क्या आपको एक ऐसी जरूरत है जो आप चाहते हैं जिसके विषय मैं प्रार्थना करू ?'' वे जरूरतों के लिए चिंता व्यक्त करते हैं और बहस नहीं करते हैं। ज्यादातर उनके पास सुसमाचार बताने के अवसर होते है।

► आपके क्षेत्र में प्रार्थना केंद्र के लिए एक अच्छी जगह क्या हो सकती है?

पवित्रशास्त्रीय प्रार्थना

यीशु और प्रेरितों द्वारा की गई प्रार्थनाएं हमें उन बातों को दिखती है जिन्हें हमें प्रार्थना में रखना चाहिए, क्योंकि हम जानते हैं कि उन्होंने परमेश्वर की इच्छा अनुसार प्रार्थना की थी। यहाँ तीन उदाहरण हैंः

प्रभु की प्रार्थनाः मत्ती 6:9-13 में, यीशु ने अपने शिष्यों के लिए एक आदर्श प्रार्थना दी। हमें इन शब्दों की प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन प्रायः हमें इन प्राथमिकताओं के साथ भी प्रार्थना करनी चाहिए।

इफिसियों के लिए पौलुस की प्रार्थनाः इफिसियों 3:14-19 में, पौलुस ने विश्वासियों की आत्मिक स्थापना के लिए प्रार्थना की। हमें खुद के लिए और दूसरों के लिए भी यही प्रार्थना करनी चाहिए।

कटाई की प्रार्थनाः मत्ती 9:36-38 में, यीशु चाहते थे कि उनके शिष्य पापियों के लिए अपनी करूणा साझा करें और प्रार्थना करें कि परमेश्वर आत्मिक खेत में मजदूरों को भेज दें।

उपवास का अभ्यास

उपवास भौतिक और लौकिक से दूर, आध्यात्मिक और शाश्वत पर हमारा ध्यान केंद्रित करने का एक साधन है। यह दर्शाता है कि भौतिक और लौकिक चीजों की तुलना में आध्यात्मिक और शाश्वत चीजें हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह हमारे विश्वास को मजबूत करने का एक साधन है।

► परमेश्वर से चापलूसी करके कुछ करवाने के लिए खुद को भूखा रखने वाले व्यक्ति से उपवास रखना कैसे भिन्न है ?

उपवास के लिए पवित्र शास्त्र के उदाहरण

यह उस समय के पवित्रशास्त्र में दर्ज उदाहरण हैं जब कोई व्यक्ति अपने जीवन में परमेश्वर के हस्तक्षेप के बारे में इतना गंभीर था कि उसने उपवास किया। ये उदाहरण पवित्रशास्त्र में कई संदर्भों में से केवल इसलिए चुने गए हैं कि बाइबल आमतौर पर उपवास के अनुकूल बोलती है। वचनों मे, अकसर इस बात को यह स्पष्ट करने के लिए लिखा गया है कि क्यों परमेश्वर ने दखल दिया।

► एक छात्र उपवास के विषय में नीचे दिये गए वचनों में से एक वचन को पढ़े और कक्षा उस स्थिति पर चर्चा करे जो इस भाग में वर्णित की गयी है।

वचन	उपवास और प्रार्थना के परिणाम
2 इतिहास 20	एक राष्ट्रीय उपवास युद्ध मे विजय लाया।
एज्रा 8:21	एज्रा ने खतरे से बचने के लिए उपवास रखा और प्रार्थना की।
एस्तेर 4:16	यहूदियों ने नियोजित नरसंहार में परमेश्वर के हस्तक्षेप के लिए उपवास किया।
योना 3:5-9	निनवे ने परमेश्वर की दया के लिए उपवास किया।
न्यायियों 20:26	युद्ध में परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने के लिए इज़राएल ने उपवास किया।
1 शमूएल 7:6	इज़राएल ने क्षमा और छुटकारे के लिए उपवास किया।
नहेम्याह 1:4	नहेम्याह ने परमेश्वर से शहर के पुननिर्माण के लिए उपवास किया।
दानिय्येल 9:3	दानिय्येल ने इज़राएल के कैद से छुटकारे के लिए उपवास किया।
योएल 2:12	पश्चाताप के साथ चलने और न्याय को टालने के लिए उपवास किया गया।
मत्ती 4:2	यीशु ने अपने पृथ्वी पर की सेवकाइ के लिए 40 दिन का उपवास किया।
लूक 2:37	हन्ना एक भविष्यवक्ता थी जिसने अपना समय उपवास और प्रार्थना करने में बिताया।
प्रेरितों 10:30	कुरनेलियुस जब उपवास कर रहा था तब उसे परमेश्वर का संदेश मिला।
प्रेरितों 13:2-3	उपवास करते समय, परमेश्वर ने कलिसिया को सेवकों को भेजने के लिए कहा था।
प्रेरितों 27:21	संकट के समय में पौलुस ने उपवास और प्रार्थना की।

.यीशु के निर्देश

यीशु ने कहा कि जब वे शारीरिक रूप से उनके साथ नहीं रहेंगे, तब शिष्य उपवास करें। (मत्ती 9:15, लूका 5:33-35) उन्होंने उपवास के लिए उचित दृष्टिकोण के बारे में उन्हें निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि उपवास अन्य लोगों को दिखाने के लिए एक प्रदर्शन नहीं है।

जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो। ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा॥ (मत्ती 6:16-18)

उपवास का ऐतिहासिक उदाहरण

आरंभिक कलीसिया के कुछ विश्वासियों ने वार्षिक उपवास के दिनों को निर्धारित करने के अलावा प्रत्येंक बुधवार और शुक्रवार को एक समय का भोजन नहीं किया। मार्टीन लूथर, जॉन कैल्विन, जॉन नॉक्स, जोनाथन एडवर्ड्स, चार्ल्स फिन्नी, और डी.एल.मूडी सभी ने बहुत उपवास किये। जॉन वेस्ले और शुरूआती मेथोडिस्ट उपवास के लिए जाने जाते थे। उपवास और प्रार्थना के साथ चिरस्थायी महत्व हर जागृति शुरू हो गयी।

► आप उन लोगों के विषय में क्या जानते हैं, जिन्होंने उपवास से अच्छे परिणाम देखे हैं ?

आधुनिक कलिसिया की कमज़ोरी

यीशु ने शिष्यों से कहा कि वे अपने अविश्वास के चलते एक दुष्टात्मा से पीडित की मदद करने में असफल रहे। तब उसने कहा, ‘‘उस ने उन से कहा, कि यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती” (मरकुस 9:29)। उन्होंने कहा कि प्रार्थना और उपवास विश्वास प्राप्त करने के साधन हैं; और, इसलिए अविश्वास का इलाज है। उनका यह मतलब नही था कि शिष्यों को उपवास त Mark 9:29) भी शुरू करना चाहिए जब संकट पैदा हो; उनका मतलब था कि नियमित प्रार्थना और उपवास उनके जीवन का एक हिस्सा होना चाहिए, ताकि उनके पास संकटों का सामना करने के लिए आवश्यक विश्वास हो।

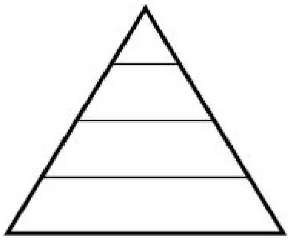

यीशु के वचनों और उपवास के वचन और ऐतिहासिक उदाहरणों की संख्या से, हम उन आशीषों को आरेखित कर सकते हैं, जो कई स्तरों में विभाजित पिरामिड की तस्वीर के साथ उपलब्ध हैं। निचले स्तर के आशीषों को विश्वास के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिस तक हम अकेले प्रार्थना से पहुँचते है। आशीषों का उच्च स्तर केवल उस विश्वास से प्राप्त होगा जो एक साथ प्रार्थना और उपवास के माध्यम से प्राप्त होता है।

उपवास उचित रीति से कैसे करे

- प्रार्थना और उपवास को साथ में करें ताकि उपवास केवल एक बाहरी क्रिया ना प्रतीत हो, बल्कि आत्मिकता का नवीनीकरण और आपके विश्वास का विस्तार हो।
- अभिमान के लिए नहीं पर परमेश्वर की महिमा के लिए उपवास करें।
- जैसा कि आप प्रार्थना और उपवास करते है, आपके अनुरोध के विषय में परमेश्वर की इच्छा को ढूंढे /खोजे।
- उपवास को आज्ञाकारिता से ना बदलें।
- अपने शरीर को नुकसान न पहुंचाएं।

► कक्षा प्रार्थना और उपवास की एक गतिविधि को साथ मे करने के लिए चर्चा करें।

सुरक्षित उपवास

उपवास अगर ठीक रीति से किया जाए तो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है। वास्तव में, नियमित उपवास करते रहने से स्वास्थ्य को कई लाभ पहुँचते हैं।

- उपवास के दौरान पानी पिये। बगैर पानी का उपवास न करें।
- एक दिन के उपवास से शुरू करें। धीरे-धीरे इसकी अवधि बढ़ाएं। एक दिन या उससे अधिक के उपवास के बीच सामान्य आहार का एक सप्ताह रखें।

जी मचलना या सिरदर्द उन लोगों के लिए आम है जो उपवास के आदि नहीं हैं। यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति नियमित रूप से उपवास करता है, तो आमतौर पर पहले कुछ समय के बाद वे लक्षण नहीं दिखेंगे। मुंह में खराब स्वाद और सांसों में बदबू इसलिए आती है क्योंकि शरीर जहरीले कचरे से छुटकारा पा रहा है।

लंबे समय तक उपवास करने पर, कई असहज लक्षण कुछ दिनों के बाद बंद हो जाते हैं।

- लंबा उपवास फलों के रस के साथ तोड़े, फिर हल्का भोजन लें।

.पाठ 7 कार्यभार

(1) प्रत्येक छात्र को यह विचार करना चाहिए कि वह प्रार्थना का अपना अभ्यास विकसित करने के लिए क्या करेगा। उसे रोजाना प्रार्थना के लिए एक निश्चित समय निकालना चाहिए। उसे नियमित उपवास का समय निर्धारित करना चाहिए।

(2) छात्र को उपवास के बारे में दो भाग पढ़ने चाहिए। स्थिति और उपवास के परिणाम के बारे में बताते हुए प्रत्येक के विषय में एक अच्छा भाग लिखें।

पाठ 8

यीशु का नियम

परिचय

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 19:16-22 पढ़िए चाहिए। यीशु का उस व्यक्ति को उत्तर देने के विषय में आपको क्या आश्चर्य हुआ? यदि आप ने एक मित्र को किसी व्यक्ति को उत्तर देते हुए सुना जिसने पूछा कि अनन्त जीवन कैसे प्राप्त करें, तो आप अपने मित्र को क्या समझाना चाहेंगे?

गलत समझा हुआ उपहार

कल्पना करें कि आप एकदम तंदरुस्त है, लेकिन एक मित्र आपके पास आता है और कहता है कि उसने एक जानलेवा बीमारी का इलाज खरीदा है।[3] जिसके लिए, उसने अपना घर और अपना सब कुछ बेच दिया। उसने आपके लिए यह इलाज खरीदा है।

► तो आप अपने मित्र से क्या कहेंगें जब वो आपको वो उपहार दे?

आप उसकी उदारता के लिए उसे धन्यवाद देंगे, लेकिन आप उपहार को समझ नहीं पाएंगे। वह आपके लिए कुछ खरीदने के लिए इतना कुछ क्यों देगा, जिसकी आपको आवश्यकता नहीं हैं ?

आप एक अलग कहानी की कल्पना करें। आप चिकित्सक के पास गए और पाया कि आपको एक घातक बीमारी है। इलाज बहुत महंगा है, और आपके पास इसके लिए भुगतान करने का कोई तरीका नहीं है। आप घर जाकर मृत्यु के बारे में सोचते है, यह महसुस करते हुए कि आपका परिवार आपको खो देगा और आप जीवन से जो आशा करते है वह कभी भी अनुभव नहीं कर पाएंगे। फिर एक मित्र आता है और आपको बताता है कि उसने आपके इलाज के लिए सब कुछ दे दिया है।

आप इसकी सराहना करते है क्योंकि आप अपनी ज़रूरत को पहले समझते है। उसका उपहार आपके लिए जीवन हैं।

---

[3] इस पाठ की अधिकांश सामग्री (Ray Comfort) रे कम्फर्ट द्वारा धर्मोपदेश “Hell’s Best-Kept Secret” ("हेल्स बेस्ट-केप्ट सीक्रेट") और सामान शीर्षक की पुस्तक द्वारा प्रस्तुत की गई है। अधिक सामग्री http://www.livingwaters.com पर उपलब्ध है।

अब जगत के लोगों की प्रतिक्रिया के बारे में सोचे जब वे सुसमाचार को सुनते है। सुसमाचार शब्द का अर्थ है ''अच्छी खबर'', लेकिन बहुत से लोग यह नहीं समझते कि वह अच्छी खबर क्यों है।

राहुल नामक एक व्यक्ति की कल्पना कीजिए। उसका मित्र उसे बताता है, ''यीशु एक बलिदान के रूप में क्रूस पर मर गया ताकि आपके पापों की क्षमा हो सके''।

राहुल सोचता है, ''मैं एक बुरा व्यक्ति नहीं हूँ। मैं अपने मित्रों और परिवार के लिए अच्छा हूँ। मेरे पापों के लिए इतने बड़े बलिदान की आवश्यकता क्यों है? क्षमा इतनी महत्वपूर्ण क्यों है?''। राहुल शायद गुस्सा हो सकता है कि उसका मित्र सोचता है वह एक बुरा पापी है जिसे अपनी क्षमा के लिए यीशु की मृत्यु की आवश्यकता है।

बाइबल हमें बताती है कि लोग क्रूस से नाराज हैं। लोग खुद को सही ठहराने का तरीका खोजना चाहते हैं। उन्हें नहीं लगता कि उन्हें यीशु के बलिदान की आवश्यकता है, इसलिए क्रूस उन्हें मूर्खता से भरा लगता है (1 कुरिन्थियों 1:18)।

किसी बीमारी के इलाज के बारे में चित्रण की तरह, लोग क्रूस की सराहना नहीं करते हैं क्योंकि वे समझ नहीं पाते हैं कि उन्हें इसकी आवश्यकता क्यों है।

लोगों को खुशखबरी के लिए तैयार करने का बाइबल का तरीका है, उन्हें यह दिखाना कि उन्हें इसकी आवश्यकता क्यों है। उन्हें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि वे पापी है जिन्हें जल्द ही परमेश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा।

► सुसमाचार को सुनने से एक व्यक्ति को खुशी क्यों होनी चाहिए?

न्याय का महत्व

वास्तविकता यह है कि पापियों का न्याय होगा और दण्ड दिया जायगा पापी के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि वह सुसमाचार सुनकर खुश हो जाए।

> ''और जैसे मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रा 9:27)
>
> ''और मै तुम से कहता हूँ, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।'' (मत्ती 12:36)

► प्रकाशितवाक्य 20:12-15 में न्याय का वर्णन पढ़े।

पापियों का भावी न्याय प्राथमिक कारण है कि हर पापी को उद्धार की आवश्यकता है।

परमेश्वर सभी को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है, ''क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह जगत का न्याय धर्म से करेगा'' (प्रेरितों के काम 17:30-31)

यदि कोई व्यक्ति यह नहीं समझता है कि उसका पाप गंभीर है, तो उसके पास उद्धार की इच्छा रखने के सबसे महत्वपूर्ण कारण का अभाव है।

► एक व्यक्ति के लिए उसका पाप गंभीर है इसका एहसास उसे कैसे होगा?

व्यवस्था का उपयोग

बहुत से लोगों को सुसमाचार में कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि वे खुद को दोषी नहीं मानते हैं। पवित्रशास्त्र कहती है कि ज्यादातर लोग खुद को अच्छा मानते हैं (नीतिवचन 20:6)। अगर आप किसी से पूछें कि वह एक अच्छा इंसान है या नहीं, तो वो संभावित रूप से ''हाँ'' कहेंगे और ख़ुद के लिए बहस करने के लिए तैयार होंगे। ज्यादातर लोगों को लगता है कि उनके पाप बुरे नहीं हैं, और यह कि उनहे छोड़ दिया जाये। उन लोगों को अनुग्रह और क्षमा देने का कोई मतलब नहीं है।

व्यक्ति को ख़ुद को एक पापी के रूप में देखना चाहिए और वह अपनी अंतरात्मा द्वारा कायल होना चाहिए, इससे पहले कि वह खुद को अनुग्रह की आवश्यकता में देख सके। परमेश्वर ने पाप दिखाने के लिए व्यवस्था दी है।

व्यवस्था शब्द से हमारा मतलब विशेष रूप से पुराने नियम की अनुष्ठानिक आवश्यकताओं से नहीं है जो कि मंदिर मे आराधना को निर्देशित करती है। हम उन व्यवस्था के बारे में भी बात नहीं कर रहें है जो इज़राएल की सरकार के लिए दिए गए थे, जो हमारे लिए उसी तरह लागू नहीं होते हैं। हम परमेश्वर की धार्मिकता के स्तर के विषय में बात कर रहें है। राजा दाऊद ने भजन 119 में लिखा है कि जैसे वह परमेश्वर से प्यार करता था वैसे ही वह परमेश्वर के नियम से प्यार करता था, क्योंकि यह परमेश्वर के अपने पवित्र चरित्र से आया था।

परमेश्वर कि व्यवस्था हमें दिखाती है कि हमें कैसे जीना चाहिए, और हम उसकी आज्ञाओं का उलंघन करने के लिए दोषी हैं। व्यवस्था के द्वारा कोई धर्मी नही ठहर सकता (गलातियों 2:16, रोमियो 3:20) क्योंकि सभी ने पाप किया है। एक व्यक्ति व्यवस्था का दुरुपयोग कर रहा है अगर वह सोचता है की इसका अनुसरण करने से उद्धार प्राप्त करेगा।

परमेश्वर की व्यवस्था हमारे जीवन का निर्देश्न करती है (1 कुरिन्थियों 9:21), लेकिन यह हमारे उद्धार का उपाय नही है। व्यवस्था हमें उद्धार नहीं दिला सकी क्योंकि जन्म से ही हमारे पास इसकी आवश्यकताओं को पूरा करने की पूरी क्षमाता और योग्यता नहीं हैं (रोमियों 8:3; गलातियों 3:21)।

परमेश्वर की योजना में व्यवस्था सुसमाचार के विरोध में नहीं है। बाइबल हमें बताती है कि व्यवस्था पापी को उद्धार की आवश्यकता का एहसास कराने के उद्देश्य से कार्य करती हैं। सुसमाचार ने व्यवस्था को नष्ट नहीं किया है(मत्ती 5:17) या हमारे लिए उसे अनुचित नहीं ठहराया है। व्यवस्था सुसमाचार के लिए न केवल प्राचीन समय में, बल्कि इस समय में भी सही तैयारी के रूप में कार्य करती है।

व्यवस्था एक शिक्षक है जो हमें मसीह के ओर ले जाती है (गलातियों 3:24)। कुछ लोगों को लगता है कि व्यवस्था का एक समय था, जो खत्म हो गया है, और अब अनुग्रह का समय है। तथ्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की व्यवस्था का सामना करना होगा, और एहसास होना चाहिए की अनुग्रह को समझने से पहले वह दोषी ठहरता है। पौलुस ने कहा है, ‘‘बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता’’। (रोमियों *7:7*)

पौलुस ने कहा कि व्यवस्था इसलिए दी गयी है ताकि पापियों को दोषी और बिना किसी बहाने के दिखाया जाए; क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है (रोमियों 3:19-20)। प्रत्येक व्यक्ति व्यवस्था के अधीन है और जब तक वह बचाया नहीं जाता है, वह उसके द्वारा दोषी ठहरता है।

सुसमाचार एक ऐसे व्यक्ति के लिए अच्छी खबर नहीं है जो यह नहीं जानता कि उसका पाप गंभीर है। सुसमाचार एक ऐसे व्यक्ति के लिए अच्छी खबर है जो जानता है कि वह दोषी है और जल्द ही उसे परमेश्वर के न्याय का सामना करना है।

► एक छात्र को समूह के लिए लूका 18:10-14 पढ़े चाहिए। यदि किसी ने फरीसी से कहा होगा कि उसे परमेश्वर की कृपा से स्वतंत्र रूप से क्षमा किया जा सकता है, तो उसने कैसे जवाब दिया होगा?

एक आधुनिक सुसमाचारसम्मत त्रुटि

आज कई सुसमाचार प्रचारक इस बात पर ज़ोर देना पसंद नहीं करते है कि हर व्यक्ति पाप का दोषी है और परमेश्वर के न्याय का हकदार है।

वे लोगो को यह बताना नहीं चाहते कि वे बुरे हैं।

नकारात्मक के बजाय वे सकारात्मक चीजों के बारे में बात करना चाहते है।

> उद्धार अतीत से ऐसा पूर्ण विराम है कि यह मृत्य के सन्दर्भ में बात करता है। हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाऐ गएं है। उसके क्रूस के द्वारा, हम इस ईश्वर रहित जगत, उसके दृष्टिकोण और इसके मानकों के लिए मर गए हैं।
> (विश्व सुसमाचारिता के लिए लूसान समिति, विलोबैंक रिपोर्ट)

वे अनन्त के बजाय उद्धार के तत्काल लाभ की पेशकश करना चाहते हैं, क्योंकि वे ऐसे लोगों से बात कर रहे है जिनका इस जगत की चीजों पर ध्यान हैं।

वे कहते है कि परमेश्वर की व्यवस्था एक बुरी चीज है, उद्धार की शत्रु है, केवल उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जो कर्मो द्वारा बचना चाहते हैं। बाइबल कहती है कि व्यवस्था अच्छी और पवित्र है (रोमियों 7:12-14); वह व्यक्ति जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता है वह जीवन के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने की कोशिश करेगा। (भजन 119:1-8)

वे कहते हैं कि परमेश्वर का स्तर असंभव और अनुचित है, और आप अपने पापों के लिए दोषी नहीं हैं।

समस्या यह है कि अगर कोई व्यक्ति वास्तव में दोषी नहीं है, तो वह वास्तव में पश्चाताप नहीं कर सकता है। जब तक वह नहीं जानता कि उसने गलत करने का विकल्प चुना है, उसके लिए उसे खेद नहीं होगा। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में खुद को पापी नहीं मानता है जब वह माफी मांगता है, तो वास्तव में वह परमेश्वर से अपनी मानवीय असफलताओं को स्वीकार करने के लिए कहता है।

सच यह है कि पापियों को पापी स्वभाव के साथ पैदा होने के लिए दोषी नहीं माना जाता है। बल्कि परमेश्वर के खिलाफ उनके जान-बूझकर किये गए पापों और विद्रोह के रवैये के लिए दोषी ठहराया जाता है। (यहूदा 15)

बहुत से लोग विश्वास करते है कि परमेश्वर प्यार करने वाला और क्षमा करने वाला है, लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं है कि वह एक धर्मी न्यायाधीश भी है। वे अपेक्षा करते है कि अगर वे कभी परमेश्वर से मिले, तो वे उन्हें क्षमा कर देंगे भले ही उन्होंने कभी भी पश्चाताप नहीं किया हो। उन्होंने जो अधूरा सुसमाचार सुना है उसने उन्हें उनके पापों में और अधिक सहज बना दिया है।

आजकल के कई प्रचारक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यदि कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है, तो उसके पास एक खुशहाल जीवन होगा। वे कहते है कि पाप संतुष्ट नही करता है, लेकिन परमेश्वर करता है। वे

कहते है कि व्यक्ति को प्यार, शांति और आनन्द प्राप्त होगा। वे कहते है प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक अद्भुत योजना है, और अगर वह व्यक्ति बच जाता है तो वह योजना पूरी हो जाएगी।

इन वादों को गलत समझा जा सकता है। परमेश्वर प्यार और शांति देता है, लेकिन वहाँ पर विश्वासियों और जो लोग परमेश्वर को अस्वीकार करते है के बीच मे टकराव होगा (मत्ती 10:34-36)। वह आनन्द देता है, परन्तु उसी समय सताव भी हो सकता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। उनके पास प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक अद्भुत योजना है, लेकिन एक मसीही को कठिन परिस्थितियों और त्रासदियों का अनुभव हो सकता है (2 कुरिन्थियों 11:24-27)। यदि कोई व्यक्ति मसीह बनने का फैसला इसलिए करता है क्योंकि उसे लगता हैं कि उसके जीवन की स्थिति बेहतर हो जाएगी तो वह निराश हो सकता है। कुछ लोग गंभीर रूप से पीड़ाओं को सह रहें हैं क्योंकि वे मसीही हैं।

मसीही होने के नाते, हम समझते हैं कि परमेश्वर के साथ जीवन अद्भुत है, भले ही हम कठिन परिस्थितियों को भुगतें। हम कह सकते हैं कि परमेश्वर की सेवा एक अद्भुत जीवन है। हालांकि, अधिकांश अविश्वासी लोगों को यह पता नहीं है कि एक अद्भुत जीवन क्या है। यदि आप उन्हें एक अद्भुत जीवन का वर्णन करने के लिए कहते हैं, तो वे स्वास्थ्य, धन, स्वतंत्रता, शांति और अन्य अच्छी स्थितियों के बारे में बात करते हैं। वे यह नहीं समझेंगे कि एक सताए गए, पीड़ित मसीही के पास एक अद्भुत जीवन है। इसलिए, यदि आप एक पापी को बताते हैं कि यदि वह मसीही बन जाता है तो उसके पास एक अद्भुत जीवन होगा तो वह शायद समझ नहीं पाएगा कि आप क्या वादा कर रहे हैं।

सुसमाचार की गलत समझ के साथ एक और समस्या है। कोई व्यक्ति खुद को पापी न्याय के पात्र के रूप में देखे बिना संदेश को स्वीकर कर सकता है। क्योंकि वह पाप की गंभीरता को नहीं देखता है, वह वास्तव में पश्चाताप नही करता है। वह पाप से मुक्ति की तलाश में नहीं है, परन्तु अन्य लाभों की तलाश में है। उसे लग सकता है कि वह बचाया गया है लेकिन वास्तव में वह बचाया नहीं गया है।

उसे अपने जीवन के लिए उद्धार का सही लाभ भी नहीं मिलता है, क्योंकि उसे बचाया नहीं गया है। वह थोडे समय के लिए कोशिश करता है और फिर निराशा में हार मान लेता है।

गलत सुसमाचार का सबसे बुरा परिणाम यह है कि जो व्यक्ति निराश हो गया उसकी भविष्य में सुसमाचार को अपनाने की संभावना कम होगी।

सारांश में, बेहतर जीवन के सुसमाचार के साथ जो समस्याएं हैं

1. ये वो वादा करता है जो परमेश्वर नहीं करता है।
2. यह पापी द्वारा गलत समझा गया है।
3. व्यक्ति वास्तव में परिवर्तित नहीं हुआ होगा।
4. जो वह अपेक्षा करता है वह उन लाभों को प्राप्त नहीं कर पाएगा।
5. उसे भविष्य में सुसमाचार को स्वीकार करने की कम संभावना है।

► एक छात्र को समूह के लिए प्रेरितों के काम 14:21-23 पढ़ना चाहिए। प्रेरितों ने नये विश्वासियों को क्या अपेक्षा करने के लिए कहा?

यीशु ने अपने शिष्यों को चेतावनी दी कि लोग मसीह में उनके विश्वास के कारण उनसे घृणा करेंगे। उसने उन्हें बताया कि पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। तीन सुसमाचार के लेखकों ने इन शब्दों को दर्ज किया है (मत्ती 10:22; मरकुस 13:13; लूका 21:17)। मूल प्रेरितों में से अधिकांश मसीह के लिए मारे गए।

उनके विश्वास के लिए लाखों मसीही मारे गए हैं। यह सिर्फ एक प्राचीन समस्या नहीं हैं। 20 वी शताब्दी में आधें से अधिक मसीही मारे गए।

यदि कोई व्यक्ति एक आसान जीवन के वायदे के बिना उद्धार के वायदे के कारण परिवर्तित हो जाता है तो वह कठिन जीवन के कारण हार नहीं मानेगा। वह अनन्त उद्धार के लिए परीक्षाओं को सहने के लिए तैयार रहेगा। परीक्षाएँ उद्धार को उसके लिए और भी कीमती बना देती है।

► मसीही उत्पीड़न क्यों सहते हैं?

प्रेम का प्रदर्शन

► एक छात्र को समूह के लिए 2 तीमुथियुस 2:24-26 पढ़ना चाहिए। ये आयतें हमें सुसमाचार प्रचाराक के तरीके के बारे में क्या बताती हैं?

सुसमाचार प्रचारक को उन लोगों के साथ लड़ना नहीं चाहिए जिन्हें वह सुसमाचार दिया है। शैतान शत्रु है, और पापी उसके कैदी हैं। हमें सच्चाई को सज्जनता के साथ समझाना चाहिए। हमारा उद्देश्य उनकी मदद करना है, न कि उन्हें तर्क/विवादों में हराना हैं। इस भाग में जो शब्द इस्तेमाल किये गए है सजन्नता, नम्रता, और धैर्य भी शामिल है।

► एक छात्र को समूह के लिए तीतुस 3:2-5 पढ़ना चाहिए। यह भाग हमें सुसमाचार प्रचारक के व्यवहार के बारे में क्या बताता हैं?

हमें स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर की कृपा के बिना, हम जगत के लोगों की तरह है। परमेश्वर हमारे पास न्याय नहीं, बल्कि दयालुता और प्रेम लेकर आया हैं।

एक सुसमाचार प्रचारक को पापी पर नहीं, लेकिन पाप और शैतान पर गुस्सा होना चाहिए। उसे कठोर नहीं होना चाहिए। उनके त्रुटियों को खोजने में खुशी नहीं होनी चाहिए, लेकिन उनके उद्धार के बारे में चिंतित होना चाहिए।

हमने अध्ययन किया है कि हम उन वायदों के द्वारा पापी को प्यार नही दिखाते है जिनका वायदा परमेश्वर नही करते हैं। हम ऐसा बर्ताव करके करूणा नहीं दिखाते जैसे कि उनके जीवन की समस्याएं उनके अनन्त नियति से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

यीशु ने पूर्वकथन को पूरा किया कि मसीहा न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न वह कुचले हुए सरकण्डे को तोड़ेगा;। (मत्ती 12:19-20)

► जब हम सुसमाचार का प्रचार कर रहे होते हैं तो वे कौन से कुछ तरीके हैं जिनसे हम परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित कर सकते हैं?

.पवित्र शास्त्रीय सुसमाचार प्रचार

सुसमाचार प्रचार के लिए बाइबल का दृष्टिकोण लोगों को सुसमाचार प्राप्त करने के लिए तैयार करने के लिए परमेश्वर की व्यवस्था का उपयोग करना है। व्यवस्था पापियों को दोषी ठहराती है और उन्हें दिखाती है कि जब तक उन्हें माफी नहीं मिल जाती, उन पर न्याय आएगा।

यूहन्ना बपतिस्ता ने उपदेश दिया कि लोगों को प्रभु के आगमन की तैयारी के लिए पश्चाताप करना चाहिए और न्याय से बचना चाहिए (मत्ती 3:1-12)।

यीशु ने कई बार न्याय और नरक के बारे में प्रचार किया था। उसने उन लोगों पर अनुग्रह किया जो अपने पापों के लिए क्षमा चाहते थे।

► एक छात्र को समूह के लिए लूका 7:36-50 पढ़ना चाहिए। किस तरह के व्यक्ति को माफी की पेशकश की जाती हैं?

हम यीशु के सेवकाइ में कहीं नहीं पाते है कि उसने ऐसे लोगों को क्षमा की पेशकश की जिन्होंने अपने पापों के लिए खेद व्यक्त नहीं किया। उन्होंने लोगों को न्याय की चेतावनी दी। एक आपदा के बाद जब कई लोग मारे गए तो यीशु ने एक भीड़ से कहा कि वे सभी नष्ट हो जाएंगे जब तक कि वे पश्चाताप न कर ले। (लूका 13:1-5)

यीशु ने चूंगी लेने वाले और फरीसी की कहानी बताई, जिन्होंने विपरीत प्रार्थना की। चूंगी लेने वाले को खेद हुआ और उसे माफी मिली। फरीसी ने अपने आप को सही ठहराने की कोशिश की। फरीसी को माफी देने का कोई मतलब नहीं होगा, क्योंकि उसने विश्वास नही किया कि इसकी उसे जरूरत है।

प्रेरित पतरस ने अनन्त जीवन के वायदे का प्रचार किया और लोगों से पश्चाताप करने और क्षमा प्राप्त करने का आह्वान किया। (प्रेरितों के काम 2:38; प्रेरितों के काम 3:19, प्रेरितों के काम 5:31)

स्तिफनुस ने, यहूदी शासकों को प्रचार किया, अनुग्रह की पेशकश नहीं की, लेकिन उन्हें परमेश्वर का विरोध करने और व्यवस्था को तोड़ने के लिए दोषी ठहराया (प्रेरितों के काम 7:51-53)।

पौलुस ने प्रचार किया कि लोगों को पश्चाताप करना चाहिए क्योकि परमेश्वर पाप को ऐसे ही नहीं छोड़ देंगें (प्रेरितों के काम 17:30-31)

मसीह के अनुयायी होने से मिलने वाले आनंद और आशीषों के विषय में बात करना गलत नहीं है; लेकिन पवित्रशास्त्र में प्रचारकों का प्राथमिक तरीका पाप के प्रति कायलता और पश्चाताप, और न्याय से उद्धार की पेशकश के लिए प्रचार करना था

► एक छात्र को समूह के लिए 2 कुरि 5:11 पढ़ना चाहिए। प्रेरित ने क्या कहा कि उसने समझाने-बुझाने के लिए क्या इस्तेमाल किया?

► एक छात्र को समूह के लिए प्रेरितों के काम 24:25 पढ़ना चाहिए। पौलुस ने फेलिक् से किस विषय में बात की? फेलिक्स कैसे प्रभावित हुआ?

पवित्रशास्त्रीय सुसमाचार के प्रचार का एक उदाहरण

जब वह राहुल से मिले मनोज कलीसिया को निमंत्रण पत्र बांट रहे थे।

राहुलः मुझे कलीसी की जरूरत नहीं है।

मनोजः पवित्रशास्त्र कहती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने पापों के लिए परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़ा होना होगा। क्या आप सोचते है कि आप जैसे है वैसे ही परमेश्वर आपका स्वीकार करेगा?

राहुलः हाँ, मुझे ऐसा लगता है।

मनोजः क्या आप एक अच्छे इंसान हैं?

राहुलः हाँ, मुझे लगता हैं कि मैं हूँ।

मनोजः हो सकता है कि आप कई लोगों की तुलना में अच्छे हों। शायद आप अपने मित्रों और परिवार के लिए अच्छे हैं। लेकिन, क्या आप उस स्तर को जानते है जो परमेश्वर उपयोग करता है? पवित्रशास्त्र हमें बताती है कि परमेश्वर कैसे सही और गलत का न्याय करता हैं। उदाहरण के लिए, उसके कुछ नियमों को दस आज्ञाएँ कहा जाता है। क्या आप उस दस आज्ञाओं को जानते हैं?

राहुलः उनमे से कुछ जानता हूँ।

मनोजः उदाहरण के लिए, एक आज्ञा कहती है, ''झूठी गवाह मत दों''। क्या आप आपने जीवन में कभी ऐसा कुछ कहा जो सच नहीं था?

राहुलः बेशक, हर किसी ने कभी-कभी ऐसा किया है।

मनोजः लेकिन झूठ बोलना परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ रहा हैं। दूसरा एक है चोरी न करना। क्या आपने कभी कुछ चुराया है?

राहुलः केवल छोटी चीजें, और मैंने कभी किसी को उनसे चोरी करके पीड़ित नहीं किया है।

मनोजः लेकिन परमेश्वर हमें यह ते करने के लिए आजादी नहीं देते कि हम क्या चुरा सकते हैं। उसकी आज्ञा यह है कि हम चोरी न करें। दूसरी एक बात यह है कि हम कभी भी परमेंश्वर का नाम व्यर्थ ना लें, बिना आदर के ना बोले, या इसे श्राप शब्द के रूप मे ना इस्तेमाल करें।

[हर एक आज्ञा का उपयोग किया जा सकता हैं, लेकिन एक वार्तालाप में सभी का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं हैं। नीचे कुछ उदाहरण हैं।]

- परमेश्वर हमें व्यभिचार नहीं करने ले लिए कहते हैं, और यीशु ने कहा कि किसी स्त्री के लिए वासना करना अपने हृदय में व्यभिचार करना है।

- परमेश्वर ने कहा है कि हत्या न करना, और यीशु ने कहा है कि किसी से नफरत करना हृदय में हत्या करने के बराबर है।
- परमेश्वर ने कहा है कि उसके दिन को पवित्र रखें, क्या आपने प्रभु के दिन को हर सप्ताह को पवित्र रखा है?
- परमेश्वर ने कहा है कि लोभ न करना। यह न सोचे कि परमेश्वर के बजाय चीज़े हमें खुश कर देगी, यह कामना करते हुए की औरों के पास जो है वह हमारे पास भी हो।
- परमेश्वर हमसे कहते है कि हमारे लिए कोई अन्य प्रभु न हों, उसके अलावा और कुछ भी हमारे लिए ज्यादा महत्वपूर्ण ना रहे, जिसका अर्थ है कि कोई भी चीज हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने और उसकी आराधना करने से रोकने ना पाएं, जिस के वह योग्य है।

[कई आज्ञाओं का उपयोग करने के बाद यह दर्शाने के लिए कि पापी दोषी है, हम निष्कर्ष पर जाते है।]

मनोज: अगर परमेश्वर ने आज आपका न्याय किया, तो आप उत्तीर्ण नहीं होंगे। आप उनके स्तर से दोषी होंगे। क्या आप जानना चाहते हैं कि आप कैसे माफ किए जायें ताकि आपको परमेश्वर के न्याय का भय न रहे?

[तब, सुसमाचार प्रचारक सुसमाचार को सुना सकता है और पापी को प्रार्थना के लिए आमंत्रित कर सकता है।]

► दो छात्रों को एक वार्तालाप प्रदर्शित करना चाहिए जिसमें एक छात्र दस आज्ञाओं का उपयोग करके सुसमाचार प्रस्तुत करता है। समूह उनके प्रदर्शन पर चर्चा कर सकता है। फिर छात्रों को जोड़े में विभाजित करना चाहिए और इस प्रस्तुति का अभ्यास करना चाहिए।

► आप कैसे जानेंगे कि सुसमाचार सुनाना सफल हुआ है?

ज़ाहिर है कि हमारे सुसमाचार सुनाने के बाद अगर कोई व्यक्ति पश्चाताप करने का चुनाव करता है तो हम जान जाते है कि यह सफल हुआ है। लेकिन यह केवल सफलता का नाप नहीं है। परमेश्वर ही है जो सुनने वाले के हृदय में सच्चाई को दृढ़ करने के लिए जिम्मेदार हैं। यदि आप ने इस तरह से सुसमाचार सुनाया कि सुनने वाला समझ गया मगर आपने कभी कोई परिणाम नहीं देखे तो भी आपने कुछ महत्वपूर्ण किया है। यदि उसने समझा कि आपने उसकी चिंता की और उसकी मदद करने की आपकी इच्छा को महसूस

किया तो वह भी अच्छा है। यदि वह गुस्सा या मजाक उड़ा रहा है तो इसका मतलब यह नहीं कि आप असफल हो गए हैं, खासकर तब जब वह सच के विषय में गुस्से में था। सुसमाचार के संदेश के द्वारा परमेश्वर सम्मानित होता है; जब आप इसे साझा करते हैं आप किसी महत्वपूर्ण बात के लिए सफल होते है।

कक्षा अगुए के लिए सूचना

यह सुसमाचार को प्रस्तुत करने के लिए एक प्रभावी तरीका हैं। यह महत्वपूर्ण है कि छात्र इसका उपयोग करना सीखें। अपने अगले कक्षा सत्र में, उन्हें अपने अनुभवों के बारे में बताने का समय दें जब उन्होंने इस पद्धति के साथ सुसमाचार को साझा करने का प्रयास किया। उन्हें एक-दूसरों को सलाह देने और प्रोत्साहित करने दें। इस तरह एक सत्र सार्थक साबित हो सकता है और अगले पाठ तक जाने के लिए अगले समय की प्रतीक्षा करें।

पाठ 8 कार्यभार

सुसमाचार को कम से कम तीन लोगों को पेश करें जिस तरह से मनोज ने इस पाठ में किया था। प्रत्येक वार्तालाप का वर्णन करने वाला एक पैराग्राफ लिखें। अगले कक्षा सत्र में इसके बारे में बताने के लिए तैयार रहें।

पाठ 9

"मिलाप" सुसमाचार का प्रस्तुतीकरण

परिचय

कक्षा के अगुए के लिए सूचना: इस सत्र की शुरूआत में, छात्रों को अपने अनुभवों का वर्णन करना है जब उन्होंने पिछले पाठ में सीखी गयी विधियों के साथ सुसमाचार को बाँटा। याद रखें कि छात्रों को एक दूसरे को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता हैं। प्रत्येंक छात्र जिसने सुसमाचार को बाँटा है, भले ही सुनने वाले ने सकारात्मक प्रतिक्रिया ना दी हो तो भी वह कुछ महत्वपूर्ण प्राप्त करता है।

इस पाठ की तैयारी के लिए, कक्षा में रेखा-चित्र का वर्णन करने के लिए एक चॉकबोर्ड, व्हाइटबोर्ड या बड़ा कागज होने के लिए सुनिश्चित करें।

> ‘‘जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है’’। (1 यूहन्ना 1:3)

► सुसमाचार को बांटने के लिए प्रेरीत ने क्या कारण दिया?

हमने अनुभव किया है कि परमेश्वर का सामना करने और परिवर्तित होने, उसके साथ रिश्ता शुरू करने के क्या मायने है हमारा दूसरों के साथ भी एक विशेष रिश्ता है जो परमेश्वर के साथ रिश्ते में हैं। जब हम सुसमाचार को बताते है, तो हम दूसरों को परमेश्वर के साथ और अन्य जो उन्हें जानते है उनकी संगति में आने के लिए आमंत्रित कर रहे है।

सुसमाचार प्रस्तुति

सुसमाचार की यह प्रस्तुति संक्षिप्त और यादगार है। यह एक रेखा-चित्र का उपयोग करती है जो किदी के भी द्वारा स्मरण किया जा सकेगा जो इस प्रस्तुति को देखेगा। इसे दो मिनट में प्रस्तुत किया जा सकता है, या विचार-विमर्श और स्प ष्टीकरण को सम्मिलित करने के लिए विस्तारित किया जा सकता है यदि सुनने वाले रूचि रखते हैं तो।

यह आवश्यक नहीं हैं कि आप एक कुशल कलाकार हों। रेखा-चित्र सरल है, और इसकी सरलता सुनने वाले को इसे याद रखने में मदद करती है।

अब हम रेखा-चित्र के चरणों के माध्यम से जाएंगे, जिसमें प्रत्येक भाग के साथ जाने के लिए व्याख्यात्मक शब्दांकन होगा।

कक्षा अगुवे के लिए सूचना: छात्रों के देखने के दौरान प्रस्तुति का प्रदर्शन करें। कोशिश करें कि प्रस्तुति में अतिरिक्त स्पष्टिकरण ना जोड़ें। यह छोटा होना चाहिए ताकि छात्र इसे आसानी से सीख सकें। पहली बार इस प्रदर्शन को देखते समय छात्र चित्र को कागज़ पर उतारने का प्रयास ना करे।

दूसरे प्रदर्शन के लिए, छात्रों को रेखा-चित्र के हर चरण का चित्रण करना है, कक्षा अगुआ रेखा-चित्र को पर्याप्त बढ़ा बनाए ताकि वह आसानी से दिखे। प्रस्तुति में अधिक स्पष्टिकरण जोड़ने का प्रयास ना करें। दूसरे प्रदर्शन के बाद, कक्षा को नीचे दिए गए स्पष्टिकरण को सम्मिलित करें, फिर प्रस्तुति के अभ्यास के लिए वापस जाएं।

रेखा-चिंत्र के हर भाग के दौरान क्या कहना चाहिए

भाग - 1

‘‘परमेश्वर ने हर मनुष्य को उसके साथ संगति में रहने और एक आशीष भरा जीवन जीने के लिए सृजा है। समस्याओं और पीड़ाओं से भरा जीवन उसने नहीं रचाया है।”

[“परमेश्वर” शब्द लिखें और किसी व्यक्ति का चित्र बनाएं।]

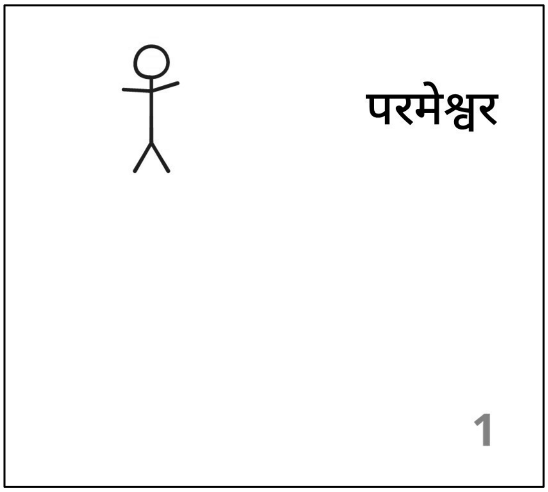

भाग - 2

“मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गया है। सृष्टि के प्रथम लोगों ने पाप किया, और तब से हर व्यक्ति ने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया।“

[अलग होने का चित्र बनाये और “पाप” शब्द को लिखें।]

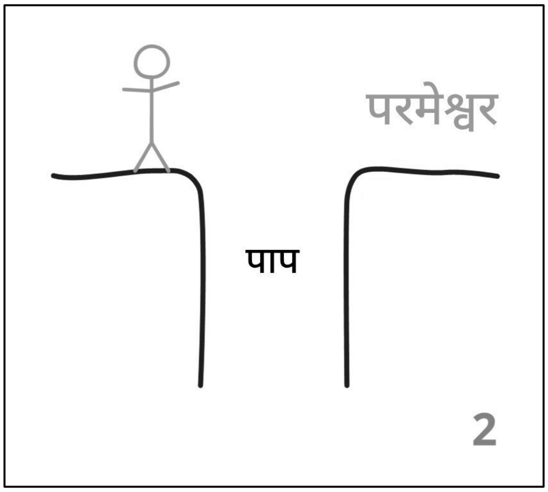

भाग - 3

‘‘प्रभु धार्मिकता से न्याय करने वाला है, और पापियों को एक दिन नरक में अनन्त काल के लिए दंडित किया जायेगा जब तक कि वे दया नहीं पाते हैं और परमेश्वर के साथ रिश्ते में वापस नहीं आते हैं।’’

[तीर और नरक शब्द का चित्र बनाए]

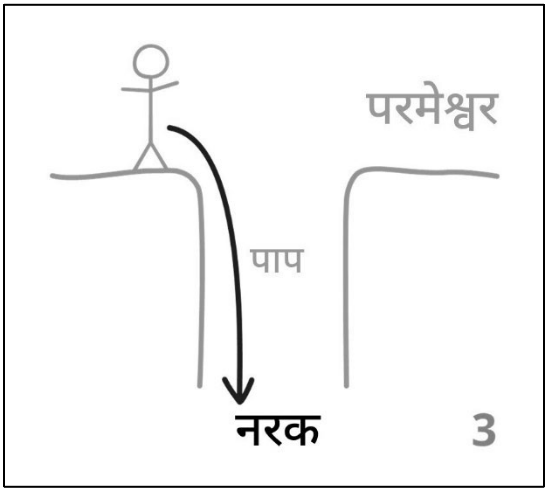

भाग - 4

''परमेश्वर के पास वापस जाने के लिए और दया हांसिल करने के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं - अच्छे काम, कलिसिया में जाना, धार्मिक रीति-रिवाज, ना ही पैसे देना ....''

[सूची में प्रत्येक अंश के साथ तीर खींचे]

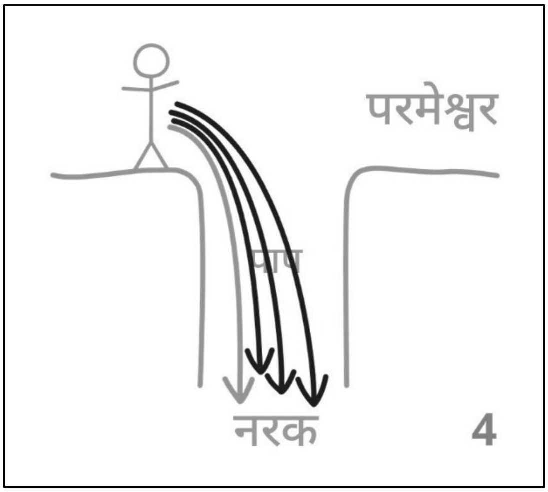

भाग - 5

''यदि परमेश्वर ने हमारे लिए उसके पास वापस आने का मार्ग तैयार नहीं किया होता तो हमारी स्थिति निराशाजनक होती। परमेश्वर का पुत्र यीशु क्रूस पर बलिदान हुआ ताकि हम माफ किये जाए। तीन दिनों के बाद, वह मृतकों में से जी उठा।''

[क्रूस बनाएं]

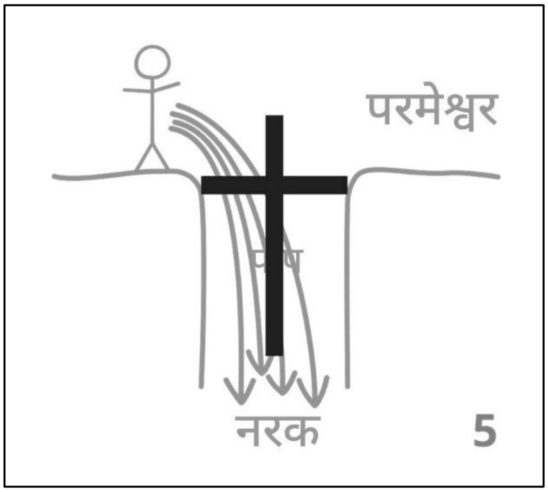

भाग - 6

''लेकिन सिर्फ यह जान लेना इतना काफी नहीं है। बचाए जाने और परमेश्वर के पास वापस आने के लिए हर व्यक्ति को व्यक्तिगत चुनाव करना पड़ेगा। व्यक्ति को पश्चाताप करना ही होगा, जिसका अर्थ है कि पाप के लिए पर्याप्त खेद व्यक्त करना और पाप छोड देने के लिए तैयार रहना। एक व्यक्ति जो पश्चाताप करता है वह प्रार्थना में परमेश्वर से मांग कर क्षमा प्राप्त कर सकता है"।

[तीर को बनाए, पश्चाताप और प्राप्त शब्दों को लिखें]

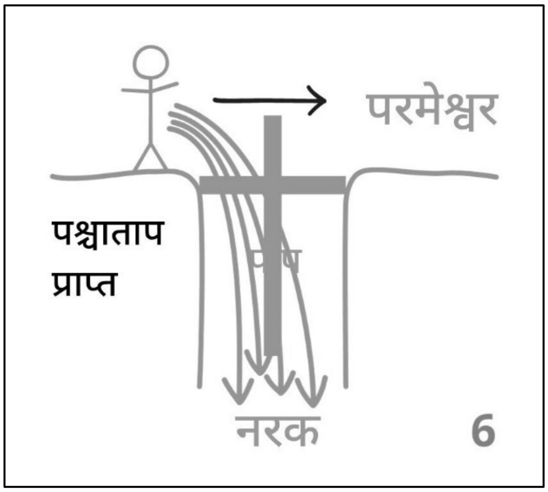

भाग - 7

''आपके ख्याल से आप इस चित्र में कहाँ हैं? क्या आपके जीवन में कोई विशेष समय आया जब आपने अपने पापों का पश्चाताप किया, परमेश्वर की क्षमा प्राप्त की, और परमेश्वर के लिए जीना शुरू कर दिया; या, क्या आप अभी भी पाप के कारण परमेश्वर से अलग हैं?''

[उत्तर के लिए रूके। कई व्यक्ति यह स्वीकार करेंगे कि वे अभी भी परमेश्वर से अलग है।]

"क्या आप यह कदम उठाने के लिए तैयार हैं? पश्चाताप करना, क्षमा प्राप्त करना, और परमेश्वर के लिए जीना शुरू करें? मुझे आपके साथ अभी प्रार्थना करने में खुशी होगी''।

[निम्नलिखित के लिए कुछ इसी तरह प्रार्थना करें।]

''हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और अनन्त दण्ड के योग्य हूँ। मैं अपने पापों के लिए क्षमा चाहता हूँ और उन्हें छोडने को तैयार हूँ। मै क्षमा के लिए आपसे याचना करता हूँ, इसलिए नहीं की मैं

इसके योग्य हूँ, बल्कि इसलिए कि यीशु मेरे लिए मरा। उद्धार के लिए धन्यवाद। अब से, मैं आपके लिए जीऊंगा।''

स्पष्टीकरण

भाग - 1

प्रस्तुति की शुरूआत सुनने वालों पर लागू करने के लिए अनुकूलित की जा सकती हैं। ''समस्याओं और पीड़ाओ से भरे जीवन'' के बावजूद, सुसमाचार प्रचारक कुछ और विशिष्ट का उल्लेख कर सकता है जो सुनने वाले के अनुभव से संबंधित हैं।

भाग - 2

सुनने वाले के लिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि वह व्यक्तिगत रूप से पाप का दोषी है और परमेश्वर से अलग हो गया है। वह बस उस स्थिति में नहीं हैं जो आदम के पाप के परिणामस्वरूप हुआ था।

भाग - 3

यह पापी की स्थिति का सबसे गंभीर पहलू दिखाता हैं।

भाग - 4

इस भाग का उद्देश्य सुनने वाले को यह दिखाना है कि उसे उद्धार के लिए गलत चीजों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। इस भाग को सुनने वालो की जरूरतों के अनुकूल बनाया जा सकता हैं। सुसमाचार प्रचारक को उन चीजों को नाम देने की कोशिश करनी चाहिए जिन पर सुनने वाले को भरोसा होने की संभावना है।

भाग - 5

प्रायश्चित की व्याख्या करने का सबसे सरल तरीका यह है कि ''यीशु एक बलिदान के रूप में क्रूस पर मर गए ताकि हमें क्षमा किया जा सके।'' इस भाग का उद्देश्य सुनने वाले को यह एहसास कराने में मदद करता है कि उसे परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गए उद्धार पर निर्भर होना चाहिए।

भाग - 6

सुसमाचार प्रचारक सुसमाचार सुनने वाले को निर्णय लेने के क्षण पर लाने की कोशिश करता है। सुनने वाले को यह महसूस करने की आवश्यकता है कि उसे एक व्यक्तिगत चुनाव करना होगा। उसे पश्चाताप के लिए सही परिभाषा जानने की जरूरत है, ताकि वह जाने कि पश्चाताप अफसोस और मुझे खेद है कहने से अधिक है। उसे यह जानने की जरूरत है कि उसे परमेश्वर से क्षमा मांगने की याचना करनी है।

भाग - 7

इस बिंदु पर आकर, प्रचारक सुनने वाले को यह समझाने की कोशिश करता है कि उसे उद्धार की आवश्यकता है। प्रस्तुति को, उद्धार ना पाए हुए व्यक्ति को यह एहसास कराने में मदद करने के लिए रूपांकित किया गया है कि उसने उद्धार नहीं पाया है। प्रश्न को ध्यान से अभिव्यक्त किया गया है। कई लोग यह सोचते है उन्हें रोज क्षमा मांगनी चाहिए क्योंकि वे पाप में रहना जारी रखते है। प्रश्न उस एक विशेष समय के बारे में पूछता है जब व्यक्ति को बचाया जाता है और एक नया जीवन शुरू होता है। उसे यह महसूस करने की आवश्यकता है कि यदि उसने परिवर्तन का अनुभव नहीं किया है, तो वह अभी भी अपने पाप के द्वारा परमेश्वर से अलग है। फिर, सुसमाचार प्रचारक उसके साथ उद्धार के लिए प्रार्थना करने की पेशकश करता है।

यदि सुनने वाला उसकी आवश्यकता को नहीं समझता है या पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं है, तो प्रचारक को उसे प्रार्थना करने के लिए दबाव नहीं देना चाहिए। यदि वह वास्तव में पश्चाताप और परिवर्तन का अनुभव किए बिना प्रार्थना करता है तो उसे उद्धार का झूठा आश्वासन हो सकता है या यह विश्वास हो सकता है कि उसके लिए उद्धार नहीं है। इस कारण, बाद में उसके बचने की संभावना कम हो सकती है।

रेखा-चित्र को जल्दी से प्रस्तुत किया जा सकता है। यदि आपके पास सुसमाचार बांटने का अवसर है तो आप बस पूछ सकते हैं, ‘‘क्या मैं आपको एक चित्र दिखाने के लिए दो मिनट का समय ले सकता हूँ, जो यह दर्शाता है कि बाइबल क्या कहती है कि निश्चित रूप से यही रास्ता है जानने का कि आप बच गए हैं?’’ इससे व्यक्ति को पता चल जाता है कि आप उसका ज्यादा समय नहीं लेने वाले है। यदि वह रूचि लेता है और इसके बारे में बात करना चाहता है तो आप और अधिक समय ले सकते है।

आमतौर पर लोग चित्र में रूचि लेते हैं। और अक्सर सुसमाचार प्रचारक के निपट जाने के बाद व्यक्ति चित्र रखने की मांग करता है।

.कक्षा के अगुए के लिए सूचना

प्रस्तुति को बार-बार प्रदर्शित करें। प्रस्तुति की अधिक टिप्पणी या अधिक स्पष्टीकरण देने से बचें क्योंकि छात्र इसे और आसानी से सीखेंगे यदि यह छोटा है। कई प्रदर्शनों के बाद, विभिन्न छात्र समूह में बारी-बारी से प्रस्तुति का प्रदर्शन कर सकते हैं, इस दौरान समूह के सदस्य उन्हें विवरण याद रखने में मदद करते हैं। फिर, छात्र जोड़ो में विभाजित हो सकते है और एक दूसरे के साथ प्रस्तुति का अभ्यास कर सकते हैं।

.पाठ 9 कार्यभार

(1) कम से कम तीन अविश्वासियों के लिए मिलाप चित्र के साथ सुसमाचार प्रस्तुत करें। प्रत्येक अनुभव का वर्णन करने वाला एक अनुच्छेद लिखें और अगले कक्षा सत्र में इसके बारे में बताने के लिए तैयार रहें।

(2) अगले पाठ की तैयारी में, रोमियों 1-3, रोमियों 5 और रोमियों 10 को पढ़ें और मनन करें।

पाठ 10

रोमन मार्ग

कक्षा के अगुए के लिए सूचना

क्या छात्रों ने मिलाप *चित्र का उपयोग करते हुए अपनी सुसमाचार प्रस्तुतियों पर विवरण किया है।*

रोमन की पुस्तक का परिचय

पौलुस ने रोम की यात्रा करने की योजना बनाई। विश्वासियों को मजबुत करना (रोमियों 1:11-12), और स्पेन की सेवा यात्रा के लिए रोमियों की कलीसिया का समर्थन प्राप्त करने के लिए (रोमियों 15:24), वह वहां पर सुसमाचार प्रचार करना चाहते था (रोमियों 1:15)।

रोमियों को पत्र लिखने का उद्देश्य रोमी विश्वासियों को पौलुस और उनके उद्धार का धर्मशास्त्रीय परिचय देना था। पत्र उद्धार के धर्मशास्त्र को समझाकर विश्वाव्यापी मिशनरी कार्य के लिए आधार को दर्शाता हैं।

पौलुस ने स्पेन में मिशनरी प्रयास शुरू करने के लिए एक आधार के रूप में रोम में कलीसिया का उपयोग करने की योजना बनाई, जो पश्चिम में सबसे पुराना रोमन उपनिवेश और दुनिया के उस हिस्से में रोमन सभ्यता का केन्द्र था।

पौलुस की रोम यात्रा उस तरह से नहीं हुई जैसी उन्होंने योजना बनाई थी। उसे येरुशलेम में गिरफ्तार कर लिया गया था। जब उसे लगा कि उसे न्याय नहीं मिलेगा, तो उसने कैसर से अपील की। एक खतरनाक यात्रा के बाद, जिसमें एक जहाज़ की तबाही शामिल थी, वह ए डी 60 में एक कैदी के रूप में रोम पहुँचा। हालांकि उसके लिए चीज़े सीमित कर दी गयीं थी पर वह मुलाकातियों को मिलने के लिए स्वतंत्र था; और, उसके पास एक सेवा थी जो पूरे नगर में पहुँची (प्रेरितों के काम 28:30-31)। पौलुस ने कहा कि रोम की घटनाओं ने सुसमाचार को आगे बढ़ाने का काम किया है (फिल 1:12)। कैसर के घर में भी विश्वासी थे। उन्हें दो साल बाद रिहा कर दिया गया था। उन्होंने स्पेन की अपनी यात्रा की या नही यह अज्ञात है।

ऐसे कई सवाल हैं जो स्वाभाविक रूप से पौलुस के अनुरोध के जवाब में उठेंगे कि वे उसकी सेवकाई यात्रा शुरू करने में मदद करें। कोई पूछ सकता है ‘‘क्यों आप ही को जाना चाहिए?" इसलिए उसने अपने

सुसमाचार प्रचार के कार्य के प्रति समर्पण का उल्लेख करते हुए पत्र की शुरूआत की (रोमियों 1:1)। बाद में उसने अपने विशेष बुलाहट और सफलता को प्रेरित के रूप में अन्य जातियों को स्पष्ट कर दिया (रोमियो 15:15-20)।

एक अन्य संभावित प्रश्न, ''सभी को सुसमाचार सुनने की आवश्यकता क्यों है? शायद इस संदेश की हर जगह आवश्यकता नहीं है'' पौलुस ने दुनिया भर (रोमियो 1:14-16; रोमियो 10:12) में मानव जाति के लिए सुसमाचार (रोमियो 10:14-15) की क्षमता और सेवकाई कार्यों की अत्यावश्यकता के बारे में समझाया। उसने दिखाया कि यह संदेश जगत के हर व्यक्ति पर लागू होता है और प्रत्येक व्यक्ति को इसें सुनने की सख्त जरूरत है।

.तब से अब तक रोमियों की पुस्तक

यह पत्र अभी भी मिशनरी कार्य को आधार प्रदान करने के अपने मूल उद्देश्य को पूरा करता है। हालांकि, यह और अधिक करता है। जैसे कि पौलुस ने स्पष्ट किया कि सभी को संदेश सुनने की आवश्यकता क्यों हे, उसने बताया कि संदेश क्या है और क्यों लोगों को केवल इस तरह से बचाया जा सकता है। उसने कुछ सामान्य आपत्तियों का प्रतिउत्तर भी दिया । उसने जो उपदेश दिया, उसकी व्याख्या और बचाव के लिए उसने अधिकांश पुस्तक को लिया और अपनी संरचना प्रदान की।

रोमियों में हमारे पास जो है वह उद्धार की धर्मशास्त्रीय व्याख्या है। पौलुस के उद्धार के धर्मशास्त्रीय ने यहूदीवादी के खिलाफ तत्काल बचाव प्रदान किया; और यह सोटेरोलॉजी (उद्धार के सिद्धांत) में आधुनिक त्रुटियों को ठीक करने का काम करता है।

विलियम टाइन्डेल ने रोमियों की पुस्तक की अपनी प्रस्तावना में कहा, पौलुस का मन इस पत्री में मसीह के सुसमाचार की सारी सीख को संक्षेप में समझाने और सभी पुराने नियम के लिए एक परिचय तैयार करने के लिए था।[4]

इतिहास के माध्यम से, परमेश्वर ने रोमियों को लिखे पत्र का उपयोग सबसे महत्वपूर्ण सत्यों को पुनर्स्थापित करने के लिए किया जब उन्हे भूला दिया गया था।

---

[4] William Tyndale, "Prologue to Romans," *English New Testament*, 1534.

386 में, अगस्टीन ने रोमियों 13:13-14 को पढ़ने के बाद अपने पाप के जीवन से सम्बन्ध तोड़ने को प्रतिबद्ध किया।

1515 में, मार्टिन लूथर को रोमियों 1:17 का अर्थ समझ में आ गया। उन्होंने देखा कि जो परमेश्वर के दण्ड से बचेगा, वो वही होगा जिसके पास विश्वास है। इस बात ने उन्हें उद्धार के आश्वासन का आधार दिया, जिसकी उन्होंने लंबे समय से तलाश की थी। यह उनके संदेश का आधार बन गया कि केवल विश्वास ही वह मार्ग है जिससे हम बच सकते हैं।

1738 में, जॉन वेस्ले को व्यक्तिगत उद्धार का आश्वासन मिला जिसे वह वर्षों से खोज रहे थे। यह तब हुआ जब वह अन्य युवकों के साथ एक सभा में थे, जो नियमित रूप से यह अध्ययन करने के लिए इकट्ठा होते थे कि कैसे शास्त्रीय मसीहत का पालन किया जाए। जब कोई लूथर की रोमियों की पुस्तक की प्रस्तावना को पढ़ रहा था तो वेस्ली ने हृदय में ''अजीब सी गर्माहट'' को मससूस किया।

उसने गवाही दी ''मैंने महसूस किया कि मैंने मसीह पर भरोसा किया, केवल मसीह पर, मेरे उद्धार के लिये; और मुझे एक आश्वासन दिया गया कि उसने मेरे पापों को दूर कर दिया है, यहां तक की मेरे पापों को भी ले लिया है, और मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से बचाया।"[5]

इन तीनों पुरूषों के लिए, रोमियों की पुस्तक के संदेश का समझना उत्साहपूर्ण प्रचार के लिए एक प्रेरणा थी। यह पुस्तक अभी भी उद्धार के धर्मशास्त्र को समझाकर सेवकाई के लिए एक आधार प्रदान करने के अपने उद्देश्य को पूरा करती हैं।

> इस पत्री का सामान्य उद्देश्य परमेश्वर के शाश्वत, अपरिवर्तनीय उद्देश्य या आदेश को प्रकाशित करना है, जो यह है, ''जो विश्वास करता है वह बचाया जाएगा; जो विश्वास नहीं करता वह दण्डित किया जाएगा''
> (जॉन वेस्ली)

रोमियों की पूरी पुस्तक 1:16-18 में कथनों की व्याख्या हैं।

वचन 1-14 में सब कुछ वचन 15 में कथन की ओर ले जाता है जहाँ पौलुस ने कहा, ''सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं''। वचन 16-18 संक्षिप्त रूप से समझाते हैं कि सुसमाचार क्या हैं और सभी को इसकी आवश्यकता क्यों है। सुसमाचार वह संदेश है जो पापियों को विश्वास के द्वारा उचित ठहरा सकता हैं। सभी को इस संदेश की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि वे परमेश्वर के क्रोध के अधीन है।

---

[5] John Wesley, The Works of John Wesley, (Kansas City: Nazarene Publishing House, n.d.), 103. जॉन वेस्ली, द वर्क्स ऑफ़ जॉन वेस्ले, (कैन्सास सिटी: नाज़रीन पब्लिशिंग हाउस, एन.डी.), 103।

रोमियों की पुस्तक के प्राथमिक उद्देश्य को बताने का एक और तरीका यह है कि यह सुसमाचार की व्याख्या है, जो परमेश्वर की **आज्ञा/आदेश पर आधारित है कि जो कोई विश्वास करता है वह बच जाएगा और जो कोई विश्वास नहीं करता वह** दण्डित **किया जाएगा।**

रोमियों की पुस्तक का चरम उत्कर्ष 10:13-15 में आता है, जहाँ पौलुस वर्णन करता है कि क्यों संदेशवाहक/दूत को सुसमाचार लेने की जरूरत हैं। विश्वास के द्वारा लोग बचाए जा रहें हैं, लेकिन जब तक वे इसे नहीं सुनते तब तक वे विश्वास नहीं करेगें।

रोमियों से सुसमाचार की प्रस्तुति

सुसमाचार को केवल रोमियों की पुस्तक से वचनों का उपयोग करके समझाया जा सकता हैं। सुसमाचार की इस प्रस्तुति को कभी-कभी ''रोमी सड़क'' कहा जाता है।

प्रत्येक आयतों के लिए स्पष्टीकरण का पहला वाक्य याद रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

रोमियों 3:23

"इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।"

प्रत्येक व्यक्ति ने उन चीजों को करके पाप किया है जो वे जानते हैं कि गलत हैं।

यह वचन लोगों की वास्तविक समस्या को दिखाता है। उन्होंने परमेश्वर की बात नहीं मानी; उन्होंने जानबूझकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है। कोई भी व्यक्ति बख़्शा नहीं जायेगा। किसी भी व्यक्ति को हमेशा सही होने के आधार पर पमेश्वर द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता हैं।

इस बात पर और ज़ोर देने के लिए, आप 3:10 ("एक भी धर्मी नहीं है'') और 5:12 (''मृत्यु से सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया'') का उपयोग कर सकते हैं।

रोमियों 6:23

''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन हैं''।

पापीयों ने अनन्त मृत्यु कमायी है, लेकिन परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा उपहार के रूप में अनन्त जीवन को प्रदान करते है।

यह वचन दिखाता है कि पाप इतना गंभीर क्यों है। पाप के कारण, हर व्यक्ति मृत्यु दंड का भागी है। यह अनन्त मृत्यु है और हर पापीं परमेश्वर के न्याय का पात्र है।

हमने जो मृत्यु अर्जित की है, उसके विपरीत परमेश्वर जीवन का उपहार प्रदान करते है, जिसे हमने अर्जित नहीं किया हैं।

रोमियों 5:8

''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा''

परमेश्वर का उपहार हमारे लिए मसीह की मृत्यु के द्वारा प्रदान किया गया है।

परमेश्वर हमें छोडने को तैयार नहीं थे उस न्याय को प्राप्त करने के लिए जिसके लिए हम हकदार थे। क्योंकि वह हमसे प्रेम करते है, उन्होंने हमारे लिए दया को प्राप्त करने के लिए एक मार्ग उपलब्ध कराया। यीशु बलिदान के रूप में मर गए ताकि हम क्षमा किया जा सके। हम उद्धार पाने के योग्य बने इस के लिए परमेश्वर ने हमें द्वारा कुछ करने के लिए हमारा इंतजार नहीं किया - यह हमारे पास आता है जब हम पापी है। उद्धार अच्छे लोगों को नहीं, बल्कि पापींयों के लिए प्रदान किया गया है।

रोमियों 10:9

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर... अपने मन से विश्वास... तू निश्चय उद्धार पाएगा।"**उद्धार की एकमात्र आवश्यकता पापी के लिए यह मानना है कि वह पापी हैं और यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान के कारण परमेश्वर की क्षमा के वायदे पर विश्वास करता है।**

पश्चाताप के बारे में क्या ? अगर कोई व्यक्ति स्वीकार करता हैं कि उसने गलत किया हैं और चाहता है कि उसे माफ किया जाना चाहिए तो इसका तात्पर्य है कि वह अपने पापों को छोड़ने को तैयार हैं।

रोमियों 10:13

''क्योकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा''

उद्धार का प्रस्ताव प्रत्येक व्यक्ति को है।

किसी को भी बाहर नहीं निकाला गया है। अन्य कोई योग्यता मौजूद नहीं हैं।

रोमियों 5:1

''विश्वास से धर्मी ठहरे, हमें परमेश्वर के साथ शांति है''

परमेश्वर के वायदों पर विश्वास करना हमें परमेश्वर का मित्र बनाता है, अब हम दोषी नहीं ठहराए जाते हैं।

परमेश्वर के साथ शांति का मतलब है कि अब हम उसके शत्रु नही हैं, हमारा मेल-मिलाप हो गया है। जो पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है उसे रास्ते से हटा दिया गया है। न्यायसंगत होने का मतलब है कि अब दोषी के रूप में गिने नहीं जाना। विश्वास द्वारा न्यायसंगत होने का मतलब है कि परमेश्वर के वादे पर विश्वास करना हमारी क्षमा के लिए आवश्यक है।

रोमियों 8:1

“सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।"

क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए है, इसलिए अब हम उन पापों के लिए दोषी नहीं ठहरते जो हमने किए हैं।

मसीह ने एक पाप रहित जीवन जीया और क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा न्याय की आवश्यकता को पूरा किया। उसके साथ विश्वास के द्वारा हम पहचाने जाते है और पिता परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किये जाते हैं। परमेश्वर हमारे साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि हमने कभी पाप नहीं किया हैं।

निष्कर्ष

बता दें कि एक पापी को परमेश्वर से प्रार्थना करके बचाया जा सकता है, यह स्वीकार करते हुए कि वह एक पापी हैं और यीशु के बलिदान और पुनरूत्थान के आधार पर क्षमा मांग रहा हैं।

सीखने और अभ्यास के लिए

इस विधि को सीखने और अभ्यास करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि पहले रोमियों में इस्तेमाल होने वाले हर वचन को गोलाकार या रेखांकित करके चिन्हित करें। फिर इसके उपयोग के क्रम को दर्शाने वाले हर वचन के पास एक संख्या डाले। उदाहरण के लिए: पहले इस्तेमाल किए जाने वाले पद के बगल में, संख्या 1 लिखें।

सुसमाचार को प्रस्तुत करने का अभ्यास करें। हर वचन को पढ़े और स्पष्टीकरण दे जो इसके अनुसार है। हर वचन के बाद पहले वाक्य में मौजूद अवधारणाओं को शामिल करना सुनिश्चित करें (ऊपर) । यदि आवश्यक हो तो अन्य वाक्यों का उपयोग करके, जिस भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो, उसे जोड़ें। इस पाठ में दिए गए सटीक शब्दों का उपयोग करना आवश्यक नहीं हैं।

तब तक अभ्यास करें जब तक आप बाइबल को छोड़कर कुछ भी देखे बिना नहीं कर लेते हैं।

कक्षा के अगुए के लिए सूचना: समूह के लिए दो या तीन छात्रों को रोमी मार्ग के उपयोग का वर्णन करना है। समूह को उन विधियों पर चर्चा करनी है जिससे वे प्रस्तुति में सुधार कर सकें। फिर, छात्रों को अभ्यास के लिए जोड़ो में विभाजित करें। हर छात्र को दो बार अलग-अलग श्रोताओं के सामने प्रस्तुति देनी चाहिए।

पाठ 10 कार्यभार

(1) रोमी मार्ग का उपयोग करते हुए, कम से कम तीन लोगों को सुसमाचार प्रस्तुत करें। प्रत्येक वार्तालाप के बारे में एक अनुच्छेद लिखें और जब अगले कक्षा सत्र में आते हो तो उसके विषय में बताने के लिए तैयार रहें।

(2) स्मृति से लिखने के लिए तैयार रहें (केवल अपने पवित्रशास्त्र का उपयोग करके) रोमी मार्ग के पवित्रशास्त्र के संदर्भ और अगले कक्षा सत्र की शुरूआत में हर एक के लिए कम से कम एक स्पष्टीकरण।

(3) अगला पाठ सुसमाचारीय प्रचार के विषय में है। इस पाठ की तैयारी के लिए, प्रचारक प्रवचन की रूपरेखा या सारांश लिखें, जिसका आपने प्रचार किया है, जिसे आपने सुना है, या जिसे आप विकसित करना चाहते हैं। इसे अगले कक्षा सत्र में अपने साथ लेकर आऐ।

.पाठ 10 परीक्षा

रोमी मार्ग सुसमाचार प्रस्तुति में उपयोग किये गए वचनों के संदर्भ लिखे। संदर्भ के नीचे, स्पष्टीकरण का कम से कम एक वाक्य लिखें। वचनों को नहीं लिखना है।

(1) रोमियों ______________

(2) रोमियों ______________

(3) रोमियों ______________

(4) रोमियों ______________

(5) रोमियों ______________

(6) रोमियों ______________

(7) रोमियों ______________

पाठ 11

सुसमाचार प्रचार

परिचय

► एक छात्र को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 1:17-25 पढ़ना है। खोए हुए को बचाने के लिए परमेश्वर का तरीका क्या हैं?

अपने राष्ट्र को छुटकारा देने के लिए यहूदी शक्ति की तलाश कर रहे थे। वे शक्ति के संदेश के साथ शक्ति के संकेतों को चाहते थे ताकि यह साबित हो सके कि यह काम करेगा।

जीवन को समझने और जगत में सफलता के लिए अन्यजातियों को ज्ञान चाहिए था। वे एक संदेश चाहते थे जो यह समझाए कि जो वे चाहते थे उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

क्रूस ने आत्मसमर्पण और बलिदान का प्रतिनिधित्व किया हैं। सत्ता चाहने वाले यहूदियों के लिए, यह कमज़ोरी सा प्रतीत हो रहा था। सांसारिक ज्ञान की इच्छा रखने वाले अन्यजातियों के लिए यह मूर्खता की तरह दिखता था। वास्तव में मसीह की मृत्यु में परमेश्वर की शक्ति और बुद्धि का प्रदर्शन किया गया था। क्रूस परमेश्वर की कमज़ोरी और मूर्खता की तरह दिखता था लेकिन यह मनुष्यों के सर्वोत्तम प्रयासों से बेहतर था।

सुसमाचार का संदेश मानवता की प्राकृतिक, पापपूर्ण इच्छाओं के विरुद्ध जाता है। यह पश्चाताप और परमेश्वर के प्रति समर्पण का आह्वान करता हैं। यह एक मूर्खतापूर्ण संदेश की तरह लगता है, क्योंकि लोग सुनना चाहते हैं कि कैसे वे उस हांसिल कर सकें जो वे चाहते हैं।

लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर ने सुसमाचार का उपयोग करने का चुनाव किया हैं। उन्होंने विश्वासियों को संपर्क/संचार का कार्य दिया हैं। *उपदेश* शब्द का अर्थ केवल भीड़ से बात करने वाले व्यक्ति से नहीं है, बल्कि विभिन्न रूपों में सुसमाचार का संचार करना हैं। अनुच्छेद के विषय का अर्थ यह नहीं है कि सार्वजनिक उपदेश परमेश्वर की चुनी हुई विधि है। विषय यह है कि सुसमाचार परमेश्वर की पद्धति है।

► अनुच्छेद का क्या मतलब है जब वह कहता हैं कि क्रूस का प्रचार जो विश्वास नहीं करते उनके लिए मूर्खता है?

सुसमाचारीय प्रचार को परिभाषित करना

उपदेश शब्द का इस्तेमाल व्यापक अर्थों में परमेश्वर के वचन को संप्रेषित करने के लिए किया जा सकता है। हालाँकि, इस पाठ में, हम अपने सामान्य अर्थ में उपदेश शब्द का उपयोग करेंगे: किसी व्यक्ति को सभा के लिए परमेश्वर का वचन बोलने के लिए।

सुसमाचारीय प्रचार तब होता है जब सुसमाचार को लोगों के एक जन-समुह में प्रस्तुत किया जाता हैं। यह केवल वचनों के किसी भी विषय या अनुच्छेद की प्रस्तुति नहीं है। यह सुसमाचार की प्रस्तुति हैं।

सुसमाचारीय प्रचारक आम तौर पर अपने सुनने वालों को संदेश के प्रति तत्काल प्रतिक्रिया करने के लिए मनाने की कोशिश करते हैं, इस लक्ष्य के साथ कि वे तुरंत विश्वास ले आएं। संदेश उन्हें इस निर्णय पर लाने के लिए तैयार किया गया है।

एक सुसमाचारीय संदेश में दी गई जानकारी को ध्यान से चुना गया है। संदेश का उद्देश्य प्राथमिक तौर पर शिक्षा नहीं है। प्रचारक यह जानकारी प्रदान करने की कोशिश करता है जिसकी आवश्यकता सुननेवालों को उद्धार के लिए निर्णय लेने के लिए है। इस जानकारी में मूल सुसमाचार की व्याख्या शामिल है, सुनने वाले को कैसे जवाब देना है, और निर्णय के संभावित परिणाम क्या है।

प्रचार एक शांत, क्रमबद्ध तरीके से हो सकता है जैसे कि कलीसिया की इमारत में सभा या कहीं और लोगों की भीड़ में जो किसी और उद्देश्य के लिए इकट्ठा हुए हों। भीड़ संदेश के अनुकूल हो सकती है, या नहीं भी हो सकती हैं।

► और अलग-अलग प्रकार की क्या व्यवस्था है जहां आप ने सुसमाचार प्रचार देखा है?

सुसमाचार प्रचार के लिए दिशानिर्देश

क्योंकि एक कलीसिया में प्रचार करने और एक अलग तरह के समूह के लिए प्रचार करने के बीच भिन्नता हैं, इसलिए हम पहले दिशानिर्देश देंगे जो एक कलीसिया में सुसमाचार प्रचार के लिए लागू होंते हैं। इस पाठ में आगे के भाग में, हम कुछ दिशानिर्देंश देंगे जो मैदानी प्रचार या खुले में प्रचार पर लागू होते हैं।

(1) शास्त्र अनुच्छेद का अर्थ प्रतिपादन करें:

परमेश्वर का वचन शक्तिशाली है, इसलिए प्रचारक को इसका उपयोग करने की आवश्यकता हैं। यह आवश्यक नहीं है कि अनुच्छेद लंबा हो या प्रचारक इसका विवरण देने में लंबा समय व्यतीत करें। उसे वचनों का

उपयोग करना चाहिए जो सुसमाचार संदेश का समर्थन करता हो। उसे यह सुनिश्चित करना है कि उसके सबसे महत्वपूर्ण कथन पवित्रशास्त्र पर आधारित हैं, ताकि परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य इस्तेमाल हो। उसे उस अर्थ के साथ उपयोग करने के लिए वचन के भाग का जो इसके संदर्भ के अर्थ से अलग है चयन नहीं करना चाहिए।

(2) उसे पश्चाताप और विश्वास के शर्तों को परिभाषित करना चाहिए:

सुनने वालों को इन शर्तों के बारे में गलतफ़हमी हो सकती हैं। वे सोच सकते हैं कि पश्चाताप का मतलब हैं कि आप अपने जीवन को सही बनाते है ताकि परमेश्वर आपको स्वीकार कर लें। उन्हें यह जानने की ज़रूरत हैं कि पश्चाताप का मतलब है कि आप अपने पापों के लिए इतने खेदित है कि इससे छुटकारा पाने को तैयार हैं।

सुनने वालों को लग सकता है कि विश्वास का अर्थ किसी धर्म में विश्वास करना या धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करना है। उन्हें यह जानने की ज़रूरत है कि बचाने वाला विश्वास उद्धार के लिए मसीह के प्रायश्चित/बलिदान पर पूरी तरह से भरोसा करना है।

(3) इस बात पर जोर दें कि विश्वास के समय में एक व्यक्ति मसीही बन जाता हैं।

मसीही होने का क्या मतलब है और एक व्यक्ति मसीही कैसे बन जाता है, बहुत से लोग इस बारे में गलत विचार रखते है। उन्हें लग सकता हैं कि प्रचारक उन्हें और अधिक धार्मिक बनाना चाहता है या फिर उनकी कलीसिया का हिस्सा बनाना चाहता है। वे सोच सकते हैं कि वह बस यही चाहता है कि वे एक सख़्त जीवन जीना शुरू करें। इस बात पर ज़ोर दें कि विश्वास में आने पर पापी पश्चाताप करता है, क्षमा प्राप्त करता हैं, और परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत रिश्ता शुरू करता हैं।

(4) लोगो के मसीही होने के दावे के लिए गलत कारणों का खंडन करें:

कुछ समुदायों में, ज्यादातर लोग सोचते हैं कि वे मसीही हैं। उन्हें लगता है वे मसीही हैं क्योंकि वे कलीसिया में जाते हैं, अच्छे काम करते हैं, कुछ बातों पर विश्वास करते हैं, या कुछ आत्मिक अनुभव रखते हैं। बदलाव पर जोर देने के अलावा, परमेश्वर के साथ रिश्ता और पश्चाताप के बाद आज्ञाकारिता के जीवन का वर्णन करें।

(5) सुनिश्चित करें कि कलीसिया मे ना आने वाले लोग आपको समझतें हैं:

ऐसे शब्दों का इस्तेमाल न करें जो सिर्फ धार्मिक लोग जानते हैं। उन धार्मिक रीति-रिवाजों का उल्लेख न करें जिन्हें वे नहीं समझते है।

► आपके कलीसिया में उपयोग किए जाने वाले कुछ नियम क्या हैं जो आपके पड़ोसी शायद ना समझ सकें?

(6) क्षमाशीलता, परमेश्वर के साथ रिश्ता, और अनन्त जीवन का प्रस्ताव दें:

ये बचाए जाने के सबसे महत्वपूर्ण लाभ हैं। पापियों पर आने वाले न्याय और अनन्त दण्ड का वर्णन करके पापी को उसकी स्थिति की गंभीरता को दर्शायें।

(7) उन लाभों का वादा करने से बचें जो सुसमाचार में वादा नहीं किए गए हैं:

अगर लोगों को लगता है कि उद्धार के प्रस्ताव में परमेश्वर या कलीसिया से भौतिक लाभ, समृद्धि, बीमारी से चंगाई, या जीवन की स्थिति में सुधार के कुछ अन्य प्रकार शामिल हैं तो वे वास्तव में पश्चाताप किए बिना लाभों को स्वीकार करने का प्रयास कर सकते हैं।

आप समझा सकते है कि जब परमेश्वर किसी व्यक्ति के जीवन पर नियंत्रण रखता है तो वह उनका मार्गदर्शन करता है, आशिष देता हैं, और उनकी समस्याओं में मदद करता हैं। हालाँकि, हमें यह वादा नहीं करना चाहिए कि यदि वे मसीही बन जाते हैं तो उनकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। कुछ लोगों के लिए, सताव के कारण जीवन कठिन भी हो सकता हैं।

(8) स्थानीय कलीसिया सदस्यता के साथ परिवर्तीत व्यक्ति को न जोड़ें:

जैसे ही कोई व्यक्ति वास्तव में विश्वास लाता है उसे कलीसिया की सदस्यता उपलब्ध होनी चाहिए, लेकिन सदस्यता की शर्तों को विश्वास में आने के बाद समझाया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति को उसके पापों के लिए पश्चाताप करने के लिए मनाने की कोशिश करते समय कलीसिया की सदस्यता की आवश्यकताओं के बारे में बात न करें। प्रचारक को सुनने वाले को परमेश्वर का सामना करने की स्थिति पर लाने पर ध्यान देना चाहिए।

► आपके कलिसिया में सदस्यता के लिए क्या कुछ आवश्यकताएं हैं जो उद्धार के लिए आवश्यक नहीं हैं?

(9) परिपक्वता के साथ आने वाले परिवर्तन के लिए आवश्यकताएं निर्धारित न करें:

सुनने वाले से उन पापों का पश्चाताप करने के लिए कहें जिन्हें वह समझता हैं। उसे तब तक जीवन के विस्तृत नियम ना बताएं जब तक उसे मसीही बन कर कुछ समय नहीं हो जाता है, क्योंकि वह समझ नहीं पाएगा। पश्चाताप और विश्वास के लिए बुलाहट पहले ही काफी मुश्किल है। उन कठिनाइयों को न जोड़ें जो किसी व्यक्ति को सुसमाचार को अस्वीकार करने पर मजबूर कर दें।

(10) उन्हें समझाएं आप क्या चाहते है कि वे क्या करें:

यह अंदाजा मत लगाओ कि सुनने वाला जानता है कि उसे प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर से क्षमा मांगनी चाहिए। यह अंदाजा मत लगाओ कि वह जानता है कि आगे कैसे आना है और घुटने टेकने है। प्रतिक्रिया के लिए जब आप सुनने वालों को आमंत्रित करते हो तो उन्हें पूरी तरह से समझाएं कि आप क्या चाहते है कि वे करें। विचार करें कि व्यक्ति के लिए इसे यथासंभव आसान कैसे बनाया जाए जो कलीसिया के वातावरण में घबराया हुआ है।

खोजने वालों के साथ प्रार्थना

लोग कई कारणों से वेदी पर प्रार्थना करने को इकट्ठा हो सकते है। कई बार एक पास्टर लोगों को विभिन्न प्रकार की जरूरतों के बारे में प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित करता हैं। यहां सूचीबद्ध दिशानिर्देश आवश्यक रूप से वेदी पर प्रार्थना करने के सभी अवसरों पर लागू नहीं होतें हैं। ये दिशानिर्देश उन लोगों के साथ प्रार्थना करने के लिए लागू होते हैं जब वे सुसमाचार प्रवचन के बाद निमंत्रण को प्रतिक्रिया देते हैं।

पास्टर को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कलीसिया के कुछ लोग ऐसे लोगों की मदद करने के लिए प्रशिक्षित हो जो उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहें हैं। जब वह सुसमाचार का निमंत्रण देता है तब उसके पास मदद करने के लिए लोग तैयार होने चाहिए।

कभी-कभी एक व्यक्ति जो लोगों के साथ प्रार्थना करने में मदद करना चाहता है वह मदद के बजाय एक बाधा हैं। पास्टर को वेदी पर समस्याओं को देखना चाहिए और मदद के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति नासमझ व्यवहार या गलत परामर्श के साथ वेदी पर प्रार्थना के समय में बाधा डाल रहा हैं तो समस्या को ठीक करने के लिए पास्टर को जो भी आवश्यक हो वह करना चाहिए।

हम मानते हैं कि एक व्यक्ति पश्चाताप, विश्वास और बदलाव का अनुभव तुरन्त कर सकता हैं। यह विश्वास साधकों के साथ प्रार्थना करने की हमारी नीतियों का मार्गदर्शन करता है।

खोज करने वालों के साथ प्रार्थना के लिए दिशानिर्देश

(1) हर खोज करने वाला जो प्रार्थना कर रहा है उसे कम से कम एक परिपक्व विश्वासी मदद करें:

खोजी को प्रार्थना करने के लिए अकेले ना छोड़े और वेदी को भी बिना मदद के ना छोड़े। हम चाहते हैं कि खोज करने वाले की निश्चित जीत हो।

(2) पता करें कि खोज करने वाला प्रार्थना क्यों कर रहा है:

यह मत समझों कि वह उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहा है। एक सुसमाचार उपदेश के बाद भी, लोग कई कारणों से वेदी के पास आते है। प्रार्थना कर रहे खोजकरता को बाधित करने की जरूरत नहीं हैं; लेकिन किसी समय पर, जो विश्वासी उसकी मदद कर रहा है, उसे पूछना चाहिए, ''आप क्या चाहते है कि परमेश्वर आप के लिए करें?'' तब विश्वासी उसके साथ प्रार्थना कर सकता है जो उसे चाहिए।

(3) खोजकर्त्ता को पूर्ण पश्चाताप के लिए प्रोत्साहित करें:

पूछें, ''क्या आप पाप से पश्चाताप करने के लिए तैयार है, और चाहते हैं कि परमेश्वर आपको पाप से मुक्ति दिलायें?'' उसे परमेश्वर को उसका पश्चाताप बताने के लिए प्रोत्साहित करें। उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह अपने पापों को किसाी पास्टर या कियाी अन्य व्यक्ति के सामने कबूल करें, जब तक कि उन लोगों के खिलाफ विशिष्ट अपराध न हों।

(4) खोजकर्त्ता को यह विश्वास दिलायें कि परमेश्वर क्षमा करेगा:

उससे कहें कि वह परमेश्वर से क्षमा मांगे और क्षमा करने के लिए परमेश्वर के वायदे पर विश्वास करें। यदि वह संदेह से जूझता हुआ प्रतीत होता है, तो उसे एक वायदे का वचन दिखाए (1 यूहन्ना 1:9; यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:8)।

यदि खोजकर्त्ता अपने स्वयं के शब्दों में प्रार्थना करने में असमर्थ प्रतीत होता है, तो सहायक उसे प्रार्थना में मदद करने की पेशकश कर सकता है जिसे खोजकर्त्ता दोहरा सकता है। यह प्रार्थना कुछ इस तरह हो सकती है:

''प्रभु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और अनन्त दण्ड के लायक हूँ। मैं अपने पापों के लिए माफी चाहता हूँ और उन्हें छोड़ देने के लिए तैयार हूँ। मैं आपसे मुझको क्षमा करने के लिए कहता हूँ- इसलिये

नहीं कि मैं इसके लायक़ हूँ, परन्तु इसलिये कि यीशु मेरे लिये मर गया। उद्धार के लिए आपका धन्यवाद। इस समय से, मैं आपके लिए जीऊंगा।''

आमतौर पर, अगर एक खोजकर्त्ता को निश्चित जीत के लिए प्रार्थना करने में कठिनाई होती है तो कोई पाप है जिसे व ह छोड़ने के लिए हिचकिचा रहा है। उसे क्षमा के लिए विश्वास नहीं हो सकता है जब तक कि वह वास्तव में पश्चाताप न करें।

(5) अपनी गवाही बताने के लिए परिवर्तित को प्रोत्साहित करें:

यदि खोजकर्त्ता को विजय मिल जाए तो किसी को उसे पूछना चाहिए, ''परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है?'' उसे एक निश्चित गवाही देने के लिए प्रोत्साहित करें। वह मंडली में गवाही दे सकता है, लेकिन उसे कम से कम उन लोगों से कहना चाहिए जिन्होंने उसके साथ प्रार्थना की थी।

(6) उद्धार के लिए मुद्रित विवरण दीजिए:

उद्धार पाने वाले को अपने साथ ले जाने के लिए उद्धार का एक मुद्रित स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। उसे यह समझने में मदद करेगा की क्या हुआ है और वह उसे दूसरों को भी समझाने के लिए मदद करेगा।

(7) शिष्यत्व का पहला चरण व्यवस्थित करें:

शिष्यत्व का पहला चरण आम तौर पर एक पास्टर या परिपक्व विश्वासी के साथ एक बैठक में होगा। सुनिश्चित करें कि उद्धार पाने वाला समझे कि उसे क्या हुआ है। उसके बाद, वह एक छोटे समूह में शामिल हो सकता हैं या नियमित रूप से किसी के साथ मिल सकता हैं।

किसी को उसके परिवार से भी मुलाकात करनी चाहिए, सुनिश्चित करें कि वे विश्वास के बारें में जानते हैं और उन्हें कलीसिया में आमंत्रित करें। उनके साथ सुसमाचार बांटने का एक अवसर हो सकता हैं।

► खोजकर्त्ता के साथ प्रार्थना करने के लिए आपकी कलीसिया में क्या रिवाज हैं? ऊपर सूचीबद्ध चीजों को जोड़ने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है?

बाहर प्रचार करना

बाहर प्रचार करना उन लोगों तक पहुँचने के उद्देश्य से है जो कलीसिया में नहीं आते है। यह मुश्किल है क्योंकि सुनने वाले किसी अन्य उद्देश्य के लिए वहाँ पर है और शायद ध्यान नहीं देगें। वहाँ शोर ओर

अव्यवस्था हो सकती हैं। वहाँ मंडली द्वारा रची गई आराधना का माहौल नहीं होता है जैसे कि एक कलीसिया में होता हैं।

एक बाहरी उपदेशक के लिए एक परम आवश्यकता यह है कि उसके पास एक आवाज होनी चाहिए जो लोगों को सुनने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो, या उसे आवाज ऊंची करने के लिए किसी साधन का उपयोग करना चाहिए।

बाहर प्रचार करने के लिए पहली चुनौती ध्यान आकर्षित करना है। क्षेत्र के लोग जल्दी से फैसला करते हैं कि वे सुनना चाहते है या नहीं। कुछ लोग कुछ ही मिनटों के लिए सुनेंगे। बहुत से लोग केवल एक या दो वाक्यों को सुनेंगे ताकि फैसला कर सकें कि यह सुनने के लायक है या नहीं।

प्रचारक निश्चित रूप से छोटे वाक्यों को इस्तेमाल करे, और हर एक वाक्य सार्थक कथन हो। उसे याद रखना चाहिए कि हर वाक्य का पहला वाक्य होगा जिसे कुंछ सुनने वाले सुनते है। हर वाक्य के साथ एक बिंदु ध्यान आकर्षित करने में मदद करेंगा। यदि वह सुनने के लिए एक समूह प्राप्त करने में सफल होता है, तो वह चित्रण बताने में सक्षम हो सकता है और विषयों को अधिक अच्छी तरह से समझा सकता है।

यदि संभव हो तो, उपदेशक के पास विश्वासियों का एक समूह होना चाहिए। यदि लोग जो गुज़र रहे हैं वे दूसरों को सुनते हुए देखते हैं तो उनके रुकने और सुनने की संभावना अधिक है। यदि ऐसे संगीतकार हैं जो उपदेश देने से पहले संगीत प्रदान कर सकते हैं तो यह आमतौर पर भीड़ को इकट्ठा करने में मदद करता है।

प्रचारक को सुनने वालो को आगे आने के लिए आमंत्रित करना चाहिए और उद्धार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

सहायकों को क्षेत्र में लोगों को मुर्द्रित जानकारी वितरित करनी चाहिए।

► आपके पड़ोस में बाहरी प्रचार के लिए क्या संभव हालात मौजूद हैं?

.कक्षा के अगुए के लिए सूचना

प्रत्येक छात्र को अब अपने साथ लाए गए सुसमाचार उपदेश को देखना चाहिए। उसे विचार करना चाहिए कि यह कैसे सुसमाचार प्रचार के 10 दिशानिर्देशों को पूरा करता है। उसे यह योजना बनानी चाहिए कि इसे *कैसे संशोधित करनी चाहिए।*

कक्षा के लिए प्रत्येक छात्र के उपदेश पर चर्चा करने का समय शायद न *हो, लेकिन उन्हें उदाहरण प्रदान करने के लिए उनमें से कई उपदेश पर चर्चा करनी चाहिए।*

अगले कक्षा के सत्र में पाठ को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। छात्रों को अपने प्रचार के उपदेश प्रस्तुत करने चाहिए और फिर उन पर चर्चा करनी चाहिए। उनके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे उपदेश का पूरी तरह से प्रचार करें*,* लेकिन *5* से *7* मिनट की प्रस्तुति के लिए उन्हें संक्षेप में करें। पाठ *12* का उपयोग अभ्यास सत्र के बाद अगले निर्धारित सत्र में किया जाना चाहिए।

.पाठ 11 कार्यभार

एक ऐसा सुसमाचारित उपदेश विकसित करें जो इस पाठ के दिशानिर्देश का पालन करता हैं। उपदेश को पूरी तरह से लिखना नहीं है, लेकिन मुख्य कथन लिखे जाने चाहिए। चर्चा के लिए इसे अगले कक्षा सत्र में लेकर आए।

पाठ 12
खुले अवसर

परिचय

► क्या हमे पापियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? बाइबल में हमें पापियों के लिए प्रार्थना करने के लिए कहाँ कहा गया है?

बाइबल में ऐसा वचन पाना आसान नहीं है जो सीधे तौर से कहता हो कि हमें पापियों के परिवर्तन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हम जो पाते हैं वह बहुत सारे वचन हैं जो हमें बताते है कि हमें सुसमाचार के प्रभावी प्रसार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (2 थिस्सलुनीकियों 3:1, इफिसियों 6:19, कुलु 4:4, प्रेरि 4:29)

हम जानते है कि हमें सुसमाचार की सफलता के लिए प्रार्थना करने के साथ-साथ पापियों के परिवर्तन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें सब के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा जाता है, जिसमें यह प्रार्थना शामिल है कि पापियों को परिवर्तित किया जाएगा (1 तीमुथियुस 2:1)। लोगों को पश्चाताप (2 तीमुथियुस 2:25) की ओर लाने की कोशिश करने के लिए, हमें बताया गया है, और उस काम में परमेश्वर की मदद के लिए प्रार्थना करना उचित होगा।

पहली पीढ़ी में सुसमाचारीता

जब कलीसिया अपने सबसे अच्छे रूप में होती है तो सुसमाचारीता सहज और स्वाभाविक रूप से घटित होता है। कलीसिया की पहली पीढ़ी प्रेरितों की पुस्तक में वर्णित है, ऐसा लगता है कि हर कोई खुशी से सुसमाचार फैला रहा था।

► एक छात्र को समूह के लिए प्रेरितों 2:46-47 पढ़ना चाहिए।

ज़ाहिर है, कलीसिया की सहभागीता इतनी सशक्त और जीवित थी कि यह स्वाभाविक रूप से दूसरों को आकर्षित करती थीं। यह हमें बताता है कि अगर कलीसिया नए लोगों को आकर्षित नही कर रही है तो इसकी सहभागीता उतनी सशक्त नहीं है जितनी होनी चाहिए।

► एक छात्र को समूह के लिए प्रेरितों 5:42 पढ़ना चाहिए।

प्रेरितों और अन्य लोगों को हर जगह और हर समय सुसमाचार के लिए अवसर मिलते थे। कुछ कलीसियाएं सुसमाचार बांटती नहीं आ रही हैं, और उन्हें समझ नहीं है कि कैसे शुरू किया जाए। वे नहीं जानते कि सुसमाचार के लिए अवसर कैसे प्राप्त करें।

► एक छात्र को समूह के लिए प्रेरितों के काम 8:1-4 पढ़ना चाहिए।

सताव के कारण, कई मसीही यरूशलेम छोड कर अन्य स्थानों में रहने के लिए चले गए थे। उन्होंने सुसमाचार को उन सभी स्थानों पर बांटा जहां वे गए। उनके लिए, सुसमाचार को बांटना मसीही जीवन का हिस्सा बन गया था।

कलिसियाओं के विषय में बहस

आपको उद्धार न पाए लोगों की उपस्थिति में अन्य कलीसिया के विषय में बहस करने से बचना चाहिए। सुसमाचार को बांटते समय अन्य कलीसियाओं की आलोचना न करें। धार्मिक तर्क में सही निष्कर्ष पर आने के लिए उद्धार न पाए लोगों मे आत्मिक विवेक नहीं होता है। जगत के कई लोगों का कहना है कि कलीसियाओं के बीच विवादों के कारण वे मसीहत में विश्वास नहीं करते है।

यदि कोई व्यक्ति सैद्धांतिक मतभेदों के बारे में पूछने पर ज़ोर देता है तो वचन से उत्तर दें, लेकिन उसे सुसमाचार की प्राथमिकता पर वापस लाने का प्रयास करें। आप कह सकते हैं, ''इस तरह के प्रश्न महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बाचाया जाना और परमेश्वर के साथ संबंध महत्वपूर्ण हैं।'' यदि वे आपको एक ऐसे मसीही के विषय में बताते है जिसे वे जानते है, शायद कोई रिश्तेदार या पास्टर तो उस व्यक्ति के सिद्धांत के विषय में आलोचनात्मक बाते न कहने का प्रयास करें।

यदि आपको यह समझाना है कि आपकी कलीसिया अलग क्यों है तो आप कह सकते हैं, ''किसी व्यक्ति के लिए पाप का पश्चाताप करना, क्षमा किया जाना, और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में रहना महत्वपूर्ण है। हमारी कलीसिया उस प्राथमिकता पर ज़ोर देती है, इसलिए हम उन कई कलीसियाओं से अलग हैं जो कुछ और बातों पर जोर देते है।''

कठिन प्रश्न

कुछ मसीही सुसमाचार प्रचार करने से डरते हैं क्योंकि वे कठिन प्रश्न से डरते हैं। सीखते रहना अच्छा है, लेकिन तथ्य यह है कि अधिकांश मसीही सभी कठिन प्रश्नों के जवाब देना नहीं जानते हैं। आपको सभी उत्तरों को जानने की आवश्यकता नहीं हैं।

यदि कोई ऐसा प्रश्न पूछता है जिसका उत्तर आप नहीं दे सकते है तो आप कुछ इस तरह से कह सकते है: ''मुझे उस प्रश्न का सबसे अच्छा उत्तर नहीं पता हैं। हमारी कलीसिया में कोई दूसरा इसका उत्तर देने में मदद कर सकता है। लेकिन मुझे बाइबल पर विश्वास है, और मेरा मानना है कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर को जानों और बचो। मुझे पता है कि आपको कैसे बचाया जा सकता हैं।''

यदि कोई व्यक्ति कहता है, ''मैं बाइबल पर विश्वास नहीं करता,'' या ''मैं परमेश्वर में विश्वास नहीं करता,'' तो दो दो अलग दिशा मे वार्तालाप को आगे ले जा सकते हैं। आप उससे उसकी राय के लिए कारण पूछ सकते है और उसे कुछ प्रमाण देने कि कोशिश कर सकते हैं। दूसरी दिशा यह कह सकते हैं, ''आपने शायद इस विषय में सोचा है और तार्किक निष्कर्ष पर आने की कोशिश की है। लेकिन, भले ही आप बाइबल पर विश्वास न करें मगर एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में आप बाइबल के मूल संदेश को जानना चाहेंगे। क्या मैं आपको दिखा सकता हूँ कि यह क्या है?" ऐसा करने से आप बहस किए बिना सुसमाचार बाँट सकते हैं। परमेश्वर बाद में उसे प्रभावित करने के लिए संदेश का उपयोग कर सकते हैं।

जब आप सुसमाचार प्रचार कर रहे होते हैं, तो आप किसी ऐसे व्यक्ति को मिल सकते हैं, जो बस बहस करना चाहता हो। आपको उसके साथ बहुत समय बर्बाद करने से बचना चाहिए। भले ही आप सभी सही बातें कहें, लेकिन वह शायद सच्चाई को स्वीकार नहीं करेगा। सुसमाचार की मूल बातें बांटने का प्रयास करें, फिर आगे बढ़ें और किसी और से बात करें।

सुसमाचार का बचाव

► एक छात्र को समूह के लिए तीतुस 1:9-11 पढ़ना चाहिए। यह अनुच्छेद क्या कारण देता है कि हमें सुसमाचार का बचाव करना चाहिए?

एक पास्टर को जिन क्षमताओं का विकास करना चाहिए उनमें से एक यह है कि सांसारिक तत्वज्ञान के खिलाफ मसीही सत्य की रक्षा करना। यह विभिन्न कलीसियाओं के सिद्धांत के विषय में बहस करना नही है, पर सुसमाचार के खिलाफ दुनिया का विरोध हैं।

हमें सच्चाई का बचाव करने के कारण न केवल बहस करने वाले व्यक्ति को बदलने की कोशिश करना है, बल्कि उन लोगो की मदद करनी है जो उससे प्रभावित हुएं है। कई लोगों ने अभी तक यह तय नंहीं किया है कि क्या विश्वास करना चाहिए। उन्हें मसीही सच्चाई का बचाव सुनने की आवश्यकता है।

अधिकांश मसीही इस तरह की बहस के लिए पूरी तरह से सुसज्जित नहीं हैं। हर मसीही को जितना हो सके उनता सीखना चाहिए, लेकिन कुछ लोग विशेष रूप से प्रतिभाशाली होते हैं और वे उस काम के लिए तैयार होते हैं।

बहस के दौरान, अपना उद्देश्य दिखाना महत्वपूर्ण है। आप एक प्रतियोगिता जीतने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। आप व्यक्ति से व्यक्तिगत दुश्मन के रूप में नहीं लड़ रहें है। आपको यह दिखाने की ज़रूरत है कि सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आप लोगों की परवाह करते हैं। यदि वह ससुमाचार को नहीं मानता है, तो उसकी आत्मा खो जाएगी। इसलिए आप उसका मन बदलना चाहते हैं। आप कुछ ऐसा कह सकते है, ''मैं चाहता हूँ कि आप परमेश्वर को जानें और बच जाएं, और मुझे डर है कि आप कुछ ऐसा मानते हैं जो आपको परमेश्वर तक नहीं पहुंचाएगा।''

अवसरों को बनाने के हुनर का विकास करना

हमारे पास उस समय के बाइबल में कुछ अभिलेख है जब एक सुसमाचार प्रचारक को सुसमाचार बांटने का विशेष अवसर मिला।

► एक छात्र को समूह के लिए प्रेरितों के काम 8:26-39 पढ़ना चाहिए। एक अन्य छात्र को समूह के लिए कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। इस घटना में परमेश्वर की आत्मा कैसे सक्रिय थी? फिल्लिपुस ने सुसमाचार के अवसर को कैसे पहचाना?

सुसमाचार प्रचारक के सुसमाचार का अवसर पहचानने वाला एक अन्य उदाहरण स्वयं यीशु हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए यूहन्ना 4:7-14 पढ़ना चाहिए। एक अन्य छात्र से कहानी को संक्षेप में पूछा जा सकता है।

यीशु और सामरी महिला के बीच की बातचीत में पारंपरिक संघर्ष, धार्मिक विवाद और जीवन में नियमित कर्तव्य शामिल थे। यीशु ने इस विषय पर ज्यादा समय नहीं बिताया, लेकिन बातचीत को महिला की आत्मिक आवश्यकता की ओर बढ़ाया।

जब आप सुसमाचार बांटना सीख जाते हैं तो आप लोगों के साथ उसे बांटने के लिए अवसरों को देखेगें। कभी-कभी कोई व्यक्ति सुसमाचार सुनने के लिए कह सकता है, लेकिन अवसर आमतौर पर प्रत्यक्ष नहीं होते है।

कुछ मसीही महसूस करते है कि सुसमाचार को बांटना मुश्किल है क्योंकि उन्हें लगता है कि लोग इसे सुनने में रूचि नहीं रखते हैं। उन्हें लगता है कि धर्म के बारे में बातचीत शुरू करना मुश्किल है।

सुसमाचार कई चिंताओं से निपटता है जो लोगों के पास हैं। परन्तु, सुसमाचार को बातचीत में प्रस्तुत करना मुश्किल नहीं हैं।

इस पाठ में, हम आगे उन करणों के विषय में बात करेंगे जो लोगों के सुसमाचार मे रूचि रखने के कारण है।

उद्देश्य की विविधता

उद्धार की पेशकश का जवाब देने के लिए लोगों के विभिन्न उद्देश्य हैं। कभी-कभी गलत उद्देश्य होते हैं, लेकिन कई सहीं उद्देश्य भी होते है।

► सुसमाचार को स्वीकार करने के लिए आपका क्या कारण था? कई छात्रों को अपने परिवर्तन के कारणों का वर्णन करने दें।

यहां विभिन्न उद्देश्य हैं जो लोगों को उद्धार की कामना करने के लिए प्रेरित करते हैं।

- स्वर्ग जाने के लिए, ना कि नर्क (या न्याय का डर)।
- जीवन में पूर्णता और उद्देश्य पाने के लिए।
- सुरक्षा, मन की शांति, और भय से मुक्ति पाने के लिए।
- क्षमा प्राप्ती, दोष से मुक्ति (स्पष्ट विवेक) पाने के लिए।
- पूर्ण और आत्मिक रीति से शुद्ध होने के लिए।
- परमेश्वर के साथ संगति करने (परमेश्वर को जानने) के लिए।
- मसीहीयों के साथ संगति करने के लिए।
- आत्मिक कामना की संतुष्टि के लिए (सच्चा आनंद)।
- पाप से मुक्ति पाने के लिए।
- सत्य को जानने के लिए।

ये परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप के प्रत्यक्ष लाभ हैं। वे सांसारिक चिंताओं के बारे में नहीं है जो अनन्त मूल्यों के साथ टकराव करते हैं। किसी व्यक्ति के पास इन चीजों का अभाव होता है यदि वह परमेश्वर से अलग हो जाता है।

► इस सूची कि ओर देखें और विचार करें कि आपके लिए कौन सी बातें महत्वपूर्ण हैं। आपके परिवर्तित होने से पहले आपको कौन सी बात ने आकर्षित किया? परिवर्तन के बाद आपके लिए कौन सी बातें महत्वपूर्ण बन गयी?

एक उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति अपनी बातचीत में दिखा सकता है कि उसे उद्धार के इन लाभों में से एक बात की आवश्यकता महसूस होती है। सुसमाचार प्रचारक उस ज़रूरत को संबोधित करने के लिए सुसमाचार को बांटने के लिए अपने दृष्टिकोण को अनूकूलित कर सकता है। ऐसे बोले, ''लोगों के पास ______________ नहीं होने का कारण यह है कि वे परमेश्वर से अलग हो जाते है। बाइबल बताती है कि परमेश्वर के साथ रिश्ते में वापस कैसे आना है।''

यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हम किसी ऐसे व्यक्ति को सांसारिक खुशी का वायदा नहीं कर रहें हैं जो मसीही बन जाएगा। एक व्यक्ति जो इस कारण से मसीही बनने का फैसला करता है, वह वस्ताव में पाप का पश्चाताप नहीं कर रहा है और इसलिए, उसे उद्धार का लाभ नहीं मिलेगा। एक और कारण कि हमें सांसारिक सुख का वायदा नहीं करना चाहिए वो ये कि बाइबल मसीहीयों के लिए अच्छी स्थितियों का वायदा नहीं करती है; इसके बजाय, यह सताव का पूर्वानुमान करती हैं (2 तिमुथियों 3:12)।

किस व्यक्ति के लिए मसीह का अनुयायी बनने का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि उसे अपने अपराध और आने वाला न्याय का एहसास होता है। अन्य बात जो उपरोक्त सूची मे किसी व्यक्ति को इस बात का एहसास कराने मे इस्तेमाल की जा सकती है वो यह कि वह परमेश्वर से अलग हो गया है।

वार्तालाप में अवसरों को पहचानना

► सुसमाचार को बांटने का अवसर प्राप्त करने के लिए आपने किस खुले अवसर का उपयोग किया हैं?

► क्या आप में से किसी को भी सुमाचार बांटने का अवसर मिलना मुश्किल लग रहा हैं? आपको इसका कारण क्या लगता है?

कभी-कभी एक अवसर आसानी से आता हैं। ऐसे मामलों में आप बस सुसमाचार को समझाना शुरू कर सकते है। यदि आप उन्हें वचनों को दिखाना चाहते हैं तो आप पूछ सकते है, ''क्या मैं आपके कुछ मिनट ले सकता हूँ कि बाइबल क्या कहती है एक मसीही कैसे बने के विषय में?'' अगर आप मिलाप का चित्र दिखाना चाहते है, तो आप पूछ सकते है, ''क्या मैं आपके दो मिनट ले सकता हूँ यह दिखाने के लिए

कि जो यह चित्रण करता हैं कि पवित्र शास्त्र क्या कहती है कि यह सुनिश्चित करने का तरीका है कि आप बच गए हैं?''

विभिन्न विषयों पर बातचीत में खुले अवसर दिखाई देता है। यहां वर्णित किसी भी बातचीत से खुले अवसर का उपयोग मिलाप चित्र की प्रस्तुति या रोमी मार्ग जैसे वचन से सुसमाचार प्रस्तुति के लिए किया जा सकता है।

► कितने लोगों ने लोगों को अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों के बारे मे शिकायत करते सुना है?

कभी-कभी लोग अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों के बारे में शिकायत करते हैं। उनसे पूछें, "जीवन इतना कठिन क्यों है?" जब वे जवाब देदें, आप कहें "क्या मैं आपको एक चित्र दिखा सकता हूँ जो दिखाता है कि जीवन इतना कठिन क्यों है?" यह कहकर शुरू करें कि परमेश्वर का इरादा हमारे लिए उसके साथ रिश्ते में रहने का था और जीवन को वैसा नहीं बनाना था जैसा वह है। दुनिया पाप से क्षतिग्रस्त हो गई है। चित्र प्रस्तुत करने के लिए आगे बढ़ें।

रोमी मार्ग कि तरह, पवित्रशास्त्र से सीधे एक प्रस्तुति का उपयोग करने के लिए, आप कह सकते हैं, ''बाइबिल बताती है कि जीवन कठिन है क्योंकि सभी ने पाप किया है। पाप संसार में श्राप को लाया है।'' रोमी मार्ग के माध्यम से जारी रखें।

अगर व्यक्ति धार्मिक लग रहा हैं तो आप उसे पूछ सकते है कि उसका सबसे मुख्य विश्वास क्या हैं। या आप उसे पूछ सकते हैं, ''आप क्या मानते हैं कि किस तरह से एक व्यक्ति जान सकता है कि वह स्वर्ग जाएगा?'' उसका उत्तर सुनने के बाद, पूछें ''क्या मैं दो मिनट ले सकता हूँ यह चित्र दिखाने के लिए कि बाइबल इस विषय में क्या कहती है कि एक व्यक्ति स्वर्ग कैसे जा सकता है?''

► क्या आपने लोगों को दुनिया की खराब स्थिति या राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में बात करते सुना है? आप इसे सुसमाचार को बांटने के अवसर के रूप में कैसे उपयोग करेंगे?

यदि कोई व्यक्ति राष्ट्रीय समस्याओं, विश्व की भूख, या गरीबी, या युद्ध के विषय में बात कर रहा है, तो पूछें, ''क्या मैं आपको पवित्रशास्त्र में से दिखा सकता हूँ जो यह समझाता है कि संसार ऐसा क्यों है जैसा वह है?''

उसे दिखाओं कि संसार की हालत ऐसी इसलिए है क्योंकि पापी परमेश्वर से अलग हो गया है। ऐसा संकेत न करें कि उद्धार तुरंत सभी समस्याओं को समाप्त कर देता है, लेकिन यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत उद्धार

परमेश्वर के समाधान की शुरूआत है। किसी दिन एक नया स्वर्ग और पृथ्वी होगी और उन समस्याओं का अस्तित्व उन लोगों के लिए नहीं होगा जिनका परमेश्वर के साथ मेल हुआ हैं।

.खुले प्रश्नों का इस्तेमाल करते हुए

बातचीत शुरू करने के लिए प्रश्नों का इस्तेमाल किया जा सकता है, और फिर बातचीत से सुसमाचार का एक अवसर खुल जाएगा।

सबसे आसान प्रश्न केवल यह पूछने के लिए, ‘‘क्या आप मसीही है?’’ अधिकांश लोग इस सवाल पर नाराज नहीं होते है। यदि वह व्यक्ति कहता है, ‘‘नहीं,’’ आप पूछ सकते है, ‘‘क्या मैं आपको बता सकता हूँ कि पवित्र शास्त्र यह बताती है कि एक व्यक्ति मसीही कैसे बनता हैं?’’

अगर व्यक्ति कहता है, "हाँ, मैं मसीही हूँ," आप बोल सकते है, "ये तो अद्भुत है। आप मसीही कैसे बने?" यदि उत्तर गलत है या व्यक्ति इस बारे मे स्पष्ट नहीं है, आप स्पष्ट करने की पेशकश कर सकते है कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है कि व्यक्ति मसीही कैसे बनता है।

उपरोक्त भाग के प्रश्नों का उपयोग बातचीत के दौरान अन्य प्रारंभिक प्रश्नों के रूप में किया जा सकता है। नीचे कुछ और प्रश्न हैं।

‘‘आपको क्या लगता है जीवन का उद्देश्य क्या है?’’ व्यक्ति को अपनी राय देने दें। जो भी उसके कथनों के विषय में अच्छा है, उसके साथ सहमत हों। और कहे, ‘‘हमारे उद्देश्य का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा परमेश्वर को जानना है। उसने हमें उसके साथ रिश्ते में रहने के लिए बनाया गया है। क्या मैं दिखा सकता हूँ कि परमेश्वर के साथ रिश्ते मे कैसे आना है, इस बारे मे पवित्रशास्त्र क्या कहता है?"

‘‘आपको क्या लगता है कि खुशी की कुंजी क्या है?’’ वे जो भी सुझाव देते हैं आप कह सकते हैं, ‘‘बहुत से लोग जिनके पास वह है बहुत लंबे समय तक खुश नज़र नहीं आते हैं। बाइबल हमें यह बताती है खुशी परमेश्वर से आती है (भजन संहिता 16:11)। क्या मै आपको एक चित्र दिखा सकता हूँ जो यह बताता है कि कैसे एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ रिश्ते बना सकता सकता है?’’

‘‘क्या आप मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करते हैं? आपको क्या लगता है कि यह कैसा है?’’ फिर, ‘‘बाइबल कहती है हर व्यक्ति स्वर्ग या तो नर्क में जाएगा। क्या मै आपको दिखा सकता हूँ बाइबल कि स्वर्ग में कैसे जाए के विषय में क्या कहती है?’’

‘‘आप क्या सोचते है कि बाइबल का मूल संदेश क्या हैं?’’ यह आपको पाठ 9 से चित्र दिखाने का अवसर देता है।

► क्या किसी ने पहले से ही इनमें से किसी एक के समान दृष्टिकोण का उपयोग किया है? इसने कैसे काम किया?

इस पाठ में वर्णित प्रत्येक विधि से हर वर्ग सदस्य सहज महसूस नहीं करेगा। यह संभव है कि प्रत्येक संस्कृति में एक विधि उपयुक्त न हो।

पाठ का उद्देश्य छात्र को खुद कि पहुँच विकसित करने के तरीके को खोजने में मदद करना है।

कक्षा के अगुए के लिए सूचना

अगले पाठ में सुसमाचार पर्चा वितरित करने के लिए निर्देश शामिल है। छात्रों को यह जानना होगा कि वितरण के लिए पर्चे कहाँ से प्राप्त करें। यदि संभव हो तो अगले कक्षा सत्र में सामग्री लाएं।

पाठ 12 कार्यभार

जब आप इस सप्ताह सुसमाचार को बांटना जारी रखते हैं तो इन शुरूआती खुले प्रश्नों में से कुछ को आज़माएं या खुद के विकसित करें। देखें वे कैसे काम करते है और वर्णन का एक अनुच्छेद लिखे। अगले कक्षा सत्र में अपने अनुभव के विषय में बताने के लिए तैयार रहें।

पाठ 13

सुसमाचार के प्रचार के तरीकों को अपनाना

परिचय

► आप क्या सोचते हैं कि सुसमाचार प्रचार का कार्य अब नए नियम के समय से अलग है?

► आप क्या सोचते है कि आपके देश में सुसमाचार प्रचार उस समय जब पहले मिशनरी आये थे से अलग है?

इतिहास में सुसमाचार प्रचार: जॉन विक्लिफ़ और जॉन वेस्ले के उदाहरण

जॉन वाईक्लिफ इंग्लैंड में एक पादरी थे। वह 1324-1384 तक जीवित रहे। उस समय, बाइबल लोगों की भाषा में उपलब्ध नहीं थी। लोगों को इस बात पर निर्भर रहना पड़ता था कि रोमन कैथोलिक चर्च उन्हें क्या सिखाता है। अधिकांश लोग सुसमाचार को नहीं जानते थे। यहां तक कि कई कैथोलिक पादरी भी बाइबल को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। पुजारी धार्मिक अनुष्ठान करते हुए और पैसे मांगते हुए देश की यात्रा करते थे। अधिकांश चर्चों को याजकों द्वारा नियंत्रित किया जाता था जो सुसमाचार का प्रचार नहीं करते थे। वाईक्लिफ और उनके सहायकों ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया। मशीन द्वारा छपाई तब उपलब्ध नहीं थी, इसलिए उन्होंने पवित्रशास्त्र को हाथ से कॉपी किया। उन्होंने जोड़ियों में यात्रा इंजीलवादमांगते थे।

सुसमाचार प्रचार के तरीकों को समाज की स्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। वाईक्लिफ और उनके सहायकों ने सुसमाचार प्रचार के मूल भाग को पूरा किया; वे बाइबल का संदेश लेकर सीधे लोगों तक गए।

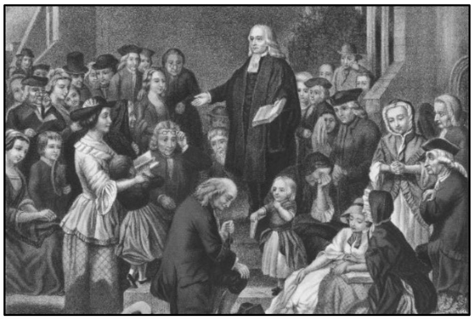

जॉन वेस्ली 1703 से 1791 तक इंग्लैंड में जिये।[6] उस समय एंग्लिकन कलीसिया अमीरों की कलीसिया बन गयी थी। वे कर्मकांडी थे और स्पष्ट सुसमाचार नहीं सिखाते थे। देश के अधिकांश गरीब लोगें का कलीसियाओं में स्वागत नहीं किया गया था और वे सुसमाचार को नहीं जानते थे। वेस्ली एक

---

[6] Image: “John Wesley preaching on his fathers grave”, by Currier & Ives, retrieved from the Library of Congress Prints and Photographs Division, https://www.loc.gov/pictures/item/2002707689/, “no known restrictions.”

एंग्लिकन पास्टर थे, लेकिन वे सुसमाचार को लोगों तक पहुँचाना चाहते थे। एक सुबह वह एक क्षेत्र में गए जहाँ पर कई कोयला खनिक अपने काम की राह पर गुजर रहें थे। उसने प्रचार किया, और कई लोग सुनने के लिए रुक गए। उसके बाद, लगभग हर रोज़अपने जीवन भर उन्होंने बाहर प्रचार किया। उनकी सेवकाई के द्वारा हजारों विश्वास में आये।

► आपके क्षेत्र में सुसमाचार सबसे पहले लाने के लिए किस मिशनरी को याद किया जाता है?

तरीकों को अपनाने की आवश्यकता

2003 में, एक व्यक्ति अपने परिवार के साथ लन्दन में यात्रा कर रहा था और विश्राम करने के लिए एक बाग़ में रूक गया। उसने बाग़ में एक पहाडी पर एक महिला को खड़े देखा। उसके पास एक बाइबल थी और वह बोल रहीं थी। वह क़रीब गया और उसे कुछ धार्मिकता के विषय में बात करते सुना। उसने देखा कि उसका एक मित्र पास में खड़ा था, इसलिए उसने मित्र से पूछा कि क्या हो रहा है। मित्र ने कहा, "हम एक ऐसे समूह का हिस्सा है जिसने वेसली के प्रचार की परंपरा को जारी रखा है। कभी-कभी, हम प्रचार करने के लिए किसी सार्वजनिक जगह पर जाते हैं।" हालाँकि, उस आदमी ने देखा कि महिला एक एसी जगह पर खड़ी थी जहाँ कुछ लोग गुजर रहें थे, कई लोग उसे सुन नहीं सकते थे, और उसकी शैली बाहर के लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रभावी नहीं थी। वह परंपरा को जारी रखने की कोशिश कर रहीं थी, लेकिन वह सब कुछ खो चुकी थी जो मूल रूप से इस पद्धति को प्रभावी बनाती थी।

तरीकों को परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। कभी-कभी लोग यह मानते हैं कि प्रचार करने का केवल एक हीं तरीका है, और वे एक ऐसा तरीका जारी रखते हैं जो अब प्रभावी नहीं हैं। कभी-कभी लोग सोचते हैं कि एक तरीका जो किसी एक जगह प्रभावी था, वह हर जगह प्रभावी होगा, लेकिन यह सच नहीं हैं।

कई स्थानों पर कलीसिया ने घर-घर जाकर प्रचार किया है और उन लोगों के दरवाजे खटखटाए है जिनसे वे अभी तक नहीं मिले है। इस पद्धति के परिणामस्वरूप कई विश्वास में आये, लेकिन यह हर जगह प्रभावी नहीं होगा।

कुछ कलीसिया ने बसें खरीदीं और लोगों को कलीसिया में लाने का स्वागत किया। रविवार की सुबह, वे पूरे आस-पड़ोस में लोगों को इकट्ठा करने के लिए बस चलाते हैं। कई लोगो को ''बस सेवकाई '' के माध्यम से उद्धार में लाया गया, लेकिन यह तरीका हर जगह काम नहीं करेगा।

कई कलीसियाओं ने रविवार को कलीसिया भवन में आने वाली भीड़ को सुसमाचार प्रचारित किया हैं। वे लोगों को वेदी पर घुटने टेकने के लिए आगे आने और उद्धार के लिए प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित करते हैं। हजारों लोगों को इस पद्धति के द्वारा परिवर्तित किया गया है, लेकिन बहुत से बचाए नहीं गए लोग कलीसिया में नहीं आते है। बहुत से लोग सुसमाचार को तब तक नहीं सुनेंगे जब तक कि कोई व्यक्ति इसे व्यक्तिगत रूप से बातचीत में उनके साथ साझा न करे।

प्रेरित पौलुस प्रचारक तरीकों को अपनाने का एक आदर्श था। वह यहूदी आराधनालय में बात कर सकता था क्योंकि वह एक योग्यता प्राप्त यहूदी रब्बी था, और उसने उन्हें समझाया कि यीशु मसीहा हैं। उसने उन स्थानों पर भी बात की, जहाँ लोग दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत करने के लिए एकत्र हुआ करते थे। कभी कभी वह बाजारों में बोलता था। वह अक्सर, घरों में समूहों से बात करता था।

कुछ आधुनिक तरीके

लोगों ने सुसमाचार के विषय में बातचीत शुरू करने के लिए कई अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया हैं। कुछ कलीसियाओं ने सर्वेक्षण प्रश्नों का उपयोग किया है। वे पूरे समुदाय में जाते है और इस तरह के प्रश्न पूछते है: ‘‘आपको क्या लगता है कि कलीसिया को समुदाय में क्या करना चाहिए? मसीह धर्म का सबसे महत्वपूर्ण विश्वास क्या हैं? आप कैसे समझाएंगे कि एक मसीही क्या है? एक व्यक्ति मसीही कैसे बनता है?’’ किसी व्यक्ति की राय को धैर्य से सुनने के बाद, एक मसीही पूछ सकता है, ‘‘क्या मैं कह सकता हूँ कि हम मानते है कि बाइबल एक मसीही के विषय में क्या कहती हैं?’’

कभी-कभी प्रचारक किसी सार्वजनिक स्थान पर एक ऐसी तस्वीर या चित्र बनाकर ध्यान आकर्षित करते हैं जो सुसमाचार को चित्रित करती हैं। अन्य लोग चॉक / खड़िया से चित्र बनाते हैं। कुछ प्रचारक तख़्ते पर रंगीन चित्र लगाते हैं क्योंकि वे एक कहानी बताते हैं।[7]

कुछ कलीसियाएं व्यावहारिक विषयों पर सेमीनार/चर्चासत्र की पेशकश करती हैं जो उनके समुदायों के लोगों को चाहिए। विषय विवाह, बच्चों कि परवरिश, व्यावसाहिक सिद्धांत, स्वास्थ्य या किसी प्रकार के काम का प्रशिक्षण हो सकते हैं। कलीसिया जब समाज के जरूरतों के लिए कार्य करती है तो वे कुछ अच्छा कर रहीं होती है। कलीसिया की ज़िम्मेदारी है कि दैनिक जीवन में बाइबल की सच्चाई को कैसे

[7] इस पद्धति के उदाहरणों के लिए, ओपन एयर प्रचारक वेबसाइटें देखें: http://www.oacgb.org.uk/ और http:// www.oacusa.org/।

लागू किया जाए। हो सकता है कि सेमीनार सीधे सुसमाचार को प्रस्तुत ना करे, लेकिन यह बाइबल की सच्चाई सिखाते हैं और कलीसिया और अड़ोस-पड़ोस के बीच के संबंध को बढ़ाती हैं।

कुछ कलिसियाओं ने एक सार्वजनिक स्थान पर एक अस्थायी प्रार्थना केंद्र स्थापित किया है जहाँ से बहुत से लोग गुजर रहे होते हैं। वे एक पट्टिका लगाते हैं जो कहती है ''प्रार्थना स्थल'' और गुजर रहें लोगों के साथ प्रार्थना करने की पेशकश करते हैं। वे पूछते हैं, ''क्या आपके पास कोई ज़रूरत है कि आप चाहते है जिसके लिए मैं प्रार्थना करू?'' वे बहस नहीं करते हैं और ज़रूरतों के लिए चिंता दिखाते हैं। उनके पास अक्सर सुसमाचार बांटने का अवसर होता है।[8]

सुसमाचार पद्धति का सबसे मूल आवश्यक तत्व यह है कि सुसमाचार को उन लोगों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिन्हें इसे सुनने की आवश्यकता है। क्योंकि परमेश्वर अपने वचन को शक्ति देता है और पवित्र आत्मा सुनने वालों को कायल करता है, एक सुसमाचार प्रचार पद्धति के प्रभावी होने की संभावना होती है अगर यह स्पष्ट रूप से और सीधें सुसमाचार का संवाद करता है।

कलीसिया के लिए हर जगह और हर समय जो चुनौती है वो लोगों का ध्यान आकर्षित करने और पूरे समाज में सुसमाचार का संचार करने का तरीका खोजने की है।

► आपके शहर में कुछ वो तरीके क्या हैं जो कलीसियायें लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं? क्या वे तरीकें सुसमाचार का संचार करते हैं?

मित्रों को सुसमाचार सुनाना

सुसमाचार का सबसे प्रभावी रूप तब है जब कोई व्यक्ति सीधे उस व्यक्ति को सुसमाचार समझाता हैं जो उसे जानता है और उस पर भरोसा करता हैं।

दोस्तों और परिचितों को गवाही देते समय एक मसीही को सबसे अधिक प्रभावी होना चाहिए क्योंकि उन्होंने उसके जीवन का उदाहरण देखा है। यदि उसका उदाहरण अच्छा है तो उनके द्वारा वे उसकी गवाही का सम्मान करने की अधिक संभावना हैं। एक मसीही के लिए अपना विश्वास दिखाना महत्वपूर्ण है ताकि लोगों को हमेशा पता चले कि वह एक मसीही है। उसे बाइबिल पढ़ते समय या प्रार्थना करते समय लोग

[8] तस्वीरों और जानकारी के लिए, निम्नलिखित वेबसाइट देखें: https://prayerstations.org//

देखे तो उसे शर्मिंदा नहीं होना चाहिए। जो लोग उसे जानते हैं उन्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब उन्हें पता चलता है कि वह एक मसीही है।

एक मसीही का सम्मान स्कूल या काम में उसके उदाहरण के लिए किया जा सकता है, यहां तक कि ऐसे लोग भी जो मसीही धर्म को पसंद नहीं करते हैं। यहां तक कि जो लोग उसे सताते हैं, वे भी उसके उदाहरण का सम्मान करेंगे यदि वह अपने कार्यों और व्यवहार में सुसंगत है। कुछ लोग उसके पास प्रार्थना और परामर्श के लिए आएंगे।

व्यक्तिगत सामना

कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें गवाही देने से पहले किसी व्यक्ति को कुछ समय के लिए जानना चाहिए। वे परमेश्वर के विषय में किसी से बात करने से पहले मित्र बनने की कोशिश करते है। यह सच है कि एक व्यक्ति एक मित्र को सुनने की अधिक संभावाना हैं। परन्तु, किसी व्यक्ति में तुरंत चिंता और रूचि दिखाना संभव है। अगर हम यह नहीं सीखते हैं कि हम जिन लोगों से मिलते हैं, उनके साथ सुसमाचार कैसे बांटे तो हम प्रभावी होने के कई अवसरों को खो देगें। ‘‘खुले अवसरों’’ के विषय में पिछला एक पाठ सुसमाचार के लिए बातचीत शुरू करने के तरीके बताता है।

एक व्यक्ति ने कहा, "जब भी मैं किसी के साथ कुछ मिनटों के लिए अकेला होता हूँ तो मैं इसे परमेश्वर द्वारा आयोजित एक बैठक के रूप में उपयोग करता हूँ।" उसका मतलब था कि वह मानता है कि परमेश्वर उसे सुसमाचार के लिए उपयोग करने के लिए मुलाकातें कराता है।

कागज़ पर छपा सुसमाचार

आप सुसमाचार फैलाने के लिए कुछ कर सकते हैं जो कि प्रेरित पौलुस नहीं कर सका।

हमारे पास सुसमाचार फैलाने का एक तरीका है जो कई शताब्दियों तक कलीसिया में नहीं था, यत्रों के द्वारा जानकारी को कागज़ पर छापा जा सकता हैं।

► आपको क्या लगता है कि छपाई उपलब्ध होने से पहले सेवकाई के विषय में क्या अंतर होगा?

छपाई से पहले के समय में सेवकाई की कल्पना करने का प्रयास करें। किसी पुस्तक की प्रत्येक प्रति के लिए एक शिक्षित व्यक्ति को कई दिनों के काम की आवश्यकता होती है क्योंकि उसे हाथ से लिखना होता है। आप सोच सकते हैं कि किताबें अब महंगी हैं, लेकिन कल्पना करें कि एक किताब के लिए आपको दस दिनों के काम के लिए एक कुशल पेशेवर को किराए पर लेने के लिए उतनी ही कीमत चुकानी पड़ेगी।

लगभग किसी के पास भी पवित्रशास्त्र की अपनी प्रति नहीं थी। पास्टर के पास भी शायद पूरी बाइबल नहीं होती थी। कल्पना करें कि आपके पास घर पर बाइबल पढ़ने की संभावना नहीं होती।

पासवानों का प्रशिक्षण ज्यादातर बोलने के द्वारा होता था, और उन्हें वे क्या सुनते थे यह याद रखने के लिए कोशिश करनी पड़ती थी। अन्य स्थानों पर मुद्रित प्रशिक्षण भेजने का कोई तरीका नहीं था। छपाई के बिना, कुछ भी बड़ी मात्रा में लिखा और वितरित नहीं किया जा सकता था।

► वे क्या तरीके हैं जो छपाई द्वारा सुसमाचार के प्रसार में मदद करते हैं?

पर्चे छोटे मुद्रित लेख हैं, जो आमतौर पर सुसमाचार प्रस्तुत करते है। मसीही उन्हें ऐसे लोगों को दे सकते है, जिनके साथ उनका सामना होता है। उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर बड़ी संख्या में भी दिया जा सकता हैं। उन्हें उन स्थानों पर छोड़ा जा सकता हैं जहां लोग उन्हें पढ़ेंगे।

यदि किसी व्यक्ति ने अजनबियों को बहुत प्रचार नहीं किया है, तो पर्चे देना शुरू करने का एक अच्छा तरीका हैं।

पर्चा रंगीन होना चाहिए और उसे उसका एक दिलचस्प शीर्षक होना चाहिए। जब आप सड़क या किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर लोगों को पर्चे बांटते हैं तो मुस्कान के साथ उनका अभिवादन करें। आप कह सकते है, ''नमस्ते, क्या आपको इनमें से एक भी मिला है ?'' यह उन्हें उत्सुक करता है यह देखने के लिए कि यह क्या है।

ऐसा लग सकता है कि ज्यादातर लोग उन पर्चों में दिलचस्पी नहीं रखते है जो आप उन्हें देते हैं। कई व्यक्ति उन्हे बिना पढ़े हीं फेंक सकते है। हालांकि, इसके अच्छे परिणाम भी है। कई लोग पर्चे पर के संदेश के कारण परिवर्तित हो गए हैं। आमतौर पर आप आपके द्वारा दिए गए पर्चे के परिणामो को नहीं जान पाएंगें।

व्यवहारिक जरूरतों को पूरा करना

कभी-कभी लोग जीवन की कुछ व्यवहारिक ज़रूरतों के बारे में चिंतित होते हैं। वे पर्याप्त भोजन या पर्याप्त आश्रय या पर्याप्त चिकित्सा देखभाल से वंचित हैं। उन्हें लगता है कि यह ज़रूरतें उनकी आत्मिक ज़रूरत से अधिक जरूरी हैं। कलीसिया सुसमाचार को बाँटने के तरीके के रूप में व्यवहारिक ज़रूरतों का जवाब दे सकती है। संभावित समस्या यह है कि कलीसिया का ध्यान आत्मिक ज़रूरतों के बजाय सांसारिक ज़रूरतों पर केंद्रित हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे बचाए न गए लोगों का केंद्रित होता है।

> भारत, युगांडा और अन्य स्थानों में सेवको पर आरोप लगाया गया है कि उन्होंने विश्वास में आए लोगों को धन, अकाल राहत, शैक्षिक लाभ और चिकित्सा सेवाएं प्रदान करके या उनके अुनसार अन्य प्रकार के प्रबंधों से ''खरीदा'' है।
> (जे.हर्बर्ट केन, ''द वर्क ऑफ एवैंजलिस्म'')

कलीसिया को व्यावहारिक आवश्यकताओं का जवाब देना चाहिए लेकिन कुछ अभ्यासों को बनाए रखना चाहिए जो आत्मिक प्राथमिकता पर ज़ोर देते है।

1. उन्हें समझाना चाहिए कि जब वे ज़रूरतें पूरी करते हैं, तो वे परमेश्वर के प्यार को साझा कर रहे हैं।
2. उन्हें कलीसिया से अलग एक संगठन बनने के बजाय, विश्वास का परिवार के रूप में एक साथ काम करना चाहिए।
3. उन्हें लोगों को कलीसिया में सहभागिता के लिए प्रतिबद्ध करना चाहिए जहां लोग एक दूसरे की चिंता करते हैं।
4. अनन्त जीवन और आशिष परमेश्वर को जानने के द्वारा आते हैं यह सिखाते हुए सुसमाचार बाँटना चाहिए।

कई संस्थाए ऐसे कार्यक्रमों की पेशकश करती हैं, जो भौतिक आवश्यकताओं का प्रतिउत्तर देते है। वे समुदाय की ज़रूरतों के लिए सेवा करती हैं जहां तक उनके संसाधन अनुमति देते हैं। उनका लक्ष्य सुसमाचार को साझा करने के अवसर पैदा करना है। वे सोचते हैं कि व्यावहारिक तरीकों से लोगों की मदद करने से मित्र बनेंगे और सुसमाचार के लिए ध्यान आकर्षित करेंगे। सूत्र है कार्यक्रम, फिर संबंध, फिर सुसमाचार।

सहायता के कार्यक्रमों के गलत होने के कई तरीके हैं। सहायता देने वाले/प्राप्तकर्ता संबंध को छोड़कर हो सकता है कि कोई और संबंध ना बने। कभी-कभी सुसमाचार दी जाने वाली चीज़ों से अलग लगता है, और लोग सुसमाचार में दिलचस्पी लिए बिना सहायता प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक कि कार्यक्रम में काम करने वाले लोग भी सहायता प्रदान करने में व्यस्त हो जाते हैं और सुसमाचार को साझा नहीं करते हैं।

सूत्र को पलटना चाहिए। कलीसिया को सभी के साथ अपने पहले संपर्क के रूप में सुसमाचार पर ज़ोर देना चाहिए।

जब एक कलीसिया संसार को सुसमाचार प्रस्तुत करती है, तो उन्हें कलीसिया में एक नए जीवन का विवरण शामिल करने के लिए वफ़ादार होना चाहिए। मुक्ति केवल एक निजी, व्यक्तिगत निर्णय नहीं हैं जो किसी व्यक्ति को एक अजीब, नए जीवन में अकेला छोड़ देता हैं। पापी आमतौर पर सुसमाचार को तब तक स्वीकार नहीं करेंगे जब तक कि वे उस विश्वास के समुदाय के प्रति आकर्षित न हों जो सुसमाचार प्रस्तुत करते हैं।

यीशु और प्रेरितों की सेवकाई में, हम देखते हैं कि सुसमाचार परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार है। यह संदेश है कि पापी को क्षमा किया जा सकता है और परमेश्वर के साथ रिश्ते बना सकता है। उसे पाप की शक्ति से छुड़ाया जाता है और एक नए सृष्टि बनाया जाता है। वह विश्वास के परिवार में प्रवेश करता है जहाँ उसके आत्मिक भाई और बहनें उसे प्रोत्साहित करते हैं और उसकी ज़रूरतों में उसकी मदद करते हैं।

कलीसिया को सुसमाचार प्रचार में अपने प्राथमिक उद्देश्य को देखना चाहिए। कलीसिया को लगातार उस पर काम करना चाहिए। सभी को पता होना चाहिए कि आत्माओं के उद्धार के लिए काम करना ही कलीसिया हैं। फिर, कलीसिया सही लोगों को आकर्षित करता है। यह उन लोगों को आकर्षित करता हैं जो सुसमाचार में रूचि रखते हैं। ये लोग कलीसिया के साथ रिश्ते में आते है, इसलिए सुसमाचार का सेवकाई एक संबंध बनाती है।

फिर, कलीसिया उन लोगों की सहायता करती है जो कलीसिया के साथ सम्बन्ध में हैं। हो सकता है कि उन सभी लोगों को अभी तक बचाया नहीं गया है, लेकिन वे रिश्ते में हैं और कलीसिया की सुसमाचार सेवकाई से आकर्षित होते हैं।

तो, उलटा सूत्र है सुसमाचार, फिर संबंध, फिर सहायता (कार्यक्रम नहीं)। कलीसिया केवल सहायता के लिए कार्यक्रमों की पेशकश करने वाला संगठन नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, कलीसिया लोगों का एक

समूह है जो उन लोगों की मदद करता है जो उनके साथ संबंध में हैं। अगर वे कार्यक्रम शुरू करते हैं तो लोग बिना रिश्ते के कार्यक्रमों के लिए आएंगे।

.पाठ 13 कार्यभार

(1) सुसमाचार के उन तरीकों का निरीक्षण करें जो आपके क्षेत्र में कलीसियाओं द्वारा उपयोग किए जा रहें हैं। क्या वे तरीके कलीसिया के बाहर लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सफल होते है ? क्या वे सुसमाचार को स्पष्ट रूप से संवाद करते हैं ? अपनी निरीक्षणों पर 2-3 पृष्ठ लिखें।

(2) कम से कम 100 पर्चे वितरित करें। अपने अनुभव का वर्णन करने वाले कुछ वाक्यों को लिखें।

पाठ 14

बच्चों के बीच सेवकाई

परिचय

> एक यात्री एक छोटे से गाँव में रुका। उसने एक वृद्ध को गली के किनारे बैठे देखा और कहा, “मैंने इस गाँव के बारे में पहले कभी नहीं सुना। क्या यहां कभी कोई महापुरुष पैदा हुए हैं?” बूढे ने कहा, "नहीं, केवल बच्चे।“

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 18:2-6, 10-14 पढ़ना चाहिए। इन वचनों में हम क्या चेतावनियां देखते हैं? आप उन महत्वों का वर्णन कैसे करेंगे जो परमेश्वर बच्चों में देखते हैं?

कभी-कभी लोग कहते है कि बच्चे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अगली पीढ़ी, कलीसिया का भविष्य, और भविष्य के अगुए हैं। वह सब सही है; लेकिन सबसे पहले, बच्चे महत्वपूर्ण है क्योंकि वे लोग है। आमतौर पर वयस्क यह भूल जाते है कि बच्चे अनन्त आत्मा है और अज्ञात क्षमता वाले लोग हैं।

बच्चों की सेवकाई के लिए परमेश्वर की आज्ञा

परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल के लोगों को एक वाचा दी थी। उन्होंने आशीष देने और उनकी देखभाल करने का वादा किया था। उसने उन्हें आज्ञा मानने की आवश्यकता बताई।

परमेश्वर चाहता था कि वाचा सभी पीढ़ियों के लिए हो। उसने उनसे कहा, ‘‘और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। (व्यवस्थाविवरण 6:7)

परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के लिए बच्चों का पालन-पोषन करना वाचा के लिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि परमेश्वर की कई आशीष सशर्त थी और उनके लोगों की निरंतर आज्ञाकारिता पर निर्भर थी। अगर अगली पीढ़ी ने परमेश्वर के प्रति वफ़ादार और आज्ञाकारी होना नहीं चुना, तो वे उसके साथ रिश्ते के लाभों को खो देंगे। इसका मतलब था कि बच्चों का सावधानीपूर्वक अध्ययन आवश्यक था।

► आपको क्या लगता है कि इज़रायली यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकते थे कि उनके बच्चे परमेश्वर का अनुसरण करने का निर्णय लेते ?

परमेश्वर ने उन्हें अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए कुछ दिशाएं दीं।

‘‘और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी चर्चा करके अपने लड़केबालों को सिखाया करना। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना “(व्यव 11:19-20)

परमेश्वर क्या संकेत दे रहें थे? उन्हें लग्न से, निरंतर, और लगातार पढ़ाना था, न कि कभी-कभी। उन्हें दृश्यमान स्थानों पर परमेश्वर की व्यवस्था की याद दिलाना था। उन्हें हर जगह पवित्रशास्त्र देखना था। उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं को कभी नहीं भूलना था या उनकी उपेक्षा नहीं करनी थी।

निरंतर शिक्षण का अर्थ था कि उनके पास परमेश्वर के नियम के विपरीत सजावट या मनोरंजन या व्यवहार नहीं होगा।

इसलिए, ये पद इस बात पर ज़ोर देते हैं कि माता-पिता अपने बच्चों को लगातार और निरन्तर परमेश्वर के मूल्यों को सिखाने और उन शिक्षाओं और उदाहरणों से बचाने के लिए जिम्मेदार हैं जो इसके विपरीत कार्य करेंगे।

► यह आज्ञा माता-पिता को दी गई थी। हमें कलीसिया की सेवकाई में क्या लागूकरण करना चाहिए?

सबसे पहले, हम जानते हैं कि बच्चों का प्रशिक्षण सबसे पहले माता-पिता की ज़िम्मेदारी है। कलीसिया को माता-पिता को यह सिखाना चाहिए कि अपने बच्चों को कैसे पढ़ाया जाए। हमें यह कभी नहीं मानना चाहिए कि बच्चों को केवल कलीसिया से ही आध्यात्मिक शिक्षा मिलनी चाहिए क्योंकि माता-पिता ऐसा नहीं कर सकते हैं।

दूसरा, कलीसिया को जितना संभव हो सके अपने परिवार के संदर्भ में बच्चों की सेवा करनी चाहिए। उनके माता-पिता की मदद करके बच्चों की मदद करें। सुसमाचार प्रचार करते समय, कलीसिया को परिवारों को कलीसिया की ओर आकर्षित करने का प्रयास करना चाहिए।

कुछ बच्चे गैर मसीही घरों से कलीसिया मे आते हैं और उद्धार पाते हैं। जब ऐसा होता है, कलीसिया को परिवार को सेवकाई करने का प्रयास करना चाहिए। यदि माता-पिता प्रतिउत्तर नहीं देते हैं तो कलीसिया को बच्चों के लिए एक आत्मिक परिवार होना चाहिए। कलीसिया बुजुर्ग रिश्तेदारों की तरह होनी चाहिए जो आत्मिक देखभाल दिखाते हैं।

बच्चों के लिए कलीसियाओं की सेवा का मूल्यांकन

► आप किसी विशेष कलीसिया में बच्चों की सेवा की सफलता का मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं?

बच्चों के लिए आपकी सेवकाई जरूरी नहीं कि सफल हो, भले हीं . . .

- आपके शिक्षकों में बहुत क्षमताएं है।
- बच्चों और शिक्षकों की संख्या बढ़ रहीं हैं।
- बच्चे बाइबल की जानकारी हासिल कर रहे हैं।
- शिक्षक उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का उपयोग करते हैं।
- बच्चे सेवा का आनंद लेते है।

यदि बच्चों की सेवकाई सफल होती है तो वे विशेषताएँ मौजूद होनी चाहिए। अगर सेवकाई में उनकी कमी हो, तो समस्याएं होंगी। हालाँकि, सेवकाइ के लिए यह संभव है कि उन विशेषताओं में से कुछ, या सभी हों, लेकिन अभी भी विफल होंगी।

बच्चों के लिए आपकी सेवकाई सफल हैं अगर...

- बच्चे परिवर्तित हो जाते हैं और उनके पास उद्धार का आश्वाशन होता है
- बच्चें धीरे-धीरे आत्मिक रूप से परिपक्व हो रहे हैं।
- जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते है, वे मसीही सिद्धांतों का पालन करते है।

आपकी सेवा एक बच्चें के साथ सफल नहीं हुई है जो...

- मसीही नहीं है।
- संसारिक आदर्शों चुनता हैं।
- जैसे ही वह बढ़ते जाता है गंदे मनोरंजन और रिश्तों में बढ़ता हैं।
- अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को अस्वीकार करता है और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का पालान करता है।

परमेश्वर के सत्य से मेल खाने के लिए जीवन को आकार देना शिष्यत्व का कार्य है। यह एक व्यक्ति को यीशु के परिपक्व अनुयायी के रूप में विकसित करना हैं। परिवर्तन का क्षण किसी व्यक्ति के विचार स्वरूप, दृष्टिकोण, मान्यताओं और जीवन शैली में परमेश्वर की सच्चाई को स्वचालित रूप से एकीकृत नहीं करता है। सत्य के एकीकरण में समय लगता है। यही शिष्यत्व का वास्तविक कार्य है।

बच्चों की सेवकाई के लिए पहली आवश्यकता

► आपको क्या लगता है कि बच्चों की सेवकाइ के लिए पहली चीज़ क्या है?

बच्चों के लिए एक सेवकाई जल्दी ही भाग लेने वालों का एक समूह बनाता है जिसमें बच्चे और वयस्क शामिल होते हैं। उस समूह में स्वभाविक अगुए होते हैं, जो लोग अपने व्यक्तित्व द्वारा दूसरों को प्रभावित करते हैं, भले ही वे आत्मिक पदों पर न हो। वयस्कों के मध्य और बच्चों के मध्य स्वभाविक अगुवे हैं।

सेवा के लिए पहली आवश्यकता एक साकारात्मक आत्मिक वातावरण के साथ एक मसीही वातावरण हैं। वहाँ आप उन मसीहियों का पोषण कर सकते है जो मानसिक, शारीरिक, आत्मिक और सामजिक रूप से अपरिपक्व हैं।

इसका मतलब है कि वयस्क ऐसे लोग होने चाहिए जो आध्यात्मिक उदाहरण हों। आप बच्चों की सेवकाई के लिए ऐसे लोगों का उपयोग नहीं कर सकते जो गंभीर मसीही नहीं हैं। आप उन बच्चों को शामिल नहीं कर सकते जो आपके संदेश को अस्वीकार करने के लिए दूसरों को बहुत प्रभावित करते हैं।

बच्चों के लिए आपकी सेवकाइ पहले से ही असफल हो रही है अगर...

- वयस्क जो सेवकाई में मदद कर रहे हैं वे एक विशेष योग्यता या अन्य कारण से हैं, लेकिन अच्छे आध्यात्मिक उदाहरण नहीं हैं।
- आध्यात्मिक बातों में रुचि न रखने वाले बच्चे समूह की बातचीत और सामाजिक मेलजोल पर हावी रहते हैं।
- सभी आत्मिक गतिविधियों का नेतृत्व केवल वयस्कों द्वारा किया जाता है जिसमें बच्चों के द्वारा कोई महत्वपूर्ण भागीदारी नहीं होती है।
- केवल कुछ बच्चे ही सहयोग करना चाहते हैं और आत्मिक रूचि दिखाते हैं, और वे सामाजिक रूप से अन्य लोगों के द्वारा स्वीकार नहीं किए जाते हैं।

बच्चों के समूह को देखे और खुद से ये प्रश्न पूछें। अगर एक नया लड़का हमारी सेवा में आना शुरू हो जाता हैं तो वह समूह में कौन से बच्चे का अनुसरण करेगा? यदि एक नई लड़की को नामांकित किया गया तो वह किसका अनुसरण करेगी? क्या वो प्रभाव अच्छे होंगे या बुरे?

सेवकाई की पहली आवश्यकता एक सकारात्मक मसीही वातावरण है। बच्चों की सेवकाई को इस पहली आवश्यकता के साथ शुरू किया जाना चाहिए। यदि सेवकाई पहले ही इसे खो चुकी है, तो उसे किसी तरह एक नई शुरुआत करनी चाहिए, अन्यथा यह सही उद्देश्य को प्राप्त नहीं करेगा।

संचार जीवन का सिद्धांत

परमेश्वर का ज्ञान संबंध के माध्यम से आता हैं।

जब परमेश्वर ने याकूब से बात की तो उसने खुद को पहचान लिया। उसने यह नहीं कहा, ''मैं ब्रह्मांड का परमेश्वर हूँ,'' या ''मैं संसार को बनाने वाला परमेश्वर हूँ '', भले ही इनमें से कोई भी कथन सत्य होता। उसने कहा, ''मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ '' (उत्प 28:13)। परमेश्वर ने लोगों के द्वारा अपने आप को प्रगट किया।

अब्राहम विश्वास का व्यक्ति बन गया और उसके वजह से अन्य लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया। उसके दास एलियाज़र ने अपने स्वामी अब्राहम के परमेश्वर से प्रार्थना की (उत्पत्ति 24:12)।

ऐसे लोग होने चाहिए जो परमेश्वर को बेहतर जानते हों क्योंकि वह आपका परमेश्वर हैं।

कभी-कभी हम यह मान लेते हैं कि शिष्यता केवल लोगों को बता रही है कि उन्हें क्या जानना चाहिए और उन्हें क्या करना चाहिए। ऐसा नहीं है। सबसे पहले, आपको उन्हें एक ऐसा जीवन दिखाना होगा जिसका वे अनुसरण करना चाहते हैं। अगर वे आपकी तरह जीना चाहते हैं, तो वे आपके निर्देशों को सुनेंगे कि यह कैसे करना है।

शिष्यता जीवन का संचार है। एक जीवन शैली, अपने उद्देश्यों और मूल मूल्यों के साथ, एक शिष्य से शिष्य में स्थानांतरित की जा रही है।

जीवन का स्थानांतर का सिद्धांत यह कहता है कि शिष्यता तब होती है जब एक शिक्षक अपनी जीवनशैली, उसके प्रेरणास्थान और मौलिक मूल्यों को, छात्र में समाहित करता है।

पहली सदी के यहूदी रब्बियों ने समझा कि शिष्यता जीवन का स्थानांतर था। जब एक युवक रब्बी का शिष्य बनना चाहता था तो वह रब्बी से उसे स्वीकार करने के लिए कहता था। यदि वह स्वीकार करता, तो वह रब्बी के जीवन को साझा करना शुरू कर देता। अधिकांश समय उसके साथ रह कर, वह न केवल उसके सिद्धांत को सीखता बल्कि जीवन के लिए उसके दृष्टिकोण को भी सीखता।

यीशु ने उस वक्त के रिवाज़ो से हटकर उन लोगो को चुना जिन्होंने शिष्य बनने की मांग नहीं की। लेकिन, उन्होंने जीवन हस्तांतरण के उद्देश्य से एक साथ जीवन साझा करके चेले बनाने के रिवाज का पालन किया।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, उसके कुछ शिष्यों को गिरफ्तार कर किया गया था और उसी अदालत के सामने ले जाया गया जिसने उसे दोषी ठहराया था। सेन्हद्रिन ने शायद सोचा होगा कि उनकी समस्याएं यीशु की मृत्यु के बाद से खत्म हो गई थी। उनको लगा कि थोड़ा बहुत धमकाना यीशु के अनुयायियों को चुप कराने के लिए पर्याप्त होगा। जब उन्होंने शिष्यों की जाँच की, तो वे देख सकते थे कि वे उच्च शिक्षित पुरुष नहीं थे, निश्चित रूप से दरबार के किसी भी सदस्य से कम शिक्षित थे। लेकिन, पवित्रशास्त्र कहता है कि महासभा ने उन पर ध्यान दिया कि वे यीशु के साथ थे (प्रेरितों 4:13) । यीशु ने उन पर अपनी जीवन की मुहर लगा दी थी।

उन्हों ने यीशु के चेलों में यीशु के बारे में क्या देखा ? क्या यह उनका व्यवहार या बोलने का तरीका था ? हो सकता है, लेकिन वहाँ उससे अधिक था। उन्होंने एक साहस देखा जो दिव्य बुलाहट की भावाना से आया था। उन्होंने किसी भी कीमत पर सत्य के प्रति एक स्थिर प्रतिबद्धता देखी। उन्होंने अधिकार के लिए सम्मान, लेकिन समझौते और पाखंड का तिरस्कार देखा। निश्चित रूप से वे भ्रष्ट राजनेता और धार्मिक पाखंडि हिल गए होंगे क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि उनकी समस्याएं अभी शुरू हुई हैं। यीशु ने शिष्यत्व के माध्यम से अपने प्रभाव को कई गुना बढ़ाया और चिरस्थायी कर दिया था।

डॉक्टर पॉल ब्रांड अपने कुछ युवा मेडिकल छात्रों का अवलोनक कर रहें थे, जब वे भारत के एक अस्पताल में मरीजो की जांच और निदान का अभ्यास कर रहे थे। जब उन्होंने उनमें से एक छात्र को एक मरीज के साथ सौम्य व्यवहार करते देखा तो वह प्रशिक्षु के चेहरे पर आया एक खास भाव से आश्चर्यचकित हो गए। वह खास भाव पूरी तरह से इंग्लैंड में डॉ. ब्रांड को प्रशिक्षित करने वाले सर्जन डॉ. पिल्चर के चेहरे से मेल खाती था। डॉ. ब्रांड ने प्रशिक्षुओं को समझाया कि उन्होंने इस तरह के आश्चर्य के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की थी क्योंकि उन्हें पता था कि डॉ. पिल्चर कभी भारत नहीं आए थे, और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि प्रशिक्षु उनकी नकल कैसे कर सकते हैं। अंततः प्रशिक्षु में से एक ने कहा, "हम किसी भी डॉक्टर पिल्चर को नहीं जानते, लेकिन डॉक्टर ब्रांड यह आपका भाव था जिसे उसने पहना था।"[9]

यह वही है जो आप सिखाते हैं जब आप यह सिखाने की कोशिश नहीं कर रहे होते हैं कि इसका सबसे ज्यादा असर होगा। आप सबसे ज्यादा तब सिखाते हैं जब आप कुछ सिखाने की कोशिश नहीं कर रहे

---

[9] Paul Brand and Philip Yancey, In His Image. (Grand Rapids: Zondervan, 1984), 18-19 (पॉल ब्रांड और फिलिप यैंसी, इन हिज़ इमेज (ग्रैंड रैपिड्स: जोंडरवन, 1984), 18-19)

होते हैं। जैसा कि किसी ने कहा हैं, ‘‘आप जो कहते है उसके द्वारा थोड़ा सिखाते हैं, जो आप करते है उससे अधिक, और जो आप है उससे सबसे अधिक।’’

अपने उदाहरण की शक्ति से सावधान रहें। आप हमेश सिखा रहे हैं। आप ज्यादातर अपनी जीवन शैली द्वारा शिष्य बनाते है।

जिस तरह से आप अपनी समस्याओं का जवाब देते हैं, आप उसे दिखाते हैं कि उसकी समस्याओं का जवाब कैसे देना है।

बच्चों की मदद करने के लिए दयालुता, शिष्टाचार और धैर्य महत्वपूर्ण हैं। कुछ लोग दूसरों की तुलना में बच्चों के साथ दयालु, विनम्र और धैर्य रखने में अधिक सक्षम होते हैं।

यदि आप पूरा ध्यान देते हैं आप दिखाते हैं कि आप व्यक्ति को महत्व देते हैं। जब आप उससे बात करते हैं तो जल्दबाजी न करें। इस बात पर विचार करे कि आपकी देहभाषा क्या कह रही है, जब आप पीछे मुड़ रहे हैं, अपने अगले काम पर जा रहे हैं, बात करते समय किसी चीज़ पर काम कर रहे हैं, या अपना ध्यान किसी और पर लगा रहे हैं।

सुनने की अच्छी आदतों का अभ्यास करें। अच्छे सुनने के लक्षण हैं आँख से संपर्क, एकाग्र अभिव्यक्ति, विकर्षणों को नज़रअंदाज़ करना, और वक्ता के हास्य या अन्य भावनाओं पर प्रतिक्रिया करना।

यदि आपको वास्तव में जल्दी करना है और सुनने के लिए रुक नहीं सकते हैं, तो आप समझा सकते हैं। यह उन्हें नाराज नहीं करेगा यदि आप आमतौर पर उन्हें वह ध्यान देते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। यदि सामान्य तौर पर आप उनके लिए समय निकालने में बहुत व्यस्त महसूस करते हैं, यह सोचते हुए कि आपको "कुछ करने की आवश्यकता है," तो आपको रुकने और विचार करने की आवश्यकता है कि आपका वास्तविक कार्य क्या है।

► कौन से बच्चे आपके जीवन का हिस्सा हैं? वे कौन से कुछ तरीके हैं जिनसे आप उन्हें दिखा सकते हैं कि वे महत्वपूर्ण हैं? क्या आपकी कुछ आदतें हैं जिन्हें आपको बदलना चाहिए?

परमेश्वर के लिए हमारी उपलब्धता हमारी क्षमताओं से अधिक महत्वपूर्ण है। परमेश्वर को हमारी क्षमताओं से अधिक हमारी उपलब्धता की आवश्यकता हैं। उसकी बुलाहट को पूरा करने के लिए परमेश्वर अवश्यक क्षमताओं को देगा।

युवा लोग कई बातों में अस्थिर रहते है। एक दिन से अगले दिन तक वे आत्मिक प्रगती होने से लेकर विद्रोही तक, उदार से स्वार्थी तक, या परिपक्व से लेकर बचकाने तक बदल सकते हैं। ऐसा इसलिए नहीं हैं क्योंकि वे पाखंडी हो रहें है। वे अभी भी विकास कर रहें हैं, और उनका व्यक्तित्व स्थिर नहीं हैं।

> जब किसी व्यक्ति में युवा के प्रति सहानुभूति नहीं होती है तो पृथ्वी पर उसकी उपयोगिता खत्म होने पर होती है (जॉर्ज मैकडोनाल्ड)।

युवा लोग अस्थिर होते हैं, लेकिन उन्हें आपके स्थिर रहने की आवश्यकता है आपकी अपेक्षाओं में। यदि उनके बुरे दिनों में आप उनसे कहते हैं कि वे कभी किसी के लायक नहीं होंगे, तो आप उनकी खुद से अपेक्षा कम कर देते हैं। उन्हें अभी तक नहीं मालूम कि वे क्या होने जा रहें है, और आपके मूल्यांकन का प्रभाव उन पर पड़ता हैं।

उनके जीवन के लिए परमेष्वर की विशेष योजना के बारे में अधिक बात करें। उन्हें बताए की परमेश्वर ने हर एक को विशेष योग्यताएं दी है। परमेश्वर के इच्छा को खोजने की संतुष्टि के विषय में बताएं।

नेतृत्व क्षमता वाले एक युवा व्यक्ति के पास बहुत सारे विचार हो सकते हैं लेकिन उनके लिए बुरी बातों से दूर रहना मुश्किल होता है। परिपक्वता का एक पहलू अच्छे विचारों और बुरे लोगों के बीच अंतर करने की क्षमता हैं। उसकी बुद्धि सीखने में मदद करें, लेकिन विचार रखने से उसे निरूत्साहित न करें।

इन सबसे ऊपर, याद रखें कि परमेश्वर के पास हर व्यक्ति के लिए परम योजना हैं, और वह इसे पूरा करने के लिए काम कर रहा हैं। विवेक/सूझ-बूझ के लिए प्रार्थना करें ताकि आप छात्र के लिए परमेश्वर की विकास की योजना के साथ काम कर सकें। छात्र के जीवन में अनुग्रह और भविष्य के चमत्कार के लिए प्रार्थना करें जो उसे सही दिशा में बदल देगा।

.शिक्षा विधियों को सुधारना

► एक अच्छी शिक्षा शैली की कुछ विशेषताएं क्या हैं? जब आप किसी को पढ़ाते देखते है तो आप कैसे जानं पाएगें कि वह एक अच्छा शिक्षक हैं ?

शिक्षक के पास शिक्षा शैली का नियंत्रण होता हैं। शैली के कई पहलू है जिसकी शिक्षक को सावधानीपूर्वक योजना बनानी चाहिए।

.(1) निर्देश की दर

लोग पतली गर्दन वाले फूलदान की तरह होते हैं। यदि आप तेजी से उड़ेलेंगे, तो सब कुछ अंदर नहीं जाएगा। यदि आप जानकारियों को बहुत जल्दी सिख देते हैं, वे उन्हे सीख नहीं पाएंगे। जब एक व्यक्ति नई बातों को सिखाता है, वह उसे उन से जोड़े जिसे वह पहले से जानता है। उसे यह भी सोचना है कि इन जानकारियों को अपने जीवन मे कैसे लागू करे। इसलिए, कुछ भी जानकारी सीखने की व्यक्ति की एक गति सीमा होती है।

कई बिंदुओं को कवर करने के बजाए जिन्हें वे भूल जायेंगे, बेहतर होगा कि एक अविस्मरणीय बिंदु तैयार करें। उनके लिए यह सीखना बेहतर है कि वास्तव में एक प्रमुख अवधारणा को कैसे लागू किया जाए, न कि उन सूचनाओं को सुनने के लिए जिनमें वे कोई महत्व नहीं देखते हैं।

.(2) समूह चर्चा

अधिकांश लोगों को सीखते समय दूसरों के साथ कुछ चर्चा करने की आवश्यकता होती है। उन्हें प्रश्न पूछने और अपने स्वयं के शब्दों में एक अवधारणा को दोहराने में सक्षम होने की आवश्यकता होती है। यदि शिक्षक की शिक्षण शैली श्रोताओं से बातचीत की अनुमति नहीं देती है, तो वे उतना नहीं सीखेंगे।

आप एक प्रश्न के साथ एक विषय का परिचय दे सकते हैं, जैसे "यह महत्वपूर्ण क्यों है...?" या "सबसे महत्वपूर्ण बात जो आप जानते हैं...?" परिचयात्मक चर्चा पर अधिक समय न लगाएं, बल्कि इसका उपयोग उनकी रुचि जगाने के लिए करें।

कुछ जानकारी प्रस्तुत करने के बाद, आप एक प्रश्न पूछ सकते हैं जो उन्हें अवधारणा को अपने तरीके से समझाने के लिए तैयार करें। उदाहरण के लिए, ''कहानी में उस व्यक्ति ने जो गलती की वह क्या थी...?'' या ''हमारे लिए यह महत्वपूर्ण क्यों है...?'' बजाय ऐसे प्रश्नों के जिनका उत्तर हाँ या ना में दिया जाए, ऐसे प्रश्न पूछे जिनका उत्तर स्पष्टीकरण के साथ दिया जाए। प्रश्न इतने आसान होने चाहिए कि उनमें से अधिकांश को बच्चों से अच्छे उत्तर मिलें। यदि उनके उत्तर आमतौर पर गलत होते हैं तो वे रुचि खो देंगे।

- किसी छात्र पर कुछ निजी बात साझा करने के लिए दबाव न डालें। इसके बजाय, ऐसा माहौल बनाने की कोशिश करें जिसमें वह व्यक्तिगत रूप से साझा करने के लिए स्वतंत्र महसूस करे।

- कुछ खास लोगों को पूरी बात करने की अनुमति न दें। आप एक चुपचाप रहने वाले सदस्य को प्रश्न निर्देशित कर सकते हैं: "आप क्या सोचते हैं, सूरज?" आपको दूसरों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए: "बाकी आप क्या सोचते हैं?"
- समूह को अनदेखे करते हुए कक्षा के लोगों को अपनी चर्चा करने की अनुमति न दें।
- जो बच्चा बोल रहा है उसे भी किसी को बाधित करने की अनुमति न दें।
- आलोचना करने से पहले हर तरह से हर टिप्पणी की पुष्टि करने की कोशिश करें। यदि इसे सुधार की आवश्यकता है, तो इसे विस्तारित करके सही करने का प्रयास करें।

(3) प्रासंगिकता

हमेशा अपने आप से सवाल पूछें, ''यह सामग्री क्यों मायने रखती हैं,'' यदि आप नहीं जानते हैं तो वे भी नहीं जानेंगे। इससे उनमे क्या फर्क पड़ना चाहिए? क्या ऐसे विशिष्ट लागूकरण हैं जो उन्हें अपने जीवन में करने चाहिए? यदि आप कोई नहीं सोच सकते हैं, संभवतः वे भी नहीं सोच पाएंगे।

यदि वे देखते हैं कि विषय उनके लिए प्रासंगिक है, तो वे बेहतर सुनेंगे। कक्षा को नियंत्रित करने के लिए अनुशासन बनाए रखने की बजाय उसे रोचक बनाने पर अधिक ध्यान दें।

(4) अभिप्राय

आप जो सत्य सिखा रहे हैं उसका परिणाम दिखाइए। क्या होता है जब लोग इसे जानते हैं और इसका पालन करते हैं? क्या होता है जब लोग इस सच्चाई को ठुकरा देते हैं।

उन्हें महान विषयों के साथ प्रेरित करें। छोटी-छोटी बातों पर ज्यादा समय खर्च करने से बचें। उन्हें दूसरों के बारे में कहानियां बताएं जो आपके द्वारा साझा की जा रही सच्चाई से जीते हैं। वे आपकी रूपरेखा याद नहीं रखेंगे, लेकिन वे आपकी कहानियों को याद रखेंगे।

उनके लिए नायक प्रदान करें। वे ऐसे लोगों की तलाश में हैं जिनकी वो प्रशंसा करें और उनकी नकल करें। विश्वास के नायकों के बारे में बताएं - न केवल उन लोगों के बारे में जिन्होंने महान चमत्कार देखे, बल्कि जिन्होंने परमेश्वर की शक्ति से महान कार्य किए। उन्हें यह देखने में मदद करें कि चर्च का उद्देश्य जो कि सुसमाचार का प्रसार करना और शिष्य बनाना दुनिया में सबसे बड़ी चुनौती और सबसे अधिक परिपूर्णता वाला कार्य है।

(5) दृश्य

हो सके तो कहानियाँ सुनाते समय रंगीन चित्रों का प्रयोग करें। अवधारणाओं को पढ़ाते समय, मुख्य शब्दों और कथनों को एक बोर्ड पर लिखें। अगर वे देखेंगे और सुनेंगे तो वे उन्हें बेहतर याद रखेंगे।

(6) क्रिया

लोग करके सीखते हैं। बच्चे कुछ बनाकर या कहानी बनाकर सीख सकते हैं। शिक्षिका उन्हें बाइबल की कहानी सुनाते समय अभिनय करने का निर्देश भी दे सकती है। इसमें समय लगता है, इसलिए हो सकता है कि आप हर बार पूरी कहानी के लिए कार्यवाही करने में सक्षम न हों, लेकिन आपको हर बार कुछ व्यावहारिक करने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए।

► कुछ सदस्य हाल के पाठों या उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए उपदेशों के बारे में बात कर सकते हैं और वर्णन कर सकते हैं कि उन्हें शैली के इन पहलुओं का बेहतर उपयोग कैसे करना चाहिए था। कुछ लोग वर्णन कर सकते हैं कि इन पहलुओं को लागू करने के लिए वे पहले से क्या कर रहे हैं।

बच्चों के लिए एक सुसमाचार विधि: शब्दहीन पुस्तक

शब्दहीन पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ एक अलग रंग का है और सुसमाचार के भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

नीचे उस संदेश का सारांश है जो प्रत्येक पृष्ठ के साथ जाता है। जब आप शब्दहीन पुस्तक का उपयोग करते हैं तो आप अधिक स्पष्टीकरण जोड़े और बच्चों को बातचीत करने और प्रश्न पूछने दें।[10]

नोट: कुछ लोग पहले सुनहरा पृष्ठ रखते हैं, फिर काला, और अन्यों के माध्यम से उसी क्रम मे जारी रखते है जो यहाँ सूचीबद्ध है।

---

[10] जब आप शब्दहीन पुस्तक का उपयोग करते हैं तो क्या कहना है, इसके बारे में अन्य जानकारी के लिए, इन वेबसाइटों पर जाएँ:

http://berean.org/bibleteacher/wb.html

http://www.abcjesuslovesme.com/ideas1/bible/bible-themes/1150-wordless-book।

शब्दहीन पुस्तक या इसी तरह की चीजों को कैसे बनाया जाए, इसकी जानकारी के लिए यह लिंक देखें:

http://www.teenmissions.org/resources/wordless-book-b कंगन/।

काला: काला हमें पाप की याद दिलाता है, हमारे द्वारा किए गए बुरे काम। बाइबल कहती है कि सभी ने पाप किया है। पाप के कारण, हम परमेश्वर के साथ संकट में हैं। (इस बिंदु पर, आपको बच्चे से यह स्वीकार करने के लिए कहना चाहिए कि वह पापी है)।

लाल: अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर का पुत्र यीशु, हमारे लिए मर गया, इसलिए हमें क्षमा किया जा सकता है। लाल यीशु के रक्त का प्रतिनिधित्व करता है। यीशु मर गया, लेकिन वह मृतकों में से जी उठा और हमारे लिए स्वर्ग तैयार कर रहा है।

सफेद: जब परमेश्वर हमें क्षमा करता है तो वह हमें हमारे हृदय में शुद्ध करता है। वह हमारे द्वारा किए गए सभी पापों को दूर करता है। आप प्रार्थना कर सकते हैं और परमेश्वर से आपको क्षमा करने के लिए कह सकते हैं। परमेश्वर आपको क्षमा करने को तैयार है यदि आप अपने पापों के लिए खेदित हैं।

स्वर्ण: स्वर्ण स्वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, वह स्थान जिसे परमेश्वर हमारे लिए तैयार कर रहा है। जब यहाँ हमारा जीवन समाप्त हो जाएगा, तो हम स्वर्ग में परमेश्वर के साथ रहेंगे जहाँ कभी दुख, दर्द या बुराई नहीं होगी।

हरा: जब आपको क्षमा किया जाता है तो आप परमेश्वर की संतान बनते हैं। आप उसके साथ अपने रिश्ते में बढ़ोतरी करेंगे। हरा रंग बढ़ने का प्रतिनिधित्व करता है। आप परमेश्वर के बारे में और जानेंगे और सीखेंगे कि वह आपको कैसे जीते हुए देखना चाहता है। आपको वचन पढ़ना चाहिए, हर दिन प्रार्थना करनी चाहिए और दूसरों को सुनना चाहिए जो जानते हैं कि परमेश्वर के करीब कैसे रहते हैं।

.पाठ 14 कार्यभार

(1) इस पाठ की सामग्री को "जीवन का संचार" शीर्षक के तहत फिर से देखें। न केवल शिक्षण में, बल्कि जब भी आपका उनसे सामना हो, बच्चों के साथ अपनी बातचीत पर विचार करें। आपको क्या बदलने की आवश्यकता है? किसी ऐसे व्यक्ति से बातचीत करें जो आपको अच्छी तरह जानता हो। उसे (या उसे) सामग्री दिखाएं और खुद के बारे में अपने मूल्यांकन की व्याख्या करें। उनकी ईमानदार राय के लिए पूछें। आपको यह बताने की आवश्यकता है कि आपने यह कार्य किया है, लेकिन आप चुन सकते हैं कि अपने मूल्यांकन का विवरण देना है या नहीं।

(2) बच्चों के लिए एक पाठ या उपदेश तैयार करें। शैली के छह पहलुओं का उपयोग करने के लिए इसे ध्यान से डिजाइन करें। यह समझाने के लिए तैयार रहें कि आपने इसे कैसे डिज़ाइन किया है।

(3) एक शब्दहीन पुस्तक खरीदने या बनाने का तरीका खोजें। प्रस्तुति को पूरा करें और इसे कम से कम तीन लोगों के सामने पेश करें। प्रत्येक अनुभव का वर्णन करने वाला एक अनुच्छेद लिखें।

पाठ 15

कलीसिया का रचना

परिचय

अजय को अपनी कलीसिया के शुरूआती वर्षो के बारे में बात करना पसंद है। ‘‘हमने एक उद्यान में मिलना शुरू किया, हमने जिसे देखा सभी को आमंत्रित किया। सर्दी होने पर हम एक पुरानी बस में मिले। हमारे पास कोई बाथरूम नहीं था। बाद में, हम कुछ समय के लिए एक व्यायामशाला में मिले, फिर एक पुरानी कलीसिया भवन में किराए की जगह ली।”

अजय की कलीसिया उन वर्षो में बढ़ रही थी। जो लोग उस कलीसिया के लिए प्रतिबद्ध थे, वे इमारत से आकर्षित नहीं थे। वे लोगों के समूह से आकर्षित थे।

इस पाठ में, जब हम कलीसिया की रचना करने के तरीके के बारे में बात करते है, तो हम एक इमारत के बारे में बात नहीं कर रहें होते हैं। कई महान कलीसियाओं के किस्से हैं कि उन्होंने कठिन परिस्थितियों में कैसे शुरूआत की।

कुछ कलीसियाओं का कहना है कि वे लोगों को आकर्षित नहीं कर पाते थे क्योंकि उनकी इमारत अच्छी नहीं है। सच्चाई यह है कि उनके पास किसी और चीज़ की कमी हैं जो इमारत से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

कलीसिया के आमंत्रण का अर्थ

मसीही हर जगह लोगों को अपनी कलीसियाओं में आने के लिए आमंत्रित करते हैं। वे आशा करते हैं कि आने वालों को कलीसिया अच्छी लगेगी और वे लगातार आना चाहेगें। उन्हें उम्मीद होती है कि आने वाले सुसमाचार को प्रतिउत्तर देंगे।

► जब आप किसी को कलीसिया में आमंत्रित करते है, तो उस निमंत्रण का क्या मतलब है? आप क्या प्रस्तुत कर रहे होते हैं?

हम उन्हें धार्मिक अभ्यासों में भाग लेने के लिए नहीं कह रहें होते है, जैसे कि वह किसी आवश्यकता को पूरा करना या एक कर्तव्य को पूरा करना होगा। हम यह नहीं मानते है कि धार्मिक अनुष्ठानों का अभ्यास विश्वास के बिना व्यक्ति के लिए प्रभावी होता हैं।

हम उम्मीद नहीं करते हैं कि बिना परिवर्तित हुए वे परमेश्वर की आराधना को समझते हैं।

हम आशा करते हैं कि वे लोगों की मित्रता को पसंद करेंगे और फिर से उनके साथ रहना चाहेंगे।

हमें आशा है कि वे सुसमाचार को स्वीकारेंगे।

कुछ कलीसियाएं अपने कार्यक्रम को बिना आत्मिक रूचि वाले लोगों के लिए आकर्षक बनाने की कोशिश करती हैं। उन्हें आशा है कि अगर लोग कार्यक्रम का आनंद लेते है तो वे आगे भी भाग लेते रहेंगे। समस्या यह है कि यदि मनोरंजन सफल होता हैं तो यह सही हितों के बिना लोगों के एक समूह को आकर्षित करता हैं। मण्डली एक मिश्रित समूह बन जाता है जिसमें कई लोग शामिल होते है जो आराधना में रूचि नहीं रखते हैं, लकिन मनोरंजन का आनंद लेते है। आराधना अगुवे और संगीतकार कलाकार बन जाते हैं। अंततः, ऐसे आराधना अगुवों को तैयार किया गया है जिनकी आराधना में रुचि नहीं होती हैं। आराधना भ्रष्ट हो गयी है।

► इस प्रश्न पर फिर से विचार करें। जब आप किसी को कलीसिया में आमंत्रित करते हैं, तो आप क्या पेश कर रहें हैं? आपको क्या पेश करना चाहिए?

उस महान परिवर्तन के बारे में सोचें जो तब होता है जब एक व्यक्ति परिवर्तित होता है। वह अपने पूर्व धार्मिक पंथ को छोड़ देता है, जो उसे परिवार और दोस्तों से अलग भी कर सकता है। वह पापों से पश्चाताप करता है, जिसका अर्थ हो सकता है कि अधिकाश चीजें छोड़ देना जो उसने सोचा था कि वह उनका आनंद ले सकता है। वह अपने जीवन का नियंत्रण परमेश्वर को सौंप देता हैं।

विश्वास लाते समय होने वाले महान बदलाव के कारण, एक व्यक्ति आमतौर पर उस समुदाय के बारे में सोचे बिना परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता है जिसे वह त्याग देगा और एक जिसमे वह प्रवेश करेगा। यदि कोई व्यक्ति किसी मसीही व्यक्ति की गवाही से आकर्षित होता है तो वह उस विश्वास के समुदाय को देखना चाहता है जिसका प्रतिनिधित्व मसीही करते हैं। वह देखना चाहता है कि विश्वास वास्तव में कैसे जिया जाता है। वह मानता है कि जो संदेश वह सुन रहा है उसने पहले से ही विश्वास का एक समुदाय बनाया है कि यदि वह परिवर्तित हो जाता है तो वह उसमें प्रवेश करेगा। यह ऐसा है जैसे वह पूछ रहा हो, “इस संदेश पर विश्वास करने वाले और इसके द्वारा जीने वाले लोगों का समूह कहां है? मेरे लिए उस समूह में होना कैसा होगा?”

यीशु ने राज्य का सुसमाचार का प्रचार किया और स्वर्ग के राज्य के विषय में अक्सर बात की। उसने कहा कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा हैं (लूका 10:9)। जिन लोगों ने परमेंश्वर के राज्य में प्रवेश किया, उन्होंने परमेश्वर के शासन को स्वीकार किया, उसके व्यवस्था के द्वारा जीये, और जीवन को एक साथ साझा किया। परमेश्वर के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें विश्वास का एक समुदाय बना दिया।

क्योंकि लोगों को सुसमाचार द्वारा बनाए गए विश्वास के समुदाय को देखने की जरूरत होती है इसलिए सुसमाचार प्रचार ऐसे काम नहीं करता है कि एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति को समझा-बुझा दिया। लिहाज़ा, स्थानीय कलीसिया आवश्यक है। स्थानीय कलीसिया को विश्वास के समुदाय के तौर पे मनोहर होना चाहिए।

> यीशु ने अपने शिष्यों में एक कलीसिया की संरचना का निर्माण किया जो मृत्यु और नरक की सभी शक्तियों को चुनौती और उनके ऊपर विजय प्राप्त करेगा। यह सरसों के दाने की तरह छोटा शुरू हुआ था, लेकिन यह आकार और ताकत में बढ़ेगा ...
> (रॉबर्ट कोलमैन, द मास्टरस प्लान)।

► विश्वास के एक समुदाय के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले एक व्यक्ति क्या देखना चाहेगा?

कलीसिया की एक प्रकृति है जिसका ख़ाका परमेश्वर द्वारा बनाया गया है और एक मिशन परमेश्वर द्वारा दिया गया है।।प्रत्येक स्थानीय कलिसिया को परमेश्वर के स्तर अनुसार सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए। लोगों को आकर्षित करने के लिए कलीसिया को कुछ अलग नहीं करना चाहिए। हमें कलीसिया को जो वह है उसे कुछ अलग छवि में प्रस्तुत करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

यदि एक कलीसिया उस उद्देश्य को पूरा करती है जो परमेश्वर ने दिया था तो वह सही लोगों को आकर्षित करेगी और एक प्रतिबद्ध समूह का निर्माण करेगी।

एक आकर्षक स्थानीय कलीसिया की विशेषताएं

(1) सदस्य यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर के साथ उनका संबंध वास्तविक और संतोषजनक है। उद्धार न पाए व्यक्ति का परमेश्वर के साथ कोई भी संबंध नहीं होता है। जब वह देखता है कि जीवन परमेश्वर के साथ कैसे दिखता हैं तो उसे एक ज़रूरत महसूस होगी। सदस्य इसे परमेश्वर को जानने और एक प्रतिबद्ध जीवन जीने की खुशी की गवाही देकर दिखाते हैं। यदि कोई सदस्य अभी भी पाप में जीवन जीता है तब वह कलीसिया में नहीं है तो वह दिखाता है कि वह परमेश्वर से संतुष्ट नहीं हैं।

(2) कलीसिया सत्य के रूप में और परमेश्वर के साथ संबंधों के लिए शर्तों के रूप में सिद्धांत प्रस्तुत करटी है। हम सिद्धांत सिखाते है क्योंकि यह सत्य है, लेकिन केवल इसलिए नहीं कि यह सत्य हैं। सिद्धांत कुछ ऐसे हैं जिसे हमे जानना आवश्यक है क्योंकि हम परमेश्वर के साथ रहना चाहते हैं। जैसे विवाह वायदों के साथ एक संबंध है वैसे ही परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में प्रतिबद्धता के वायदे हैं। सिद्धांत हमें बताते हैं कि हम संबंध में कैसे रहते हैं।

(3) कलिसिया परमेश्वर की आराधना करने की खुशी को प्रदर्शित करता है। आराधना का आनंद मनोरंजन के आनंद के समान नहीं है। जो लोग सच्चे परमेश्वर की आराधना नहीं करते हैं, उन्हें आराधना करने से जो आनन्द मिलता है वह महसूस नहीं होता हैं। हम आराधना के लिए तैयार किए गए है; इसलिए, एक बचाया न गया व्यक्ति जो आनंद से भरा हुवा आराधना देखता है, वह उसकी ज़रूरत को महसूस करता हैं।

(4) कलीसिया के सदस्य अनन्त काल के दृष्टिकोण/परिप्रेक्ष्य में जीवन के उद्देश्य को दर्शाते है। मसीहियों को हैरान होने की ज़रूरत नहीं है अगर उनका जीवन अर्थपूर्ण है। जीवन के कठिन समय में मसीहियों के पास विश्राम और साहस हैं। बचाए न गए लोग जीवन के लिए एक संतोषजनक उद्देश्य खोजने के लिए संघर्ष करते हैं, और वे नहीं जानते कि मृत्यु और अनंत काल का सामना कैसे करें।

(5) कलीसिया स्वार्थी लक्ष्यों के बजाय संबध की प्राथमिकता को दर्शाती है। कलीसिया अपने संगठन के निर्माण के उद्देश्य से अपनी मण्डली के लिए प्रचार या देखरेख नहीं करती हैं। संसार के लोग संबंध की उपेक्षा करते हैं या स्वार्थी लक्ष्यों के लिए संबंध का उपयोग करते है।

(6) कलीसिया का संदेश गहरी आत्मिक ज़रूरतों को संतुष्ट करता हैं। बाचाए न गए व्यक्ति के पास एक आत्मिक भूख होती है जो संसार की किसी भी चीज से संतुष्ट नहीं किया जा सकती है। कलीसिया का उपदेश और शिक्षा और परामर्श लोगों की वास्त्विक ज़रूरतों से मेल खाना चाहिए।

(7) कलीसिया विश्वास का एक परिवार है जो अपने सदस्यों से प्यार करता है और उनकी चिंता करता है। अन्य प्रकार के समूह अपने सदस्यों की कुछ ज़रूरतो को पूरा करने में मदद कर सकते हैं, लेकिन केवल मसीहियों के पास ही सच्ची मसीही सहभागीता हो सकती हैं।

► विशिष्ट तरीके क्या हैं जो एक कलीसिया इन विशेषताओं को दिखा सकती हैं? सही प्राथमिकताओं को बेहतर ढंग से दिखाने के लिए कलीसिया को कौन-सी कुछ चीज़ें शुरू करनी चाहिए?

सुसमाचार प्रचार के लिए कलीसिया को तैयार करना

कलीसिया को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके कार्यक्रम और संगठन उसके सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व के मिशन को पूरा करने में मदद करें। कलीसिया जो कुछ भी करती है वह उस प्राथमिकता के अनुरूप होना चाहिए।

आने वालों का स्वागत

कलीसिया को आने वालों का स्वागत करने और उन्हें सहज महसूस कराने में मदद करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कुछ लोग कलीसिया के तौर-तरीकों से परिचित नहीं होते हैं। जब वे कलीसिया जाते हैं तो वे नहीं जानते कि क्या उम्मीद की जाए। उन्हें नहीं पता कि उनसे क्या उम्मीद की जाएगी। कलीसिया में आने से पहले कुछ मिनटों के भीतर, वे या तो खुश होंगे कि वे आए या काश वे नहीं आए होते। कलीसिया को आने वालों के स्वागत के लिए लोगों को तैयार करने की व्यवस्था करनी चाहिए।

कलीसिया को कभी भी गरीबी के कारण लोगों को बाहर नहीं करना चाहिए। कलीसिया में लोगों की अपेक्षित पोशाक को देखकर गरीबों को बाहर नहीं करना चाहिए।

कलीसिया को उन बच्चों की सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो माता-पिता के बिना आते हैं। कलीसिया में आने वाले बच्चों को प्रतिउत्तर देने के लिए लोगों को नियुक्त और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

आने वालों को एक छोटे समूह की सभा या गृह सभा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए जहां वे सीख सकते है और प्रश्न पूछ सकते है।

बाहर, लोगों के बीच पहुंचना

कलीसिया की पहली ज़िम्मेदारी मंडली के प्रतिबद्ध सदस्यो की देखभाल करना है। फिर भी, कलीसिया को हमेशा पड़ोस के लोगो तक पहुंचना चाहिए। कलीसिया में ऐसी गतिविधियां होनी चाहिए जिनसे यह सुनिश्चित हो सके कि कलीसिया के बाहर के लोग कलीसिया का कार्य देख रहें हैं और सुसमाचार सुन रहें हैं। इन गतिविधियों में से कुछ बिना पूर्व तैयारी के हो सकती हैं। अगुओं को अन्य गतिविधियों का आयोजन करना होगा । क्षमताओं वाले सदस्यों को इन गतिविधियों के लिए आमंत्रित और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

कलीसिया को पड़ोस में ज़रूरतों को प्रतिक्रिया देने के तरीके खोजने चाहिए। प्राथमिकता हमेशा परमेश्वर के प्यार को दिखाने ओर बाइबल के सिद्धांतों को प्रदर्शित करने के लिए होनी चाहिए।

छोटे समूह की सेवकाई

जब कोई व्यक्ति बचाया जाता है तो उसे केवल आराधना सभा के लिए ही आमंत्रित नहीं किया जाना चाहिए। उसे तत्काल शिष्यत्व की प्रणाली में आमंत्रित करने की आवश्यकता होती हैं। यह एक पास्टर के साथ व्यक्तिगत मुलाक़ात के साथ शुरू हो सकता हैं। उसे एक छोटे समूह में आमंत्रित किया जा सकता हैं जो साप्ताहिक रूप से मिलते हैं।

एक स्वस्थ कलीसिया में आमतौर पर कुछ प्रकार के छोंटे समूह होते है, जहाँ आत्मिक जीवन कायम रहता हैं। इन समूहों में शायद गृह कलीसिया, संडें स्कूल की कक्षाएं या अन्य प्रकार के समूह हो सकते हैं। आत्मिक जवाबदेही और जीवन परिवर्तन आमतौर पर छोटे समूहों में होता है। कलीसिया के अगुवों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छोटे समूह सक्रिय है जो इन उद्देश्य को पूरा कर रहें हैं। यदि कलीसिया में मौजूद संरचनाएं आत्मिक जीवन को सक्षम नहीं कर रहीं हैं तो बदलावों की आवश्यकता हैं।

दर्शनीय सदस्यता

जो लोग कलीसिया के लिए प्रतिबद्ध होना चाहते है उन्हं विशेष रूप से यह जानना चाहिए कि प्रतिबद्धता का क्या अर्थ है। कुछ कलीसियाओं में सदस्यता की संरचना न होने का दावा किया जाता हैं, लेकिन हर कलीसिया के पास यह जानने का कोई न कोई तरीका होता है कि उसके लोग कौन हैं। सभी को यह जानने की आवश्यकता है कि वे लोग कौन हैं जो कलीसिया बनाते है।

सभी को पता होना चहिए कि सदस्यता के लिए क्या प्रतिबद्धताएं आवश्यक हैं। आवश्यकताओं का और सदस्य बनने के लिए प्रक्रिया का विवरण मुद्रित किया जाना चाहिए।

विश्वास में आया व्यक्ति जो कलीसिया के लिए प्रतिबद्ध है, उसे तुरंत कलीसिया की मदद करने में सक्षम होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि उसे एक पद या नेतृत्व की जिम्मेदारियां दी जानी चाहिए। उसके लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि वह कलीसिया का हिस्सा हैं।

उद्धार पाए नए व्यक्ति के लिए शीघ्र प्रतिउत्तर

शिष्यत्व की शुरूआत उद्धार पाने के समय से होती है। नए विश्वासी की कई तत्काल आवश्यकातएं होती हैं। परमेश्वर के साथ संबंध जारी रखने के लिए, जिसे उसने अभी शुरू किया हैं, उसे यह जानने की ज़रूरत है कि कैसे प्रार्थना करें और बाइबल पढ़ें। उसे नए समुदाय के मित्रों की भी आवश्यकता होती है क्योंकि वह अपने कई पूराने मित्रों को खो देने वाला है। उसे जीवनशैली के कई विषयों में मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है।

कलीसिया को तुरंत ही नए विश्वासी का शिष्यत्व शुरू कर देना चाहिए। तुरंत का मतलब यह नहीं है कि आने वाला रविवार में करें। इसका मतलब है कि तभी जब वह बचाए जाने की प्रार्थना के बाद अपना सिर उठाता है। किसी को कम से कम पहले सप्ताह के लिए इस नए विश्वासी के साथ दैनिक संपर्क की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उसे स्थानीय कलीसिया के कई अन्य विश्वासियों से मिलना चाहिए। उसके पास उन बदलावों पर जो उसमे हो रहे हैं चर्चा करने और उनसे प्रश्न पूछने के अवसर होने चाहिए।

नए विश्वासी को एक छोटे समूह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए जहां वह सवाल पूछ सकता है और प्रोत्साहन पा सकता है। यदि संभव हो, तो उसके द्वारा पहली सभा में भाग लेने से पहले समूह में कई अन्य लोगों से उसका परिचय करा देना चाहिए। कई सदस्य उसे अपना परिचित बनाने और समूह में उसका स्वागत करने के लिए, समय से पहले फोन कर सकते है। यह उसको समुदाय का भाग होने की भावना का निर्माण शुरू करता हैं।

नए विश्वासी को समूह की अगली बैठक मे शामिल होना चाहिए। पाठ को दोहराते जाना चाहिए ताकि किसी भी समय सदस्य को जोड़ा जा सके। इस तरह नए विश्वासी को सहायता समूह तुरन्त मिल जाता है। जब सदस्य सभी पाठों को पूरा कर लेते हैं, तो वे व्यक्तिगत रूप से पाठ्यक्रम से स्नातक हो जाते हैं।

ज़रूरतों की देखभाल

कलीसिया के लोगों की वित्तीय ज़रूरतों के बारे में कलीसिया को ध्यान रखना चाहिए। कलीसिया के अगुओं के प्रबंध के बिना अधिकांश ज़रूरतों को लोगों द्वारा एक दूसरे की मदद करके किया जाना चाहिए। यदि अधिकांश सदस्य दूसरों की मदद करने की ज़िम्मेदारी महसूस नहीं करते हैं तो उन्होंने अभी तक एक परिपक्व कलीसिया को विकसित नहीं किया है।

कलीसिया के पास ऐसे उपयाजक होने चाहिए जो सुनिश्चित करते हों कि इस पर ध्यान दिया जाए। प्रेरितों की पुस्तक में कलीसिया ने इस उद्देश्य के लिए पहले उपयाजकों को नियुक्त किया था।

सुसमाचार सेवकाई के लिए ज़रूरतों की परवाह करना आवश्यक होता है। लोगों को यह देखने में सक्षम होना चाहिए कि कलीसिया विश्वास का परिवार है जहां सदस्य एक-दूसरों की परवाह करते हैं।

.पाठ 15 कार्यभार

एक कलीसिया की कल्पना करें जो इस पाठ में वर्णित सब कुछ करती हैं। लिखें एक काल्पनिक व्यक्ति के विषय में जो कलीसिया का दौरा करता है, उद्धार पा लेता है, और कलीसिया का एक प्रतिबद्ध सदस्य बन जाता हैं। यह सब कैसे होता हैं वर्णन करें।

पाठ 16

सच्चे शिष्य

यीशु के पीछे चलना

► यीशु के शिष्य होने का क्या मतलब है?

कुछ लोग सोचते हैं कि कोई भी अच्छा व्यक्ति एक मसीही है। दूसरों को लगता है कि मसीही होने का मतलब कुछ बातों में विश्वास करना है। इनमें से कई लोगों के लिए, विश्वास द्वारा उनके जीवन में बहुत फर्क नहीं पड़ता है।

अन्य लोग सच्चाई के करीब हैं। वे जानते हैं कि परिवर्तन का एक निश्चित समय होता है, जब एक व्यक्ति मसीही बन जाता है। उनका मानना है कि ऐसा तब हुआ जब किसी व्यक्ति ने यह माना कि उसे क्षमा कर दिया गया। कई लोग विश्वास करते है कि वास्तव में परिवर्तित व्यक्ति के पास स्वर्ग जाने का आश्वासन है और कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह विश्वास में आने के बाद क्या करता है।

यह सत्य है कि परिवर्तन वास्तविक होना चाहिए। यह सत्य है कि विश्वास के प्रतिउत्तर में अनुग्रह के द्वारा क्षमा दी जाती है। यह सत्य है कि एक मसीही परमेश्वर की आज्ञाकारिता में रहता है। लेकिन, केवल यह सब ही यीशु के शिष्य होने का अर्थ नहीं है।

हम देख सकते हैं कि जब विश्वास के एक पल को मसीही होने का एकमात्र मानदंड बना दिया जाता है तो क्या होता है - यह अद्वैतवाद (एंटीओनोमिज्म) की ओर ले जाता है, ऐसी शिक्षा की ओर कि शिक्षण कि परमेश्वर की हिदायतें मसीही पर बाध्यकारी नहीं हैं। स्वतंत्र अनुग्रह होने के बावजूद, यह एक काल्पनिक अनुग्रह बन जाता है जो पाप को न्यायोचित सिद्ध करने का ढोंग करता है।

कलीसियाएं जो काल्पनिक अनुग्रह का परछाई करती हैं, उनके सदस्य वे होते हैं जो कलीसिया में जाते है लेकिन पाप में जीवन जीते हैं। उनके पास्टर और अन्य अगुए मण्डली की तुलना में बेहतर होते हैं लेकिन वे भी पाप करने के आदि हो सकते हैं। उनका कहना है कि परमेश्वर की पूर्ण आज्ञाकारिता में रहना अनिवार्य नहीं है क्योंकि हम अनुग्रह के द्वारा बचाये गए हैं। उन्होंने यीशु द्वारा कलीसिया को दी गई आज्ञा खो दी है, जो लोगों को मसीह के आदेशों का पालन करने के लिए दी गयी है। कलीसिया का विशेष कार्य

पापियों को परमेश्वर के पवित्र उपासकों में बदलना है, और कलीसिया के पास अस्तित्व में रहने का कोई बेहतर कारण नहीं है।

यहां तक कि कलीसिया जो परमेश्वर की आज्ञाओं मानने की आवश्यकता को बनाए रखती हैं, उनमें कुछ लोग होते हैं जो अन्य बुराई में फंसे होते हैं। उन्होंने अपने जीवन को उन आवश्यकताओं के अनुरूप बना डाला है, कि उन्हें विश्वास है कि वे सही हैं, लेकिन उनके पास एक मसीही की तरह भावना नहीं होती है। वे कठोर और माफ करने मे असक्षम होते हैं। वे विनम्र और दयालू होकर माफी नही दे सकते। वे दूसरों के प्रति जल्द ही ग़लत राय बना लेते हैं। उन्हें केवल कुछ लोगों में विश्वास होता है। वे कभी भी अपने स्वयं के सही होने पर संदेह नहीं करते हैं। उनके पास हर मसले का जवाब होता है, और जो उनसे असहमत हैं उनके लिए कोई सम्मान नहीं है। उनके पास भटके हुओं को जीतने के लिए कोई उत्साह नहीं है, लेकिन अपनी राय का बचाव करने के लिए उन्हें बहुत उत्साह है। वे खुद से संतुष्ट रहते हैं, और बदलना नहीं चाहते हैं।

क्या ये लोग वास्तव में यीशु को जानते हैं और उसके जैसा बनना चाहते हैं?

मसीही होने का अर्थ है, यीशु का शिष्य होना।

एक शिष्य होने का क्या अर्थ है? मसीह का पालन करना? निश्चित रूप से इसका अर्थ कम से कम इतना तो है। माह आदेश में, जब यीशु ने प्रेरितों से कहा सब जगह जाओ, चेले बनाओ, उन्होंने उन्हें निर्देश दिया कि वो इन नये चेलों को उन सभी आज्ञों का पालन करना सिखाओ जिसकी आज्ञा उन्होंने उन्हें दी है (मत्ती 28:19-20) । यीशु की आज्ञाओं का पालन करना ही चेले होने का मतलब नहीं है ।

यहूदी रब्बियों के शिष्यों ने उनके साथ जीवन साझा किया, न केवल उनके शिक्षण, बल्कि उनकी जीवन शैली को सीखा। उन्होंने उनके व्यवहार और प्राथमिकताओं को सीखा।

जब यीशु ने शिष्यों को बुलाया, तो कहा कि "आओ और मेरे पीछे चलो,"[11] यही उनका अर्थ था। वह अभी भी शिष्यों को सुसमाचार के माध्यम से बुलाते हैं।

कोई शिष्य कैसे बनता है?

---

[11] मत्ती 4:19, मत्ती 9:9, मत्ती 16:24, मत्ती 19:21, यूहन्ना 1:43

पहले, आपको उस पर विश्वास करना चाहिए - जब तक कि आप उस पर विश्वास नहीं करते, आपके पास उसके पीछे आने का कोई कारण नहीं है।

आप जिस दिशा में जा रहे हैं उसे आपको बदलना होगा। कोई भी यीशु के अनुयायी के रूप में शुरू नहीं करता है - हम अपने तरीके से बाहर जाना शुरू करते हैं। आपको अपने तरीके के बजाय यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लेना होगा। इसका मतलब है कि आप देखते हैं कि आपके तरीके में कुछ तो ग़लत है। यह पश्चाताप के साथ शुरू होता है - आप अपने पापों के लिए खेद जताये बिना उसका अनुसरण नहीं कर सकते। यदि आप अपने पापों को छोड़ने के लिए पर्याप्त खेद नहीं रखते हैं, तो आप अभी भी अपने हिसाब से जी रहे हैं।

> यीशु मसीह हमारी दुनिया के केंद्र से हर एक मूर्ति को उखाड़ फेंकते हैं, जो पहले वहां राज्य करती थी, और वह स्वयं को सिंहासन पर स्थापित करते हैं। यह निष्ठा का आमूल परिवर्तन है जो रूपांतरण का गठन करता है, या कम से कम इसकी शुरुआत करता है। फिर एक बार जब मसीह ने अपना सही स्थान ले लिया, तो बाकि सब कुछ बदलना शुरू हो जाता है
> (लॉज़ेन कमेटी फॉर वर्ल्ड एवेंजलाइजेशन, द विलोबैंक रिपोर्ट)।

आप उसकी क्षमा का अनुभव करते हैं और उसके साथ एक रिश्ता शुरू करते हैं। आप उसे अधिक जानना शुरू करते हैं और उसके जैसा बनना चाहते हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 16:21-25 पढ़ना चाहिए।

अपने शिष्यों के साथ इस वार्तालाप में, यीशु ने अपनी आने वाली मृत्यु का वर्णन किया। पतरस यीशु के शब्दों से स्तब्ध था। पतरस ने पीड़ा और मृत्यु को यीशु के लिए उचित नहीं देखा। उसने यीशु के साथ बहस करना शुरू कर दिया, और मृत्यु की उस सोच को नकारने के लिए प्रोत्साहित किया।

यीशु ने पतरस को फटकार लगाई और कहा कि वह परमेश्वर की बातों को नहीं समझता है। यीशु ने कहा कि उसका शिष्य होने के लिए उसे स्वयं को नकारना चाहिए, क्रूस को उठाना चाहिए और उसके पीछे चलना चाहिए। इसका अर्थ था स्वयं की मृत्यु को स्वीकार करना। फटकार स्वाभाविक आत्म-पूर्ति, आत्म-उत्थान और आत्म-रक्षा की मानवीय प्रवृति - सच्ची शिष्यता का विरोध करने वाली बातों के खिलाफ थी।

►क्यों मानव स्वयं स्वाभाविक रूप से शिष्यत्व के लिए प्रतिरोधी है?

शिष्यों ने पीड़ा और मृत्यु को स्वयं के लिए उपयुक्त नहीं देखा। वे अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं पाए थे कि उसके पीछे चलने का क्या मतलब है। माफी पाने की कोई भी कीमत नहीं है, लेकिन मसीह का

अनुसरण करने के लिए आपका सब कुछ खर्च होगा। उसके पीछे चलने का परिणाम है कि दिल की खोज, विनम्रता और परिवर्तन जारी रहे।

►कथन की व्याख्या करें, "मसीह का पालन करने के लिए आपको सब कुछ खर्च करना होगा।"

क्रूस को उठाना परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन के लिए एक प्रकार की मृत्यु को गले लगाना है। यह स्वयं की मृत्यु है, अपनी ही संप्रभुता की मृत्यु है। यह सिर्फ बाहरी समर्पण नहीं है, बल्कि यह पूरे हृदय से आता है। यह एक विनम्रता है जिसे यीशु ने अपने राज्य में प्रवेश करने की आवश्यकता के रूप में वर्णित किया।

उन पहले शिष्यों की तरह, आज बहुत से लोग यह नहीं समझते हैं कि शिष्य होने का क्या अर्थ है। कलीसियाएं उन लोगों को अनुग्रह प्रदान करती हैं जिन्होंने पश्चाताप नहीं किया है। यह सही दिशा में उद्धार का कार्य आरम्भ नहीं करता है या आने वाले समय के लिए उन्हें तैयार नहीं करता है। यह वास्तविक मसीही जीवन से इतना अलग है कि यह समान मार्ग नहीं है।

डिट्रीच बोन्होफ़र एक जर्मन पास्टर थे, जिसे एडोल्फ हिटलर के समय से प्राणदंड दिया गया था। उन्होंने अपनी पुस्तक द कॉस्ट ऑफ़ डिसाइपलशिप, में ये पंक्तियाँ लिखी थीं।

> बहुमूल्य अनुग्रह खेत में छिपा हुआ खज़ाना है; इसके लिए एक आदमी ख़ुशी से जाएगा और वह सब बेच देगा जो उसके पास है। यह बहमूल्य मोती है जिसे ख़रीदने के लिए व्यापारी अपना सारा माल बेच देगा। यह मसीह का राजसी शासन है, जिसके निमित्त मनुष्य उस आंख को निकाल लेगा, जिस से वह ठोकर खाता है; यह यीशु मसीह का आह्वान है जिस पर शिष्य अपना जाल छोड़ कर उसका अनुसरण करता है... यह अनुग्रह इसलिए बहुमूल्य है क्योंकि यह हमें अनुसरण करने के लिए कहता है।

उसके पीछे चलना उनके जैसा बनना है। यह स्वयं के लिए मरना है क्योंकि उसने स्वयं को पूरी तरह से समर्पण कर दिया है। यह सिर्फ कुछ गलत काम छोड़ना नहीं है, बल्कि उन्हें त्याग देना है क्योंकि यीशु वैसे ही करेंगे। हम वो करने की कोशिश करते हैं जो यीशु अपनी पवित्रता, करुणा, दया और क्षमा मे करेंगे।

हम सिर्फ वही नहीं करते जो सही है जब हमारा दिल इसका विरोध करता है। हम चाहते हैं कि हमारा दिल उसके जैसा हो जाये। वह किसी से नफरत नहीं करता था। वहाँ कुछ लोग थे जिन्होंने उसका शत्रु बनना चुना, लेकिन वह किसी का शत्रु नहीं था। उसने क्रूस पर भी लोगों को क्षमा किया।

उनके असली शिष्य द्वेषपूर्ण नहीं हैं। वे उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं जो उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। वे आशीष देते हैं और कभी श्राप नहीं देते हैं। वे अपनी माफी को सीमित नहीं करते हैं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अधिकारों को छोड़ दिया है और इसके बजाय वे सेवा करते हैं।

इस आत्म-समर्पण जीवन को छोड़ने का कोई स्थान नहीं है। जो अपनी आत्मा को रखने की कोशिश करता है वह इसे खो देगा - जो देता है वह इसे बचाएगा (मरकुस 8:35)।

► हम कैसे लोगों को उद्धार के लिए बुला सकते हैं जिससे की वे शिष्यत्व के लिए तैयार हो?

आत्मिक रचना

आत्मिक रचना की एक प्रक्रिया है जो विश्वासी को आत्मिक परिपक्वता में लाती है।[12]

एक विश्वासी को जीवन भर परिपक्व होना जारी रखना चाहिए, लेकिन परिपक्वता का एक स्तर होता है, जो वहां तक पहुंच सकता है जिसे आत्मिक वयस्कता कहा जा सकता है। प्रेरित पौलुस ने कहा कि विश्वासी एक स्तर तक पहुँच सकते हैं ताकि वे अब बच्चे न रहें। (इफिसियों 4:14)

आत्मिक रचना आंशिक रूप से सीखने के द्वारा पूरा की जाती है। यही कारण है कि प्रेरित पौलुस ने कहा कि अपरिपक्वता की एक विशेषता यह थी कि वे उन्नत सिद्धांत के लिए तैयार नहीं थे। (1 कुरिन्थियों 3:1-2। इब्रानियों 5:12-14 भी देखें) उन्होंने कहा कि परिपक्वता की एक विशेषता विश्वासियों को सिद्धांत में स्थापित करने के लिए है। क्योंकि सीखना आत्मिक रचना का हिस्सा है, सीखाना शिष्यत्व के कार्य का हिस्सा है।

केवल सीखने से ही आत्मिक रचना पूरी नहीं होती है।

---

[12] "आध्यात्मिक गठन दूसरों की खातिर यीशु मसीह की छवि के अनुरूप होने की अनुग्रहपूर्ण प्रक्रिया है।" एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड जूनियर, इन्विटैशन टू अ जर्नी डाउनर्स ग्रोव: M. Robert Mulholland Jr., *Invitation to a Journey* (Downers Grove: InterVarsity Press), 12 से अनुकूलित परिभाषा।

प्रेरित ने कहा कि आत्मिक परिपक्वता मसीही एकता में रहना है, परमेश्वर के पुत्र का ज्ञान होना और मसीह के समान बनना है (इफिसियों 4:13)। यह परिपक्वता ज्ञान से अधिक है और केवल ज्ञान से नहीं आती है।

► एक छात्र को समूह के लिए 2 पतरस 1:2-11 पढ़ना चाहिए।

यह अंश आत्मिक विकास के बारे में है। इस अंश के प्रमुख अंक को देखें।

वचन 3: परमेश्वर ने हमें ईश्वरीय होने के लिए आवश्यक सब कुछ प्रदान किया है और हमें मसीही गुण के लिए बुलाया है।

वचन 4: परमेश्वर ने हमें बदलाव की कृपा प्रदान करने का वचन दिया है जो हमें पाप से बचाता है और हमें परमेश्वर का पवित्र स्वभाव देता है।

वचन 5-7: हमें बचाने वाले विश्वास के साथ नहीं रुकना चाहिए, बल्कि मसीही गुणों को विकसित करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

वचन 8: ये गुण हमें आत्मिक फल प्रदान करेंगे।

वचन 9: जो व्यक्ति इन गुणों का विकास नहीं करता है, वह अपने पाप से छुटकारा नहीं पाता, और यह नहीं देखता है कि वह कहां जा रहा है।

वचन 10-11: मसीही गुणों को विकसित करने के लिए काम किए बिना उद्धार के आश्वासन में आराम न करें। वे आपको उद्धार में स्थापित करेंगे और आपको परमेश्वर के शाश्वत साम्राज्य में महान विजय दिलाएंगे।

दूसरे पतरस के दूसरे पाठ में उन लोगों के बारे में बात की गई है, जिन्होंने आत्मिक विकास को अस्वीकार कर दिया है। वे सिर्फ मसीहत का नाम चाहते हैं। क्योकि वे आत्मिक रूप से आगे बढ़ने से इंकार करते हैं, वे पाप को उचित ठहराते हैं। वे झूठे सिद्धांतों का विकास करते है उनके व्यवहारों को समर्थन देने के लिये। उनके झूठे सिद्धांत नए विश्वासियों को पाप की शक्ति के अधीन वापस गिरने का कारण बनाते हैं और वो पहले की बजाय और भी बदतर हो जाते हैं जैसे उन्होंने कभी भी बचाने वाले अनुग्रह का अनुभव नहीं किया हो (2 पतरस 2:18-22)।

पत्री एक चेतावनी के साथ समाप्त होती है। हमें झूठे सिद्धांत द्वारा पाप में वापस जाने से बचना चाहिए और इसके बजाय, अनुग्रह में बढ़ने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए (2 पतरस 3:17-18)।

यीशु ने महा आज्ञा में कहा कि शिष्यत्व का कार्य लोगों को उसकी आज्ञाकारिता में लाना है। जाहिर है, जो व्यक्ति सीख रहा है उसे उस सत्य का पालन करना चाहिए जो वह सीखता है; अन्यथा, वह आगे नहीं बढ़ पायेगा। ज्ञान का उद्देश्य उसे यह दिखाना है कि परमेश्वर को कैसे प्रसन्न किया जाए और अपने चरित्र के विकास को कैसे निर्देशित किया जाए। यदि कोई व्यक्ति सीखना जारी रखता है, लेकिन उसका पालन करना जारी नहीं रखता है तो वह एक शिष्य नहीं है। कलीसियाओं में बहुत से लोग जिन्हें बहुत धार्मिक ज्ञान है, लेकिन वे एक परिपक्व विश्वासी के जीवन का प्रदर्शन नहीं करते हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए फिलिप्पियों 1:9-11 पढ़ना चाहिए।

फिलिपियों की कलीसिया विश्वासियों का एक अद्भुत समूह था, और पौलुस द्वारा उनको लिखे पत्र उनके लिए आनंद का माहौल है।

इन पदों में, पौलुस ने फिलिप्पियों के लिए आत्मिक विकास का वर्णन किया है। विवरण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ज्ञान, विवेक, प्रेम और व्यवहार को जोड़ता है।

पौलुस ने प्रार्थना की कि उनका प्यार बढ़े और यह प्यार उनके अधिकार के रूप में प्रदर्शित किया जाए, ताकि वे उन दृष्टिकोणों और व्यवहारों को चुन सकें जो सबसे अच्छे थे। जब यीशु वापस आएगा तो यह जीवन परमेश्वर के सामने निर्दोष होगा। उनका जीवन आध्यात्मिक फल से भरा होगा जो परमेश्वर की महिमा करेगा।

► हमने जो अध्ययन किया है, उसके आधार पर यीशु का शिष्य कौन है?

यीशु का शिष्य एक विश्वासी है जो अपने द्वारा सीखे गए सत्य का पालन करने के लिए जी रहा है, परमेश्वर की इच्छा को बेहतर ढंग से समझने के लिए ईमानदारी से इच्छुक है, और मसीही चरित्र और व्यवहार को विकसित करने के लिए परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर रहता है।

► अब जब हम आत्मिक रचना को समझते हैं, तो आप ऐसे व्यक्ति का वर्णन कैसे करेंगे जो दूसरों को शिष्य बनाता है?

वह वचन का सत्य सिखाता है। वह यीशु की आज्ञाकारिता का एक उदाहरण है। वह दूसरों को सीखने, उनकी आज्ञा मानने और उनके भीतर परमेश्वर के कार्य की अनुमति देता है।

अनुग्रह की क्षमता

पिछले भाग में हमने २ पतरस १:२-११ का अध्ययन किया था। उन छंदों में, हम सीखते हैं कि परमेश्वर ने अनुग्रह की प्रतिज्ञा की है जो हमें पापपूर्ण इच्छाओं की शक्ति से बचाता है और हमें एक पवित्र स्वभाव प्रदान करता है। वह ज्ञान हमारे आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करता है।

कुछ लोगों का मानना है कि परमेश्वर की अवज्ञा के बिना किसी व्यक्ति के लिए जीना असंभव है। उनका मानना है कि किसी व्यक्ति के लिए पवित्र हृदय होना असंभव है। ये विचार उनके शिष्यत्व की समझ को प्रभावित करते हैं।

शिष्यत्व का अर्थ है, मसीह की आज्ञाओं को सीखना और उनका पालन करना। यदि हम यह नहीं मानते हैं कि पूर्ण आज्ञाकारिता संभव है तो हम आत्मिक स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए कोई अन्य तरीके की खोज में लिकल जाते हैं।

जॉन वेस्ली का मानना था कि कोई भी अनुग्रह की योग्यता बिना परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा नहीं कर सकता है, लेकिन उनका मानना था कि योग्यता का अनुग्रह प्रत्येक व्यक्ति को दिया जाता है। वेस्ली का मानना था कि प्रत्येक पापी के पास स्वभाव से तो नहीं परन्तु अनुग्रह की क्षमता द्वारा, सुसमाचार को सुनकर उसे ग्रहण करने की क्षमता है। उनका यह भी मानना था कि प्रत्येक मसीही को परमेश्वर की पूर्ण आज्ञाकारिता में रहने के लिए अनुग्रह प्रदान किया जाता है।

वेस्लीयन धर्मशास्त्र से एक व्याख्यात्मक सिद्धांत पाया जाता है जिसे "वादा सिद्धांत" कहा जा सकता है। वेस्लीयन्स का मानना है कि परमेश्वर जो भी आदेश देगा, वह अपने लोगों को पूरा करने में सक्षम करेगा। इसका अर्थ यह है कि पवित्रशास्त्र की प्रत्येक आज्ञा को अनुग्रह की प्रतिज्ञा के रूप में देखा जा सकता है।

.वादा सिद्धांत

निम्नलिखित परिच्छेद वेस्ली के इस सिद्धांत की व्याख्या है।[13]

> एक आम आपत्ति यह है कि परमेश्वर के वचन में [मसीही सिद्धता] का कोई वादा नहीं है। परन्तु एक बहुत ही स्पष्ट प्रतिज्ञा है कि हम सब अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन से प्रेम रखें। हम पढ़ते हैं, "और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे" (व्यवस्थाविवरण 30:6)। समान रूप से स्पष्ट हमारे परमेश्वर का शब्द है, **जो किसी भी वचन से कम नहीं है, जो एक आज्ञा के रूप में है:** " उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती 22:37)। कोई भी शब्द इनसे मजबूत नहीं हो सकते हैं; कोई भी वादा और निश्चित नहीं हो सकता है। इसी तरह, " तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," (मत्ती 22:39) यह एक आज्ञा के रूप में निश्चित वादा है।
>
> और वह असीमित वादा जो पूरे सुसमाचार के युग के माध्यम से शासन करता है, " मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा," (इब्रानियों 8:10) **सभी आज्ञाओं को प्रतिज्ञाओं में बदल देता है;** इसमें यह भी शामिल है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो" (फिलिप्पियों 2:5)। **यह आदेश एक वादे के बराबर है, और हमें यह आशा रखने का कारण देता है कि वह जो वह हमसे चाहता है, हम में करेगा, जिसकी हमें आवश्यकता है।**
>
> **संत पतरस द्वारा दी गई परमेश्वर की आज्ञा, " पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो,"** (1 पतरस 1:15) **यह एक वादे को दर्शाता है कि हम पवित्र होंगे,** अगर हम अनिच्छुक नहीं हैं। परमेश्वर के हिस्से में कुछ भी कमी नहीं हो सकती है। जैसा कि उसने हमें पवित्रता के लिए बुलाया है, वह निस्संदेह हमारे लिए इस पवित्रता के कार्य को हमारे भीतर करने के लिए तैयार और सक्षम है। वह वादा की हुई चीज़ो नहीं देकर अपने

---

[13] John Wesley, “Christian Perfection,” from *A Timeless Faith: John Wesley for the 21st Century*. Stephen Gibson द्वारा संपादित. (Nappanee: Evangel, 2006) से अनुकूलित।

असहाय प्राणियों का मज़ाक नहीं उड़ा सकता है। वह जो वह हमें पवित्र होने के लिए बुलाता है, नकारा नहीं जा सकता; इसलिए, यदि हम स्वर्गीय बुलाहट की अवज्ञा नहीं करेंगे, तो वह देगा।

"लेकिन क्या उसने हमें शरीर में रहते हुए पाप से बचाने का वादा किया है?" निस्संदेह किया है। **वादा परमेश्वर की हर आज्ञा में निहित है, जिसमें शामिल है**, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती 22:37)।

> यदि उसकी न्यायप्रियता उसके न्याय के बराबर है, तो उसके अनुग्रह के वादों को उसके न्याय की आवश्यकताओं के समान समझाजाना चाहिए। यदि वह प्राप्त करने में उतना ही आनन्द करता है जितना लेने में तो उसके वादों का अर्थ उसकी आवश्यकताओं की भाषा से अधिक होना चाहिए।
> (चार्ल्सफिनी, सिस्टेमेटिक थियोलॉजी)

हमें परमेश्वर के चरित्र के बारे में अपने दृष्टिकोण के आधार पर परमेश्वर की कृपा की अपेक्षा करनी चाहिए। हम उम्मीद करते हैं कि परमेश्वर की जो भी आज्ञा होगी वह सक्षम होगी, क्योंकि उसकी आज्ञाएँ 2सच्ची हैं और किसी अन्य तरीके से पूरी नहीं की जा सकती हैं।

हम सभी पवित्रशास्त्र को गंभीरता से ले सकते हैं। हमें बाइबिल के कथनों के स्पष्ट अर्थ को कभी भी विकृत नहीं करना चाहिए। वादा सिद्धांत ईश्वर को सम्मान दे रहा है, क्योंकि यह उम्मीद करता है कि परमेश्वर के पास शक्ति है और विश्वासी में पवित्रता के कार्य को करने की इच्छा है। पवित्रशास्त्र की चेतावनियों, वादों और प्रार्थनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। अच्छा धर्म शास्त्र इसी से सिद्ध होता है कि वो शास्त्र को किस प्रकार उपयोग करता है।

.क्या पवित्र जीवन जीना संभव है?

शरीर में रहते हुए सर्वशक्तिमान आत्मा को पवित्र क्यों नहीं कर सकता? क्या वह इस घर में रहने के साथ-साथ बाहर खुली हवा में भी आपको पवित्र नहीं कर सकते? क्या ईंट या पत्थर की दीवारें उसे रोक सकती हैं? न ही मांस और रक्त की ये दीवारें उसे एक पल के लिए भी आपको पूरी तरह से पवित्र करने से रोक सकती हैं। वो उतनी ही आसानी से तुम्हें शरीर मे सारे पापों से बच सकता है जैसे कि शरीर से बाहर। "लेकिन क्या उसने हमें शरीर में रहते हुए पाप से बचाने का वादा किया है?" निस्संदेह उसने किया है। एक वादा परमेश्वर की हर आज्ञा में निहित है जिसमें शामिल है, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती 22:37)। इसके लिए और हर अन्य आज्ञा दी गई है, मरे हुओं को नहीं, बल्कि

जीवित लोगों को। यह ऊपर दिए गए शब्दों में व्यक्त किया गया है, कि हमें "साम्हने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें" चलना चाहिए (लूका 1:73-75).।[14]

बहुत से लोग कई वर्षों तक मसीही होने का दावा करते हैं लेकिन कभी भी प्रलोभन पर विजय प्राप्त नहीं करपाते हैं। वे ज्ञान और सेवकाई कौशल में बढ़ते हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण विषय में नहीं।

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि एक विश्वासी के लिए परमेश्वर का स्तर यह है कि वह पाप पर विजयी हुआ है और उसके पास एक पवित्र हृदय है। (तीतुस 2:11-12; प्रेरितों के काम 15:9; 1 यूहन्ना 3:2-10, 5:1-4) यदि एक विश्वासी को पता चलता है कि वह, वह नहीं है जो परमेश्वर चाहता है तो उसे तुरंत और गंभीरता से परमेश्वर की आत्मा के परिवर्तनकारी और सशक्तीकरण कार्य की तलाश करनी चाहिए।

शिष्यत्व सेवकाई में व्यक्ति को प्राथमिकताएँ स्पष्ट रखनी चाहिए। पाप पर विजयी होना पहली प्राथमिकता है। यदि कोई व्यक्ति पाप में गिर रहा है, तो उसे शिष्यता देने वाले को उसकी पश्चाताप और विजय मे अगुआई करनी चाहिए इससे पहले की कुछ और पूरा किया जा सके।

पाठ 16 कार्यभार

निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न के बारे में कुछ अनुच्छेद लिखें:

- अगर कोई व्यक्ति यीशु का चेला बनना चाहता है तो उसे क्या उम्मीद करनी चाहिए?
- आप पतरस की आत्मिक विकास के बारे में बताई गई सच्चाई को कैसे समझाएंगे?
- "वादा सिद्धांत" क्या है?

कुल लंबाई लगभग 2 पृष्ठों की होनी चाहिए।

---

[14] John Wesley, "Christian Perfection," from *A Timeless Faith: John Wesley for the 21st Century*. Stephen Gibson द्वारा संपादित. (Nappanee: Evangel, 2006) से अनुकूलित।

पाठ 17

आत्मिक परिपक्वता की ओर

कलीसिया की शिक्षण सेवकाई

उद्धार के समय परिवर्तन होता है| नए विश्वासी में नई इच्छाएं और नई प्राथमिकताएं होती है| परिवर्तन इतना महान होता है कि बाइबल ने उसे नई सृष्टि के रूप में वर्णित किया है (2 कोरिन्थियों 5:17).

लेकिन, कुछ चीजों में समय लगता है। नया विश्वासी तुरंत यह नहीं देखता है कि उसके जीवन के सभी हिस्सों में मसीही सिद्धांतों को कैसे लागू किया जाए। उसे सिद्धांतों को सीखना होता है, तब उन्हें लागू करने के तरीकों को देखता है|

व्यक्तिगत आत्मिक परिपक्वता भी एक प्रक्रिया है। नया मसीही "मसीह में छोटा शिशु" है।

► एक छात्र को समूह के लिए 1 कोरिन्थियों 3:1-2 पढ़ना चाहिए। पढ़े। इन पंक्तियों के अनुसार, एक नए मसीही की क्या विशेषताएं हैं?

► एक छात्र को समूह के लिए इब्रानियों 5:13-14 पढ़ना चाहिए। पढ़े। दूध क्या है जिसके बारे मे ये वचन बात करता है? मांस क्या है? आत्मिक परिपक्वता की विशेषता क्या है?

इस पाठ्यक्रम के आरंभ में, हमने उस महान आज्ञा को देखा जिसे यीशु ने कलीसिया को दिया था। इसे फिर से देखें।

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 28:18-20 पढ़ना चाहिए। इस पद में, यीशु ने सुसमाचार प्रचार से परे क्या जिम्मेदारी दी?

यीशु ने चेलों से कहा कि वे न केवल सुसमाचार का प्रचार करें, बल्कि उन सभी बातों को भी सिखाएँ जो उसने आज्ञा दी थीं। सुसमाचार का प्रचार करना केवल कार्य का पहला भाग है। यीशु की सभी आज्ञाओं का पालन करने के लिए शिक्षा देना शिष्यता की प्रक्रिया है। शिष्यत्व में असफल होना उतना ही गंभीर है जितना कि सुसमाचार का प्रचार करने में असफल होना।

कलीसिया की शिक्षण सेवकाई परिवर्तित जन को आत्मिक परिपक्वता में बढ़ाने के लिए है।

इफिसियों में हमें बताया है कि परमेश्वर विश्वासियों के निर्माण के उद्देश्य से लोगों को सेवकाई की विशेष भूमिकाओं के लिए बुलाते हैं ताकि वे बच्चे न रहें (इफिसियों 4:11-14) | आत्मिक परिपक्वता तक पहुँचने का परिणाम सैद्धांतिक स्थिरता है।

एक पासवान विशेष रूप से शिष्यत्व के लिए जिम्मेदार है। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "पढ़ने और उपदेश और सिखाने में लौलीन रहो " (1तीमुथियुस 4:13) | वह मुख्य रूप से तीमुथियुस के व्यक्तिगत अध्ययन का उल्लेख नहीं कर रहा था; वह सेवकाई के बारे में बात कर रहा था। तीमुथियुस की सेवकाई, पवित्रशास्त्र को पढ़ने और समझाने, आत्मिक दिशा देने और मसीही सिद्धांत सिखाने पर ध्यान केंद्रित करना था| एक पासवान की योग्यता यह भी है कि वह पढ़ाने में सक्षम हो (1 तीमुथियुस 3:2)|

क्योंकि सीखना आत्मिक निर्माण का हिस्सा है इसलिए सीखाना शिष्यत्व के कार्य का हिस्सा है| कलीसिया में शिक्षक महत्वपूर्ण हैं, और शिक्षकों को विकसित करने के लिए कलीसिया को हमेशा काम करना चाहिए।

" और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2) यह निर्देश पौलुस ने तीमुथियुस को दिया था, जैसा एक अनुभवी प्रचारक और पास्टर एक युवा चेले को देता है। पौलुस को यह विश्वास नहीं था कि विश्वास केवल उपदेश देने से हो जाएगा। लोगों को विशेष प्रयास के साथ प्रशिक्षित करने और दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होगी। यदि ऐसा प्रशिक्षण कलीसिया को प्रचार करके पूरा नहीं किया जाता है, तो इन विश्वासयोग्य मनुष्यों को व्यक्तिगत रूप से या छोटे समूहों में प्रशिक्षित करना होगा।

सिखाने के लिए बहुत कुछ है। किस पास्टर के पास यह सब करने का समय है, खासकर जब हर कोई एक ही समय में एक ही निर्देश के लिए तैयार नहीं है? परन्तु इफिसियों ४:११ यह नहीं कहता है, "उसने एक पासवान दिया" (केवल एक व्यक्ति और केवल एक भूमिका)। इसके बजाय, उन्हें पूरा करने के लिए विभिन्न भूमिकाएँ और कई लोग हैं। परमेश्वर शिक्षकों को बुलाता है, उन्हें सीखाने की क्षमता देता है, और उन्हें एक शिक्षण सेवकाई के लिए कलीसिया के माध्यम से सुसज्जित करता है।

> यीशु की योजना का प्रारंभिक उद्देश्य उन लोगों को सूचीबद्ध करना था जो उसके जीवन की गवाही दे सकें और उसके पिता के पास लौटने के बाद उसका काम जारी रख सकें।
> (रॉबर्ट कोलमैन, द मास्टर'स प्लान)

मसीही समुदाय और आत्मिक जवाबदेही

सच्ची शिष्यता शिक्षण जानकारी से अधिक है; इसमें मूल्यों, प्राथमिकताओं, स्वभाव और जीवन शैली को शामिल किया जाता है। यह प्रक्रिया केवल आत्मिक जवाबदेही वाले मसीही समुदाय में ही हो सकती है।

हम पूरे पवित्रशास्त्र में देखते हैं कि परमेश्वर ने इरादा किया था कि लोग समुदाय में रहें, जो परमेश्वर के इस कथन के साथ आरम्भ होता है कि आदम को अकेला नहीं होना चाहिए (उत्पत्ति 2:18)।

सभोपदेशक 4:9-10 में समुदाय के कुछ लाभों का वर्णन किया गया है:

> "एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाय उस पर जो अकेला हो कर गिरे और उसका कोई उठाने वाला न हो।"

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इस्राएल के लिए उसकी योजना यह थी कि वे याजकों का राज्य और एक पवित्र जाति बनें (निर्गमन 19:6)। मीरास को परिवारों के माध्यम से पारित किया जाना था, जिसे "महान आज्ञा" कहा जाता है (व्यवस्थाविवरण 6:4-9)।

पवित्र आत्मा ने नए नियम के लेखकों को प्रेरित किया कि वे नए नियम में कलीसिया (1 पतरस 2:9) का उल्लेख करें।

परमेश्वर चाहते है की जो लोग उनके साथ नाता रखते हैं, वे एक दूसरे के साथ भी संबंध बनाये रखें| परमेश्वर के साथ हमारा नाता हमें विश्वास के एक समुदाय में लाता है| जिस प्रकार परमेश्वर के साथ हमारा संबंध प्रतिबद्धता की मांग करता है, उसी प्रकार परमेश्वर के लोगों के साथ हमारा संबंध प्रतिबद्धता की मांग करता है। एक व्यक्ति के लिए यह सोचना गलत है कि वह परमेश्वर के साथ सही संबंध में हो सकता है लेकिन परमेश्वर के लोगों के साथ संबंध में नहीं होना चुन सकता है।

पौलुस ने कलीसिया के सदस्यों के बीच संबंधों का वर्णन करने के लिए देह के रूपक का इस्तेमाल किया (1 कुरिन्थियों 12)। कोई भी सदस्य ठीक से काम नहीं कर सकता है अगर वह देह से स्वतंत्र होने की कोशिश करता है। सदस्यों को एक दूसरे का सहयोग और देखभाल करनी चाहिए, अन्यथा कोई निकाय नहीं होगा। अगर एक सदस्य को नुकसान होता है तो सभी पीड़ित होते हैं। एक सदस्य के कार्य सारी देह को प्रभावित करते हैं। पौलुस ने इस बारे में बात की जब उसने अनैतिक संबंध में मनुष्य की स्थिति का सामना किया, भले ही उसने इसके बजाय रोटी की उपमा का प्रयोग किया। उसने कहा, "क्या आप नहीं

जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता है?" (१ कुरिन्थियों 5:6)। हमें खुद को एक मसीही समुदाय के महत्वपूर्ण हिस्सों के रूप में देखना चाहिए।

समुदाय की भावना के बिना कई नए नियम के आदेशों का पालन नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा करने के लिए, मसीहियों को एक दूसरे की प्रति प्रतिबद्धता में रहना चाहिए। इसका अर्थ है कि मसीही समुदाय आत्मिक उत्तरदायित्व की अगुआई करता है।

हम बाइबल में ऐसे कई स्थान पाते हैं जहाँ मसीही समुदाय आध्यात्मिक उत्तरदायित्व से जुड़ा है।

> अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उन की नाईं तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं। (इब्रानियों 13:17)।

ये वचन विश्वासियों से कहते हैं कि वे उन लोगों के प्रति समर्पण करें जो आध्यात्मिक अधिकार के पदों पर हैं। आदेश आत्मिक अगुओं को भी एक बड़ी ज़िम्मेदारी देता है। उनकी ज़िम्मेदारी केवल अधिकार के द्वारा नेतृत्व करने की नहीं है, बल्कि उनकी देखरेख में आत्माओं की देखभाल करने की भी है। ऐसा करने के लिए, उन्हें व्यक्तिगत आत्मिक दिशा देने के लिए अपने लोगों से अच्छी तरह परिचित होना चाहिए, और उनका अपने लोगों के साथ एक नाता होना चाहिए जो इस तरह की दिशा को संभव बनाता है।

मसीही समुदाय और आत्मिक जवाबदेही इस अध्याय में भी वर्णित हैं:

► एक छात्र को समूह के लिए इब्रानियों 10:24-26 पढ़ना चाहिए। इस अध्याय में क्या आज्ञा है?

हमें अन्य मसीही यों की जरूरतों के बारे में जानने और उन्हें सही काम करने के लिए प्रोत्साहित करने की आज्ञा दी गई है।

► उस रिश्ते का वर्णन करें जो विश्वासियों के बीच इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए आवश्यक होगा।

यदि हमारा दूसरों के साथ सही संबंध नहीं है तो हमारा प्रोत्साहन प्रभावी नहीं है। हमें उन्हें अच्छी तरह से जानना होगा और प्यार और चिंता दिखानी होगी। अन्यथा, वे व्यक्तिगत सलाह से आहत होंगे।

> हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए। वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए। (इब्रानियों 3:12-13)।

हमें एक दूसरे प्रति जवाबदेह ठहराने के लिए बुलाया गया है।

यहाँ प्रोत्साहन पूरी कलीसिया निकाय की निर्धारित बैठकों से बढ़कर होना चाहिए, क्योंकि हमें प्रतिदिन प्रोत्साहित करने की आज्ञा है। इसके लिए व्यक्तिगत या छोटे समूह के आधार पर संगति की आवश्यकता होती है। इस प्रकार की संगति केवल एक साथ भोजन करना या भेंट करना ही नहीं है, बल्कि इसका एक आध्यात्मिक उद्देश्य भी है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, हमें उस प्राथमिकता के साथ बातचीत और छोटे समूह की बैठकों की उद्देश्यपूर्ण योजना बनानी चाहिए।

जिस तरह से हम एक-दूसरे को फायदा पहुँचा सकते हैं उसे नीतिवचन 27:17 में दिखाया गया है:

> जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है|

आत्मिक दिशा और प्रोत्साहन से लाभ होने से पहले एक व्यक्ति को दूसरे से श्रेष्ठ होने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, विनम्रतापूर्वक दी गई आत्मिक दिशा को स्वीकार किए जाने की अधिक संभावना है।

> इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है (याकूब 5:16)।

व्यक्तिगत दोषों की स्वीकारोक्ति आमतौर पर बड़े समूहों में नहीं होगी; इसलिए, इस कलीसिया सभाओं इस आदेश का अनुसरण आसानी से नहीं किया जाता है। संदर्भ आदेश का कारण दिखाता है: कि जिन्होंने गलती की है उन्हें बहाल किया जा सकता है।

> तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्या को पूरी करो (गलातियों 6:2)।

अक्सर एक मसीही विश्वासी को लगता है कि किसी को परवाह नहीं है कि वह क्या कर रहा है। साथी मसीही परवाह करेंगे कि वह क्या भुगत रहा है, लेकिन वे आमतौर पर उसे अच्छी तरह से नहीं जानते हैं। जब हम वास्तव में नहीं जानते कि वे क्या हैं, तो हम दूसरे के बोझ कैसे उठा सकते हैं?

कलीसिया के जन्म के बाद के शुरुआती दिनों में, विश्वासियों के बीच एक करीबी रिश्ता था।

> और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे (प्रेरितों के काम 2:46)|

जॉन वेस्ली ने कहा कि व्यक्तिगत मसीही धर्म जैसी कोई चीज नहीं है।

► आपको क्या लगता है कि वेस्ली की अपनी इस टिप्पणी का क्या मतलब है?

एक स्वस्थ मसीही समुदाय में आत्मिक जवाबदेही होती है।

आत्मिक जवाबदेही होना एक ऐसे व्यक्ति या समूह के साथ संबंध स्थापित करना है, जिसे हम अपनी आत्मिक स्थिति, अपनी सफलता या आत्मिक विषयों में असफलता और विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं के बारे में बताते हैं।

आत्मिक उत्तरदायित्व के बिना हम पवित्रशास्त्र की सभी आज्ञाओं को पूरा नहीं करेंगे, और हम उस साधन की उपेक्षा करेंगे जिसे परमेश्वर ने हमें अनुग्रह देने के लिए बनाया है।

आत्मिक परिपक्वता की विशेषताएँ

आत्मिक रूप से परिपक्व होने का क्या मतलब है? आप एक परिपक्व मसीही का वर्णन कैसे करेंगे?

क्योंकि परिपक्वता में समय लगता है, यह उम्र के साथ आती है। (तीतुस 2:1-5) जाहिर है, कुछ लोग आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हुए बिना बूढ़े हो जाते हैं जैसे उन्हें होना चाहिए, और ऐसे युवा लोग हैं जो असामान्य परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं।

परिपक्वता की अधिकांश विशेषताएं एक निश्चित बिंदु पर पूरी तरह से प्राप्त नहीं होती हैं, परन्तु धीरे-धीरे बढ़ती है। कभी-कभी आध्यात्मिक अनुभव या जीवन के अनुभव के कारण वे अचानक बढ़ सकते हैं। भले ही एक व्यक्ति को अपने पूरे जीवन में विकास करना जारी रखें, फिर भी वह एक स्तर तक पहुंच सकता है जिसे आध्यात्मिक परिपक्वता कहा जा सकता है।

आत्मिक पवित्रता की विशेषताएँ पवित्रशास्त्र के कई अध्याय में वर्णित हैं।

► विभिन्न छात्रों को समूह के लिए इन गद्यांशों को पढ़ना चाहिए: इफिसियों 4:11-14, इब्रानियों 5:12-6:1, 1 कुरिन्थियों 3:1-2 और 1 यूहन्ना 2:12-14।

नीचे उन विशेषताओं की एक सूची दी गई है जो आत्मिक परिपक्वता के संकेत देती हैं। यह पूरी सूची नहीं है, और सूची में कुछ बिन्दु अन्य बिंदओं से पूरी तरह से अलग नहीं हैं।

एक परिपक्व मसीही इन सभी विशेषताओं को पूरी तरह से प्रदर्शित नहीं कर सकता है, लेकिन वह बढ़ रहा है। वह अपने कुछ दोषों का एहसास नहीं कर सकता है, लेकिन उसके दिल में पवित्र आत्मा का निरंतर काम चालू रहता है।

आत्मिक परिपक्वता की दस विशेषताएँ

(1) मसीह के तरह उद्देश्य, रवैया और कार्य

मसीह की समानता मसीह को उसके स्वभाव मे जानने के जुनून से, आध्यात्मिक रूप से उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान का अनुभव करने से आता है (फिलिप्पियों 3:10)। इसमें उत्पीड़न में अपनी पीड़ा साझा करना शामिल हो सकता है। एक व्यक्ति जो इस तरह से मसीह को प्यार करता है, उसके जैसा बनने के लिए परिवर्तित हो जाएगा।

मसीह की तरह होना प्रेम से प्रेरित होना है न कि स्वार्थ या अभिमान से। मसीह के समान होना प्रेम से प्रेरित होना है न कि स्वार्थ या अभिमान से। एक मसीही मसीह की तरह बनना चाहता है और किसी भी समय दुखी हो जाता है, जब उसे पता चलता है कि वह मसीह में ऐसा नहीं था जैसा उसने कहा या किया।

(2) परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध

एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में और करीब आना चाहिए। परमेश्वर के साथ एक अच्छे संबंध के लक्षण हैं, परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद, परमेश्वर के वचन के लिए प्रेम, और प्रार्थना में बिताया गया समय।

(3) आत्मा के फलों का प्रदर्शन

पवित्र आत्मा मसीही के जीवन में फल पैदा करता है, जिसमें प्रेम, आनंद, धैर्य और आत्म-नियंत्रण शामिल है। मसीही अधिक लगातार दयालु और कोमल बन जाता है क्योंकि वह पवित्र आत्मा को अपने स्वभाव में काम करने देता है।

(4) बाहरी और भीतरी पाप पर विजय

मसीही सीखता है कि पाप पर विजय के लिए परमेश्वर पर कैसे निर्भर रहना चाहिए। वह परमेश्वर द्वारा शुद्धता प्राप्ति करता है ताकि उसके पास एक पवित्र हृदय हो सके। वह ऐसी आदतें और अनुशासन विकसित करता है जो उसे लगातार जीत में जीने में मदद करता है।

यदि मसीही कोई पाप करता है तो वह इसे परमेश्वर के सामने स्वीकार करता है और क्षमा और शक्ति के लिए प्रार्थना करता है। उसे अपनी असफलताओं को करीबी मसीही मित्रों के साथ साझा करना चाहिए जो उसके लिए प्रार्थना करते हैं (याकूब 5:16)।

(5) आत्मिक अनुशासन की स्थापना

आत्मिक अनुशासन परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों को पहली प्राथमिकता बनाने का अभ्यास करने के तरीके हैं। एक व्यक्ति जो लगातार प्रार्थना नहीं करता है, बाइबल नहीं पढ़ता है, और कलीसिया नहीं जाता है वह एक परिपक्व मसीही नहीं है।

(6) मसीही चरित्र में बढ़ना

एक मसीही ईमानदारी, विश्वसनीयता, और वफ़ादारी के सिद्धांतों पर अपने जीवन को सीखता है।

(7) नियमित मसीही जीवन

एक विश्वासी जीवन मे मसीही सिद्धांतों को लागू करना सीखता है। एक परिपक्व मसीही को अपने व्यवहार और रवैया में हर समय एक मसीही की तरह दिखना चाहिए। जब वो महसूस करता है कि जो कुछ वह कहता है या करता है वह उसके हृदय मे प्रेम के अनुरूप नहीं है, तो वह बदलाव करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर करता है।

(8) स्वस्थ संबंध

एक परिपक्व मसीही अन्य ईसाइयों के साथ गहरी मित्रता विकसित करता है। वह ईमानदारी, धैर्य और क्षमाशीलता दिखाते हुए रिश्तों को बनाए रखता है। वह विनम्र है और गलतियों को स्वीकार करता है। क्योंकि वह किसी स्थिति को गलत समझ सकता है, हो सकता है कि वह उतना धैर्यवान न हो जितना उसे होना चाहिए, जल्दी से गलती स्वीकार कर लेना, या किसी अन्य व्यक्ति के बारे में सही राय रखना।

(9) एक निजी सेवकाई

मसीही को अपने आत्मिक उपहारों की पहचान करनी चाहिए। उसे कलीसिया में दूसरों के लिए आशीष का कारण बनना चाहिए। एक विश्वासी कलीसिया मे सुसमाचार प्रचार करने और दूसरों को शिष्य बनाने मे मदद करके सेवा कर सकता है।

(10) कठिन परिस्थितियों का धीरज

एक मसीही को मुश्किल परिस्थितियों में परमेश्वर पर भरोसा करना सीखना चाहिए। जब वह मुश्किल परिस्थितियों में होता है तो उसे परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए। एक परिपक्व विश्वासी विश्वास नहीं खोता है जब वह यह नहीं समझता है कि कुछ क्यों हो रहा है।

निष्कर्ष

आत्मिक परिपक्वता की विशेषताएं प्राकृतिक प्रतिभा पर निर्भर नहीं करती हैं।

वे सेवकाई की कुशलता के समान नहीं हैं।

जरूरी नहीं कि वे नेतृत्व क्षमता के साथ हों। एक अगुआ आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो तो अच्छा है, लेकिन कभी-कभी एक व्यक्ति अपनी क्षमताओं के कारण अगुआ बन जाता है, जबकि वह अभी भी आध्यात्मिक रूप से परिपक्व नहीं होता है। कभी-कभी व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होता है, लेकिन उसमें नेतृत्व क्षमता नहीं होती है।

कुछ व्यक्तित्व प्रकार स्वाभाविक रूप से अधिक धैर्यवान और दयालु लगते हैं। व्यक्तित्व के प्राकृतिक लक्षण आध्यात्मिक परिपक्वता के समान नहीं होते हैं। परमेश्वर हमारे व्यक्तित्व में कार्य करता है और हमारी प्रवृत्तियों में संतुलन लाने में मदद करता है। यदि हम किसी व्यक्ति विशेष का विश्लेषण करें, तो हम उसके प्राकृतिक व्यक्तित्व और आध्यात्मिक विकास की विशेषताओं के बीच ठीक-ठीक अंतर नहीं कर सकते।

स्वास्थ्य समस्याएं भी किसी व्यक्ति के विचार और प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर सकती हैं। हमें दूसरों को आंकने की जल्दी नहीं करनी चाहिए।

.पाठ 17 कार्यभार

(1) आत्मिक परिपक्वता की 10 विशेषताओं के आधार पर अपने आप को परखें। प्रार्थना के साथ विचार करें कि आपके पास किस की कमी है। प्रार्थना में, अध्ययन, दूसरों से परामर्श, और परमेश्वर की सहायता पर निर्भरता के माध्यम से उनमे जान बुझ कर विकसित करने की योजना बनाएं।

(2) एक कलीसिया कैसे शिक्षण और आत्मिक जवाबदेही के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर सकता है? एक कलीसिया के लिए कार्य योजना का वर्णन करते हुए दो पृष्ठ लिखें।

पाठ 18

छोटा समूह नियमावली

कक्षा के अगुए के लिए सूचना

यह पाठ अन्य कक्षा सत्र की तरह नहीं बनाया गया है। आप इसके माध्यम से पढ़ा सकते है, और चर्चा के लिए कई विषय उपलब्ध हैं। इस पाठ के लिए एक से अधिक बार मिलना आवश्यक हो सकता है।

कक्षा को विशेष रूप से अपने भविष्य के कार्यों पर चर्चा करने के लिए समय लेना चाहिए। उन्हें एक साथ योजना बनानी चाहिए कि कैसे वे अपनी स्थानीय कलीसिया को प्रचार और शिष्यत्व के कार्यों में मदद कर सकती हैं।

शिष्यत्व के लिए छोटे समूहों का मूल्य

लघु समूह की सेवकाई दुनिया भर में कई रूप लेती हैं। कई प्रकार के छोटे समूह हैं, जिन्हें विभिन्न उद्देश्यों के लिए तैयार किया गया है। अध्ययन, आत्मिक उत्तरदायित्व, सेवकाई, प्रार्थना, या विशेष परियोजनाओं के लिए छोटे समूह मिल सकते हैं।

कुछ कलीसियाएं समूहों में विभाजित होती हैं जो घरों में मिलती हैं। समूह छोटी कलीसियाओं की तरह कार्य करती हैं। नए नियम की कलीसियाएं प्रत्यक्षतः इसी प्रकार कार्य करती थीं।

बढ़ती, प्रभावी कलीसियाओं में आमतौर पर किसी प्रकार की छोटी समूह प्रणाली होती है।

इस भाग में, हम शिष्यत्व के लिए छोटे समूहों की प्रभावशीलता के बारे में बात करेंगे।

वेस्लीयन प्रणाली

जॉन वेस्ली (ग्रेट ब्रिटेन, 18 वीं शताब्दी) छोटे समूहों को व्यवस्थित करने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे, लेकिन उन्होंने एक ऐसी प्रणाली विकसित की जो अत्यधिक प्रभावी थी।

वेस्ली ने समाजों, वर्गों और मंडली नामक समूहों के विभिन्न आकारों के साथ शिष्यत्व की एक प्रणाली विकसित की।[15] वेस्ली के तरीके शुरुआत में एक पूर्ण प्रणाली तो नहीं थे, परन्तु धीरे-धीरे जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित किए गए थे। वेस्ली के द्वारा कई विश्वास में आये लोगों ने प्रोत्साहन, सलाह और प्रार्थना के लिए पूछा। उन्होंने हर गुरुवार को मिलने के लिए व्यवस्था की क्योंकि लोग बहुत सारे थे।

हर जगह जहां वेस्ली और उसके प्रचारकों ने सुसमाचार को पहुंचाया, उन्होंने विश्वासियों को ऐसे समूहों में संगठित किया जो नियमित रूप से मिलते थे। क्योंकि मंडलियां बड़ी थीं इसलिए कई लोग व्यक्तिगत आत्मिक आवश्यकताओं के बारे में नहीं बता सकते थे और उन्हें वह ध्यान नहीं मिला रहा था जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। छोटे समूहों का गठन किया गया जिन्हें कक्षा का नाम दिया गया, जहां अगुओं ने सदस्यों को प्रोत्साहित करने और उनका मार्गदर्शन करने के लिए पासबान के रूप में कार्य किया। कोई भी सदस्य जो निरंतर पाप में बना रहा और परिवर्तित नहीं हुआ, उसे सदस्यता से हटा दिया गया और उसे बैठक में आने की अनुमति नहीं दी गई।

कक्षा की तुलना में छोटे समूहों का गठन किया गया था ताकि सदस्य अपने आत्मिक संघर्षों को साझा कर सकें और एक-दूसरे को आध्यात्मिक उत्तरदायित्व प्रदान कर सकें। इन छोटे समूहों को मंडली कहा जाता था। इन सभाओं में अगुए अपनी आत्मिक स्थिति का वर्णन करते, फिर दूसरों से उनकी स्थिति, पापों और प्रलोभन के बारे में सवाल पूछते थे। इन समूहों में, सभी सदस्य समान लिंग के थे।

वेस्ली की सफलता के कारण प्रसिद्ध जॉर्ज व्हाइटफील्ड ने यह बयान दिया: "मेरे भाई वेस्ली ने बुद्धिमानी से काम किया - वे आत्माएं जो उनकी सेवकाई के तहत जागृत हुईं, वह कक्षा में शामिल हो गयीं, और इस तरह उन्होंने अपने श्रम के फल को संरक्षित किया। मैने इसे नकारा और मेरे लोग रेत के सामान हो गए।" वेस्ली के तरीकों को अमेरिकी मैथोडिस्ट कलीसिया ने शुरुआती वर्षों में जारी रखा था, लेकिन उनके शिष्यत्व नियम और उनके सिद्धांतों दोनों को आधुनिक मेथोडिज़्म द्वारा उपेक्षित किया गया है।

मूलभूत कलीसिया को समझना

सबसे प्राचीन कलीसिया भवन जो मिल है वो लगभग 250 ईस्वी में बनाया गया था। पहली दो शताब्दियों तक, कलीसिया ने खुद को लोगों के रूप में देखा, न कि एक इमारत या संगठन के रूप में। कलीसिया

[15] "A Plain Account of the People Called Methodists," in The Works of John Wesley, Volume VIII (Grand Rapids: Zondervan), 249-258 देखें।

मसीहियों के समूहों से बनती है जो एक साथ आराधना करते हैं, प्रचार करते हैं और बाइबल का पालन करते हैं।

लोगों के छोटे समूह हर प्रभावी कलीसिया संरचना के बुनियादी निर्माण खंड होते हैं। छोटे समूह का शिष्यत्व कार्यक्रम एक नई संस्था नहीं है जो किसी दिन अप्रचलित हो जाएगी। यह एक नई विधि नहीं है जो कुछ स्थानों पर काम कर सकती है और अन्य स्थानों पर नहीं। इसके बजाय, छोटे समूह कलीसिया के बुनियादी निर्माण खंड होते हैं। किसी भी स्थानीय कलीसिया के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए छोटे समूहों में सेवकाई विभिन्न तरीकों से की जा सकती है।

एक कालिसिया अपने उद्देश्य को तब तक पूरा नहीं करेगा जब तक कि उसके लोगों को नियमित रूप से पूरी मण्डली या अधिकांश रविवार के स्कूलों की तुलना में अधिक व्यक्तिगत तौर पर नियमित रूप से में शिक्षित और प्रशिक्षित नहीं किया जाता है।

एक सतर्कता

छोटे समूह उतने ही आध्यात्मिक होते हैं जितने कि इसमें शामिल लोग। यदि वे परमेश्वर को प्रसन्न करने, विश्वासयोग्य जीवन जीने और कलीसिया के मिशन को पूरा करने की प्राथमिकता के साथ प्रतिबद्ध शिष्य नहीं हैं तो समूह के भटक जाने के कई तरीके हैं।

आध्यात्मिक जवाबदेही की आवश्यकता

आध्यात्मिक जवाबदेही पाने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति या समूह के साथ संबंध स्थापित करना है, जिसे आप अपनी आध्यात्मिक स्थिति, अपनी सफलता या आत्मिक विषयों में असफलता, और विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं के बारे में बताते हैं। वे आपको बताते हैं जब उन्हें लगता है कि आप गलत कर रहे हैं। आप उन्हें अपनी प्रतिबद्धताएं बताते हैं, और वे आपसे बाद में पूछते हैं कि क्या आप अपनी प्रतिबद्धताओं को निभा रहे हैं।

बाइबल के आधार पर स्वस्थ मसीही समुदाय में आत्मिक जवाबदेही के बारे में पिछले भाग में अधिक अच्छी तरह से समझाया गया है। आत्मिक जवाबदेही के बिना, हम पवित्रशास्त्र की सभी आज्ञाओं को पूरा नहीं कर पाएंगे; और, हम उस साधन की उपेक्षा करेंगे जिसे परमेश्वर ने हमें अनुग्रह देने के लिए तैयार किया है।

इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। (याकूब 5:16)।

एक व्यक्ति निजी दोषों का अंगीकार नहीं करेगा, सिवाय एक ऐसे रिश्ते के जो इसे आसान बनाता है। यदि वह ऐसे जन के साथ अंगीकार नहीं करता है जो उसके दोषों के लिए प्रार्थना कर रहा है, वह उस साधन को दरकिनार कर रहा है जिसे परमेश्वर ने उन जरूरतों को पूरी करने के लिए सृजा है।

तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो। (गलातियों 6:2)।

जब तक हम किसी को बहुत अच्छी तरह से नहीं जानते, तब तक हम यह नहीं जानते कि उसका सबसे गंभीर बोझ क्या हैं। हम इस शास्त्र की आज्ञा को एक ऐसे सम्बन्ध में आए बिना पूरा नहीं कर सकते जो इसे संभव बनाता है।

और प्रेम, और भले कामों में उक्साने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। (इब्रानियों 10:24)।

हमें प्यार की मंशा से एक-दूसरे की बारीकी से जाँच करनी चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि किस प्रोत्साहन और फटकार की ज़रूरत है। प्रोत्साहन उथला होगा, और फटकार का विरोध तब तक किया जाएगा जब तक हम दूसरे व्यक्ति के साथ खाश रिश्ते क़ायम नहीं कर लेते हैं।

निम्नलिखित प्रश्न किसी व्यक्ति को यह निर्धारित करने में मदद कर सकते हैं कि उसके जीवन में आत्मिक जवाबदेही स्थापित है या नहीं।

मेरे ऐसे कौन से रिश्ते हैं जो यह संभव बनाते हैं:

- कि कोई मेरे सबसे गंभीर बोझ को उठाने में मेरी मदद कर रहा है?
- मैं किसी के सामने अपनी गलती स्वीकार कर रहा हूँ?
- मैं किसी को उसके बोझ में मदद कर रहा हूँ?
- और कोई मेरी वर्तमान आध्यात्मिक स्थिति का जवाब दे रहा है?

क्या कभी ऐसा होता है:

- जब कोई भी ऐसा नहीं होता है जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूँ?
- जब मुझे खुशी होती है कि कोई भी मेरी स्थिति को नहीं जानता है?

- कई बार मुझे अपने प्रार्थना समय या बाइबल अध्ययन के समय की जानकारी देने के लिए शर्मिंदा होना पड़ेगा?

अधिकांश कलीसियाएं आत्मिक जवाबदेही की अपनी जिम्मेदारी को तब तक पूरा नहीं करती जब तक कि वे ऐसा करने के लिए एक प्रणाली की व्यवस्था नहीं कर लेते हैं। कई लोगों के लिए, यह छोटे समूहों की एक प्रणाली है।

एक छोटे समूह के अगुए की योग्यता

यीशु ने शिष्यत्व की प्राथमिकता का प्रदर्शन किया। अपनी सेवकाई की शुरुआत के बाद उन्होंने कुछ लोगों को चुना जो कलीसिया को निर्देशित करने की ज़िम्मेदारी प्राप्त करते थे। उन्होंने अपना सारा समय उन हज़ारों लोगों को प्रचार करने में नहीं लगाया जो उसके पीछे हो लिए थे; इसके बजाय, वह अक्सर बारह को प्रशिक्षित करने के लिए समय निकाला करते थे। उन्होंने अपनी सेवकाई को उन लोगों के माध्यम से बढ़ाया जिन्हें उन्होंने प्रशिक्षित किया था।

शिष्यत्व करने वाले व्यक्ति में निम्नलिखित गुण होने चाहिए। हो सकता है कि वह हर गुण में उत्कृष्ट न हो, लेकिन उन सभी में सुधार करने का प्रयास करना चाहिए। यदि उनमें से किसी एक की भी कमी है, तो वह बहुत कम प्रभावी होगा।

(1) आत्मिक रूप से परिपक्व

उसके पास पिछले अनुभाग में वर्णित आत्मिक परिपक्वता के गुण होने चाहिए। यदि वह आत्मिक रूप से परिपक्व नहीं है तो वह एक अच्छा उदाहरण स्थापित नहीं करेगा और उसके पास आवश्यक अनुभव नहीं होगा।

> हालाँकि उन्होंने वह किया जो वह भीड़ की मदद करने के लिए कर सकते थे परन्तु उन्होंने खुद को मुख्य रूप से बहुत से लोगों के बजाय, कुछ लोगों को समर्पित किया, ताकि लोगों को अंत में बचाया जा सके। यह उनकी रणनीति की प्रतिभा थी।
> (रॉबर्ट कोलमैन, द मास्टर'स प्लान)

(2) उपलब्ध

यदि वह पूर्ण रूप से अपने कामों में व्यस्त है और अच्छी तरह से प्रबंधित नहीं है तो वह छोटे समूह की सेवकाई के लिए उपलब्ध नहीं होगा। उसे इसे प्राथमिकता बनाना चाहिए।

.(3) विश्वसनीय

वह एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करता हो। उसे नियुक्तियां करने में सक्षम होना चाहिए। उसे अपनी प्रतिबद्धताओं के लिए दूसरों को ज़िम्मेदार ठहराने के लिए याद रखने में सक्षम होना चाहिए।

.(4) आश्वस्त

उसे विश्वास होना चाहिए कि वह एक समूह का नेतृत्व करने के लिए सक्षम है। यदि उसके पास क्षमता है, लेकिन वह विश्वास नहीं करता है तो उसे पहले कुछ निर्देशित अनुभवों की आवश्यकता होगी जो उसके आत्मविश्वास का निर्माण करेगी।

.(5) विवादों को सुलझाने में सक्षम

जब लोग असहमत होते हैं और समस्याओं का कारण बनते हैं तो उन्हें सही रवैया रखने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें दूसरों के बीच विवादों को सुलझाने में मदद करने में सक्षम होना चाहिए।

.(6) सीखाने में सक्षम

क्या लोग उसके स्पष्टीकरण को समझते है? एक अगुआ ऐसा होना चाहिए जो लोगों को भ्रमित न करे।

.(7) परमेश्वर के वचन की भूख

वह परमेश्वर के वचन का आनंद लेता हो, ताकि वह दूसरों को भी इसका आनंद लेने के लिए आमंत्रित कर सके। उसे परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में बाइबल को महत्वपूर्ण बनाना चाहिए।

.(8) परमेश्वर पर निर्भर

उसे एहसास होना चाहिए कि आत्मिक परिणाम पवित्र आत्मा के कार्य से ही हो सकते हैं। वह पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करने के लिए तैयार होना चाहिए। उसे परमेश्वर के अभिषेक पर निर्भर होना चाहिए। उसे यह विश्वास नहीं होना चाहिए कि उसकी क्षमता के कारण उसके स्पष्टीकरण सफल होंगे।

.(9) सेवा करने के लिए तैयार

उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो यह महसूस करता हो कि वह दूसरों की सेवा करने के दौरान कुछ मूल्यवान काम कर रहा है। वह ऐसा न हो जो स्वयं की सेवा करवाना चाहे। उसे अपनी प्रतिभा प्रदर्शित

करने के उद्देश्य से सेवकाई की तलाश नहीं करनी चाहिए। उसे जरूरतों के लिए उत्तरदायी होना चाहिए और स्वयंसेवक होना चाहिए।

(10) आत्मिक अधिकार के अधीन

उसे आत्मिक रूप से किसी के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। उसे आत्मिक अगुए के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

(11) सेवकाई के प्रति विश्वासयोग्य

समूह के अगुए को एक स्थानीय सेवकाई का प्रतिबद्ध सदस्य होना चाहिए। शिष्यत्व की सेवकाई को लोगों को कलीसिया की सराहना करने और उसके प्रति अधिक प्रतिबद्ध होने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(12) सफल होने के लिए उत्साही

यदि उसके पास सफल होने के लिए उत्साह है तो वह जल्दी से हार नहीं मानेगा। वह परिस्थितियों के अनुकूल बनेगा। वह अधिक प्रभावी होने में मदद करने के लिए जानकारी की तलाश करेगा। समस्या या अवसर आने पर वह पहल करेगा। उसके पास ऊर्जा और उत्साह होगा।

(13) सिद्धांततः सटीक

उसके पास बाइबल, सुसमाचार के प्रचार के सिद्धांत की अच्छी नींव होनी चाहिए।

(14) सेवकाई के लिए प्रशिक्षित

सेवकाई के प्रशिक्षण के लिए एक शैक्षणिक संस्थान में होना आवश्यक नहीं है। प्रशिक्षण अवलोकन से शुरू होता है, जैसा कि एक विश्वासी देखता है कि सेवा कैसे की जाती है। भागीदारी के साथ प्रशिक्षण बढ़ता है, क्योंकि उन्हें निर्देशन में जिम्मेदारियां दी जाती हैं। अच्छी सामग्री का पठन और अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है।

एक शिष्यत्व कार्यक्रम विकसित करना

शिष्यत्व होने का सबसे अच्छा तरीका एक स्थानीय कलीसिया है जो एकता में काम करते हुए, शिष्यत्व की जिम्मेदारी और प्राथमिकता को समझती है।

इसलिए, इन निर्देशों को कलीसिया के अगुओं और प्रतिबद्ध सदस्यों को संबोधित किया जाता है।

यदि एक कलीसिया को पता चलता है कि उन्हें शिष्यत्व में बेहतर करने की आवश्यकता है तो उन्हें पहले इस पाठ्यक्रम में शिष्यत्व के बारे में शास्त्रों और बिंदुओं का अध्ययन करना चाहिए। अगुए सामग्री प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि संभव हो तो कलीसिया के सभी प्रतिबद्ध सदस्य शामिल हों, ताकि वे दर्शन को साझा कर सकें।

विकास का दूसरा भाग यह देखना है कि कलीसिया पहले से क्या कर रही है। अधिकांश कलीसियाओं में कुछ समूह पहले से ही काम कर रहे होते हैं, भले ही उन्होंने जानबूझकर एक छोटा समूह कार्यक्रम शुरू नहीं किया हो। उदाहरण के लिए, कलीसिया में संगीतकारों का एक समूह हो सकता है जो अक्सर मिलते हैं। गाना बजानेवालों का समूह हो सकता है जो अभ्यास करता है। उपयाजकों का एक बोर्ड हो सकता है। संडे स्कूल की कक्षाएं हो सकती हैं, और संडे स्कूल के शिक्षकों का भी एक समूह हो सकता है। कलीसिया के युवा कभी-कभी मिल सकते हैं। विभिन्न जिम्मेदारियों की देखभाल के लिए समितियां मौजूद हो सकती हैं। एक समूह अनौपचारिक रूप से उन लोगों का गठन कर सकता है जो एक परियोजना पर एक साथ काम करते हैं। कलीसिया के ऐसे परिवार हो सकते हैं जो कभी-कभी संगति के लिए एकत्र होते हैं। गृह बाइबल अध्ययन और प्रार्थना सभाएँ हो सकती हैं।

हो सकता है कि ये समूह शिष्यता या आध्यात्मिक जवाबदेही के उद्देश्य से नहीं बने हों, लेकिन वे उन उद्देश्यों की पूर्ति में मदद कर सकते हैं। कोई भी कलीसिया जिसके पास आत्मिक जीवन है, उसके पास पहले से ही कुछ समूह होते हैं जो उस जीवन का समर्थन करने के लिए काम कर रहे होते हैं। जब एक कलीसिया शिष्यता के लिए अपने कार्यक्रम में सुधार करने का फैसला करती है तो उसे मौजूदा समूहों की जांच करनी चाहिए और पता लगाना चाहिए कि क्या हो रहा है, फिर सोचें कि उद्देश्यों को बेहतर तरीके से कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

नए समूहों की आवश्यकता हो सकती है। हो सकता है कि विभिन्न प्रकार के समूहों की आवश्यकता हो। ऐसे समूह हो सकते हैं जो सेवकाई के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण देते हैं। ऐसे समूह हो सकते हैं जो प्राथमिक रूप से बाइबल का अध्ययन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। गंभीर आत्मिक उत्तरदायित्व के लिए छोटे समूह हो सकते हैं।

समूह का उद्देश्य निर्धारित करता है कि वहां कौन होना चाहिए और समूह को कैसे कार्य करना चाहिए। उदाहरण के लिए, गंभीर आत्मिक उत्तरदायित्व वाले समूह में १० से कम लोग होने चाहिए। यदि समूह बहुत बड़ा है, गोपनीयता कम हो जाती है, साझा करना उथला हो जाता है, अधिक नियंत्रण आवश्यक

होता है, कम भागीदारी संभव होती है, और उपस्थिति खराब हो जाती है। व्यक्तिगत बातें साझा करने की गहराई सीमित हो जाएगी यदि पुरुष और महिला दोनों मौजूद हों।

समूह का उद्देश्य यह निर्धारित करता है कि उसे नए सदस्यों के प्रति खुला होना चाहिए या नहीं। यदि उद्देश्य आत्मिक उत्तरदायित्व है तो समूह के कई बार मिलने के बाद नए सदस्यों को नहीं जोड़ना चाहिए। अधिकांश लोग अपनी आत्मिक स्थिति के बारे में तब तक साझा नहीं करेंगे जब तक कि वे समूह के अन्य लोगों के साथ सुरक्षित महसूस न करें। यदि समूह का उद्देश्य पाठों की एक श्रृंखला को कवर करना है तो बैठकों की पूरी श्रृंखला में लोगों को जोड़ना व्यावहारिक नहीं है।

नए विश्वासी लोगों के लिए एक समूह हो सकता है।[16] यह महत्वपूर्ण है कि एक नया विश्वासी को समूह में शामिल होने के लिए कई हफ्तों तक प्रतीक्षा न करनी पड़े। इसलिए, इस समूह को पाठों की एक परिक्रामी श्रृंखला की आवश्यकता होती है ताकि नए लोग किसी भी समय शामिल हो सकें। अगुओं को यह एहसास होना चाहिए कि कुछ नए विश्वासी लोग बाहर हो जाएंगे। तथ्य यह है कि कुछ लोग समूह छोड़ देते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि समूह अच्छा नहीं कर रहा है। भले ही कुछ लोगो छोड़ देंगे मगर नए लोगों के वास्ते नए विश्वासियों के समूह का रास्ता सदा खुला होना चाहिए।

यदि कोई समूह सेवकाई प्रशिक्षण या गहन आत्मिक विकास के लिए है तो समूह के सदस्यों को आत्मिक रूप से विकसित होने की इच्छा रखने वाले लोग होना चाहिए और वे समूह के लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्ध हों। यदि कुछ सदस्य प्रतिबद्ध नहीं है तो समूह अच्छी तरह से अपने उद्देश्य प्राप्त नही करेगा।

अधिकांश सदस्यों को व्यक्तिगत आमंत्रण द्वारा आमंत्रित किया जाना चाहिए। लोगों को शामिल होने के लिए कहने की प्रतीक्षा न करें।

कलीसिया में हर कोई एक छोटे समूह के कार्यक्रम में शामिल नहीं होगा। यदि आप कलीसिया में एक अगुए है तो लोगों को एक छोटे समूह में नहीं होने के लिए उनकी आलोचना न करें। इसके लाभों का वर्णन करके समूह सेवकाई का प्रचार करें।

पहली बैठक में, सुनिश्चित करें कि हर कोई समूह के महत्व को समझता है। वचन और जानकारी बांटे जो शिष्यत्व के महत्व को दर्शाते हों।

---

[16] Shepherds Global Classroom नये विश्वासियों को शिष्य बनाने के लिये 26 पाठों वाली पुस्तक प्रदान करता है। यह नि:शुल्क संसाधन, शिष्यता पाठों की खेती, shepherdsglobal.org पर डाउनलोड के लिये उपलब्ध है।

उपस्थिति में मदद करने के लिए, समूह को कुछ हफ़्ते के लिए मिलने के लिए निर्धारित किया जा सकता है। यह बताइए कि समूह अध्यायों की एक विशिष्ट शृंखला को पढ़ रहा है और उन्हें बताएं कि श्रृंखला कब समाप्त होगी। इस तरह हर सदस्य को ठीक से पता होगा की उसे क्या करना है। पूर्ण उपस्थिति की आवश्यकता पर जोर दें। उस समय के अंत में, समूह उन लोगों के साथ फिर से शुरू कर सकता है जो जारी रखना चाहते हैं।

विचार के लिए परिदृश्य

मनोज कई सालों से मसीही है। वह कलीसिया के सदस्य हैं और अपनी कलीसिया में मदद करते हैं। उन्हें इस बात की चिंता रहती है कि उनकी कलीसिया में शिष्यत्व की योजना नहीं है। उन्हें लगता है कि कलीसिया को छोटे समूहों को शुरू करना चाहिए, लेकिन अगुए रूची नहीं लेते हैं।

► मनोज को क्या करना चाहिए?

मनोज को कलीसिया के अगुओं से बात करनी चाहिए और एक छोटे समूह का नेतृत्व करने के लिए उनकी मंजूरी लेनी चाहिए। उन्हें कलीसिया की सेवकाई की आलोचना नहीं करनी चाहिए, बल्कि समूह से आने वाले लाभों का वर्णन करना चाहिए। यदि समूह अच्छा करता है,तो कलीसिया इस प्रकार की सेवाकाई के लाभों को समझना शुरू कर देगी।

एक प्रभावी समूह का नेतृत्व

एक समूह की शुरुआत में उत्साह और अपेक्षा होती है। बहुत से सदस्यों को ठीक-ठीक पता नहीं है कि क्या उम्मीद करनी है, लेकिन वे समूह से मदद पाने की उम्मीद करते हैं।

निम्नलिखित निर्देश समूह को प्रभावी बनाने और उसके उद्देश्य को पूरा करने में मदद करेंगे। छोटे समूहों के कामकाज के लिए महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यदि अगुआ समूह को इन सिद्धांतों का पालन करने में मदद करता है तो वह निराशा और निरुत्साह को कम करेगा।

पहली मुलाक़ात अन्यों से अलग हो सकती है क्योंकि समूह सीख रहा है कि बैठकें कैसे होंगी। हालांकि, पहली बैठक में भविष्य की बैठकों के लिए शैली निर्धारित की जाएगी। यदि कोई व्यक्ति पहली बैठक में बात नहीं करता है तो वह भविष्य में चुप रहने की उम्मीद करेगा। अगर कोई विचार-विमर्श में हावी हो जाता है तो समूह भविष्य की बैठकों में एक ही व्यक्ति के प्रभुत्व की उम्मीद करेगा। यदि बैठक अव्यवस्थित

है तो वे भविष्य में भी ऐसी ही उम्मीद करेंगे। यदि बैठक छोटी भागीदारी वाली एक कक्षा की तरह है तो वे एक ही प्रतिरूप की उम्मीद करेंगे।

कुछ सदस्य कुछ बैठकों के बाद बाहर हो सकते है क्योंकि समूह वैसा नहीं है जिसकी उन्हें उम्मीद थी। बैठक का सही दिशा में नेतृत्व करना महत्वपूर्ण है ताकि जो सदस्य सही बातों की उम्मीद कर रहे थे, वे निराश न हों।

प्रभावशीलता के लिए दिशा निर्देश

(1) यदि संभव हो तो साप्ताहिक मिलने के लिए समूह का समय निर्धारित करें। कुछ लोगों को बच्चे की देखभाल की व्यवस्था करने में मदद की आवश्यकता हो सकती है।

(2) बैठकों का प्रारूप ऐसा हो (1) अध्ययन का समय हो, फिर (2) प्रार्थना के लिए व्यक्तिगत आवश्यकताओं को साझा करना हो, फिर (3) प्रार्थना करना हो।

यदि समूह का प्राथमिक उद्देश्य अध्ययन है तो अध्ययन का समय लंबा हो सकता है और अन्य भाग छोटे हो सकते है; लेकिन तीन हिस्सों को अभी भी शामिल किया जाना चाहिए। यदि समूह का उद्देश्य आत्मिक जवाबदेही है तो अध्ययन का समय कम हो सकता है, लेकिन उनके पास कुछ सामग्री होनी चाहिए जो वे अध्ययन कर रहे हैं।

यदि किसी समूह के पास व्यक्तिगत बातें साझा और विचार करने को है, लेकिन अध्ययन के लिए कोई पाठ सामग्री नहीं है तो यह अव्यवस्थित हो सकता है। इसमें कुछ सदस्यों के व्यक्तित्व का दबदबा रहेगा। पाठ सामग्री उन सभी को उनके दिमाग से परे सच्चाई पर प्रतिउत्तर देने के लिए तैयार करती है।

(3) समय पर बैठकों को शुरू करना और समाप्त करना।

यदि आप देर से शुरू करते है और समाप्त करते है तो जो लोग अपने स्वयं के समय को महत्व देते है, वे देर से आने लगेंगे या कुछ बैठकों को छोड़ देंगे।

(4) समूह के समाप्त होने की तारीख निर्धारित करें।

सदस्यों को यह जानने की आवश्यकता होती है कि उनकी प्रतिबद्धता कितने समय के लिए है। आम तौर पर, नए सदस्यों को कुछ बैठकों के बाद समूह में तब तक शामिल होने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, जब तक कि समूह नए विश्वासियों के लिए पाठों को दोहरा न रहा हो। यदि समूह एक पाठ श्रृंखला का

अध्ययन कर रहा है, तो पाठों की संख्या उनके द्वारा मिलने वाले सप्ताहों की संख्या निर्धारित कर सकती है। यदि वे आत्मिक जवाबदेही के लिए मिल रहे हैं तो वे छह महीने की अवधि निर्धारित कर सकते हैं। अंत में, वे फिर से इसे व्यवस्थित कर सकते हैं। उस समय कुछ सदस्य छोड़ सकते है, और समूह विचार कर सकता है कि नए सदस्यों को शामिल होने की अनुमति दी जाए या नहीं।

(5) अध्ययन करते समय, स्वयं के लिए ज्ञान के बजाय जीवन-बदलते उद्देश्य पर जोर दें।

एक सदस्य महसूस करेगा कि समूह सार्थक है यदि वह अध्ययन से व्यक्तिगत, खाश बातों को लागू करने योग्य पाता है।

(6) प्रतिबद्धताओं का पालन करें।

अगर किसी ने एक समस्या साझा की है तो सहमति दिखाएं कि वह एक निश्चित कदम उठाए, और अगली बैठक में पूछें कि क्या उसने वह किया जो उसने कहा था कि वह करेगा।

(7) अगुए को आत्मिक मार्गदर्शन देने के लिए किसी भी सदस्य के साथ व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए उपलब्ध होना चाहिए।

अन्य सदस्य भी प्रोत्साहन के लिए अन्य समय पर एक साथ मिल सकते है।

(8) बैठक के लिए एक अच्छे स्थान को चुने।

यह घर जैसे माहौल के साथ एक अनौपचारिक बैठक का स्थान होना चाहिए। बैठने का तरीका जितना संभव हो उतना गोलाकार होनी चाहिए, ताकि प्रत्येक सदस्य दूसरे सदस्य के चेहरे को देख सकें। यह भागीदारी को प्रोत्साहित करेगा। ऐसी जगह पर बैठें, जहां कोई बाधा या गड़बड़ी नहीं होगी।

(9) अच्छा सुनने की आदतों का अभ्यास करें।

अच्छे सुनने के लक्षण हैं आँख से संपर्क साधना, एकाग्र अभिव्यक्ति, विकर्षणों को नज़रअंदाज़ करना, और वक्ता के हास्य या अन्य भावनाओं के प्रति प्रतिक्रिया।

(10) सुनिश्चित करें कि कोई भी सदस्य हमेशा चुप न रहे।

उस सदस्य को प्रश्न निर्देशित करें जो ज्यादा नहीं बोलता ("आप इस बारे में क्या सोचते हैं, नरेन्द्र?")।

(11) किसी सदस्य पर **कुछ व्यक्तिगत साझा करने के लिए दबाव न डालें।**

इसके बजाय, ऐसा माहौल बनाने की कोशिश करें जहां वह बेझिझक बात कर सके। किसी सदस्य को आँख मिला कर और उसके द्वारा कही गई किसी बात की प्रशंसा करके उसका आत्मविश्वास विकसित करें।

(12) उन सवालों को पूछने की कोशिश करें जो वे अपने आत्मविश्वास का निर्माण करने के लिए कर सकते है।

यदि कोई गलत उत्तर देता है, तो आलोचना करने से पहले उत्तर के बारे में कुछ अच्छा बताने की कोशिश करें।

(13) हर टिप्पणी की आलोचना करने से पहले उसकी किसी न किसी तरह से पुष्टि करने की कोशिश करें।

(14) यदि किसी के पास बहुत अधिक बात करने और सभी सवालों के जवाब देने की प्रवृत्ति है तो उसे सीमित करने का तरीका खोजें।

एक तरीका यह है कि विशिष्ट सदस्यों के लिए प्रश्नों को निर्देशित करना। या आप पूछ सकते है, "आप बाकि लोग इसके बारे में क्या सोचते है?" चर्चा में, आप कह सकते है, "आइए किसी ऐसे व्यक्ति से सुनें जिसने अभी तक इस बारे में बात नहीं की है।"

यदि कोई सदस्य अभी भी बहुत अधिक बातचीत करता है तो अगुआ सभा के बाहर उससे बात कर सकता है। वह कुछ इस तरह कह सकता है: " नरेन्द्र, आप एक त्वरित विचारक हैं और चर्चाओं में जल्दी प्रतिक्रिया देने में सक्षम हैं, लेकिन मुझे चिंता है कि अगर हम सब कुछ जल्दी से जवाब देंगे तो अन्य भाग नहीं लेंगे। क्या आप मुझे सभी को शामिल करने में मदद कर सकते है? "

.(15) समूह की उपेक्षा करते हुए दो या तीन सदस्यों को अपनी चर्चा न करने दें।

यदि कोई किसी बात को लेकर लंबे समय तक बहस करना चाहता है तो उसे बताएं कि चर्चा को बैठक से बाहर बाद में समाप्त कर लें।

.(16) किसी को भी दूसरों को बाधित करने की अनुमति न दें।

अपना हाथ उठाएं, मुख्य रूप से टोकनेवाला को रोकें, और पहले वक्ता को खत्म करने की अनुमति दे। अन्यथा, एक चर्चा हमेशा कम तमीजवाले सदस्यों द्वारा हावी होगी। जो लोग कम कम मुखर है वे निराश महसूस करेंगे कि वे अपने वाक्य समाप्त नहीं कर सकते है।

.(17) शिकायतें सुनें।

कोई भी शिकायत एक समस्या दिखा सकती है जिसे ठीक किया जा सकता है। असंतोष के संकेतों को नजरअंदाज न करें। यदि कोई व्यक्ति समूह की सभा से असंतुष्ट है तो हो सकता है कि वह उद्देश्यों को नहीं समझा है, या उसके पास एक जायज़ शिकायत हो सकती है।

.(18) यदि कोई सदस्य लगातार शत्रुतापूर्ण, विघटनकारी, तर्कपूर्ण या ऊब गया है, तो हो सकता है कि वह समूह के उद्देश्यों को स्वीकार ना करे।

हो सकता है कि समूह वह ना हो जिसकी उसने अपेक्षा की थी। समूह के उद्देश्य को बताने के लिए निजी तौर पर उससे बात करें।

.(19) अगुए को हर समस्या का उत्तर जानने की जरूरत नहीं है।

उसकी भूमिका हर बात का उत्तर पाने की नहीं बल्कि प्रार्थना में बोझ उठाने के लिए समूह का नेतृत्व करने की है।

.(20) समय सारिणी मे रुकावट के साथ लचीले और धैर्यवान रहें।

याद रखें कि हमारे जीवन की घटनाएँ हमारे लिए परमेश्वर के विकास का हिस्सा हैं। समस्या एक अवसर है।

.(21) यदि कोई सदस्य अक्सर अपनी जरूरतों को साझा करने के लिए पूरी सभा का समय लेता है तो उसे किसी अन्य समय में परामर्श देने की पेशकश करें।

नहीं तो बाकी सदस्यों को लगेगा कि उनसे सभा को चुराया जा रहा है। समूह को अपना उद्देश्य न खोने दें, जब तक कि सदस्य एक साथ सहमत न हों कि उद्देश्य को बदलना चाहिए।

.(22) चर्चाओं को विध्वंसक बनने की अनुमति न दें।

समूह को स्थानीय कलीसिया और अन्य अगुओं की आलोचना करने का मंच न बनने दें।

.(23) याद रखें कि समूह की प्रभावशीलता परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर करती है जो इसके माध्यम से काम कर रहे है।

समूह केवल एक वचन आधारित संरचना है जिसका उपयोग परमेश्वर करता है।

पाठ 19

.शिष्यों के लिए प्रार्थना

.शिष्यों के लिए प्रार्थनाविश्वासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना

नए विश्वासियों के लिए पौलुस की प्रार्थनाएं बताती हैं कि नए मसीही के लिए क्या होना चाहिए। ये प्रार्थनाएँ युवा मसीहियों के लिए प्रार्थना करने में हमारा मार्गदर्शन करती हैं क्योंकि हमें उनके लिए उन्हीं विषयों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो पौलुस ने प्रार्थना की थी। ये प्रार्थनाएँ हमारी सेवकाई का भी मार्गदर्शन करती हैं क्योंकि परमेश्वर उनके लिए जो कर रहा है, हमें उसमे सहयोग देना चाहिए।

आइए तीन अलग-अलग समूहों के लिए पौलुस की प्रार्थनाओं को देखें।

.थिस्सलुनीकियों

► एक छात्र को समूह के लिए 1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24 पढ़ना चाहिए।

थिस्सलुनीकियों को पहला पत्र पवित्रता की बुलाहट है। प्रत्येक विश्वासी को जीत और पवित्रता में जीने के लिए कहा जाता है, और परमेश्वर वादा करता है कि यह विश्वास से संभव है। हमें प्रार्थना करनी चाहिए और प्रत्येक मसीही को जीत और पवित्रता लाने के लक्ष्य के साथ सिखाना चाहिए।

.फिलिप्पियों

► एक छात्र को समूह के लिए फिलिप्पियों 1:9-11 पढ़ना चाहिए।

ये वचन विश्वासी के जीवन में चल रही प्रक्रिया के बारे में बताते हैं। उसका प्यार लगातार बढ़ता रहना चाहिए। ऐसा होने पर, जो सबसे अच्छा है उसे समझने की उसकी क्षमता बढ़नी चाहिए। जैसा ही वह समझता है, वह अपने जीवन को सबसे उत्तम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अनुकूलित करता है। यह उसके लिए शुद्ध (ईमानदार) और अपराध रहित होने के लिए होते ही रहना चाहिए।

इन पदों में जिन लोगों को पौलुस ने लिखा था वे कुछ समय पहले से ही मसीही थे। फिर भी, पौलुस प्रार्थना कर रहा था कि वे परमेश्वर के लिए अपने प्रेम में वृद्धि करते रहें और उस प्रेम से, उनके लिए परमेश्वर की इच्छा को बेहतर ढंग से समझ सकें।

यहाँ कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिन पर एक युवा विश्वासी को विचार करना चाहिए:

- उस बदलाव का उदाहरण क्या है जो मैंने अपने जीवन में किया जब परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि एक रवैया, आदत, या कार्य सबसे अच्छा नहीं था?
- क्या मेरे जीवन में कुछ भी ऐसा है जिसके बारे में मुझे संदेह है?
- क्या मैं परमेश्वर को प्रार्थना में मुझे कोई भी बदलाव दिखाने देना चाहता हूँ जो मुझे करना चाहिए?

कुलुस्सियों

► एक छात्र को समूह के लिए कुलुस्सियों 1:9-12 पढ़ना चाहिए।

उन्होंने प्रार्थना की कि वे ज्ञान और आत्मिक समझ में परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान प्राप्त करें। एक नया विश्वासी अभी तक अपनी जीवन शैली के लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में सब कुछ नहीं समझता है। वह धीरे-धीरे देखेगा कि उसके जीवन में कुछ आदतें, शब्द और दृष्टिकोण बदलने चाहिए। चूँकि वह परमेश्वर से प्रेम करता है तो वह अधिकाधिक अपने जीवन को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बना लेगा। शिष्य को प्रार्थना करनी चाहिए और ध्यान से युवा मसीही को परमेश्वर की इच्छा को पहचानना सिखाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वे, परमेश्वर की इच्छा को बेहतर ढंग से समझने के परिणामस्वरूप, "प्रभु के योग्य चाल चलेंगे।" वे परमेश्वर के अधिक उपयुक्त प्रतिनिधि बनेंगे। उनका जीवन अनुग्रह से रूपांतरित होने के उनके पेशे से बेहतर मेल खाएगा। शिष्य को यह याद रखना चाहिए कि जब तक यह प्रक्रिया कुछ समय तक नहीं चलती, तब तक युवा मसीही के जीवन में कुछ विसंगतियां दिखाई देंगी।

"योग्य चाल चलने" का एक भाग "हर एक अच्छे काम में फलदायी होना था।" हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब एक युवा मसीही अभी तक हर अच्छे काम में फलदायी नहीं है। हो सकता है कि वह अभी भी उतना ज़िम्मेदार और कर्तव्य के प्रति सचेत न हो जितना उसे होना चाहिए।

वचन हमें यह भी बताते हैं कि हम परमेश्वर की महिमामय सामर्थ से मजबूत हो सकते हैं ताकि हम आनन्द के साथ सहन कर सकें और धैर्य रख सकें। एक व्यक्ति जो सेवा करते और धीरज धरते हुए मसीही आनन्द को बनाए रख सकता है, वह कुछ आत्मिक परिपक्वता प्राप्त कर चुका है।

पौलुस की प्रार्थना के बारे में निष्कर्ष

युवा मसीहियों के लिए पौलुस की प्रार्थना हमें शिष्यत्व के कार्य के बारे में बहुत कुछ बताती है। विश्वासियों के विकास के लिए हमारे पास सही लक्ष्य होने चाहिए। हमें प्रगति को पहचानने में सक्षम होना चाहिए। हमें एक युवा मसीही में विसंगतियों, गलतफहमियों और गैरज़िम्मेदारी को देखकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। हमें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि सभी मसीही गुण अचानक प्रकट होंगे।

हमें ध्यान देना चाहिए कि पौलुस अपने प्रशिक्षण या सेवकाई कौशल के विकास के बारे में सबसे अधिक चिंतित नहीं था। वे अपने विश्वास और मसीही चरित्र के विकास के बारे में सबसे अधिक चिंतित था। हमें ऐसे लोगों से संतुष्ट नहीं होना चाहिए जो सेवाकाई का काम तो कर सकते हैं लेकिन उनमें मसीही चरित्र नहीं है।

शिक्षक अपने उदाहरण के कारण और सूचना के मूल्य के कारण महत्वपूर्ण है। उपरोक्त दो प्रार्थनाओं में सीखने पर जोर दिया गया है। ज्ञान आत्मिक प्रक्रिया का हिस्सा है। सत्य के प्रयोग से शिक्षक का बहुत प्रभाव पड़ता है।

हमें उन युवा मसीहियों के लिए पौलुस की प्रार्थना करनी चाहिए जिन्हें हम प्रभावित करते हैं। इन प्रक्रियाओं को उनके जीवन में घटित होने में मदद करने के लिए हमें पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करना चाहिए।

निम्नलिखित प्रार्थना नए मसीहियों के लिए पौलुस की प्रार्थना पर आधारित है।

.एक युवा मसीही के लिए प्रार्थना:

परमपिता परमेश्वर,

मैं ____________ के लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप उसे पूरी तरह से शुद्ध कर दें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह अपने कार्यों, व्यवहारों और उद्देश्यों में पवित्र रहे।

आपके लिए उसके प्यार को बढ़ने में मदद करें, ताकि वह और बेहतर तरीके से समझ सके कि उसके लिए आपकी पूर्ण इच्छा क्या है।उसे यह बताने के लिए तैयार रहें कि सबसे अच्छा क्या है और हमेशा इसे चुनना है, ताकि उसका जीवन आपके गौरव का फल हो।

हर चीज में आपको प्रसन्न करते हुए और आपके तरीकों के बारे में अधिक सीखते हुए, एक मसीही दैनिक जीवन जीने में उसकी मदद करें। उसे आप से शक्ति प्राप्त करने में सहायता करें, ताकि वह विजयी होकर जीवित रह सके और परीक्षाओं को आनन्द के साथ सह सके। हो सकता है कि वह आपके द्वारा दिए गए अनुग्रह के लिए हमेशा आभारी रहें।

यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ, आमीन।

अनुशंसित संसाधन

पुस्तकें:

Coleman, Robert. *The Master Plan of Evangelism*. Ada: Revell, 2010.

Coleman, Robert. *The Master Plan of Discipleship*. Ada: Revell, 1997.

Eims, Leroy. *The Lost Art of Disciple Making*. Grand Rapids: Zondervan, 1978.

Friedeman, Matthew. *The Master Plan of Teaching*. Wheaton: Victor Books, 1991.

Gorman, Julie. *Community That is Christian: A Handbook on Small Groups*. (2nd edition). Ada: Baker Books, 2002.

Neighbor, Ralph. *Where Do We Go from Here?* Touch Publications, 1991. (Available on Kindle, 2011.)

Snyder, Howard*. The Radical Wesley: Patterns for Church Renewal*. Downers Grove: Intervarsity Press, 1980.

Snyder, Howard. *The Problem of Wineskins*. Franklin: Seedbed Publishers, 2017.

Wilkinson, Bruce. *The Seven Laws of the Learner*. New York: Multnomah, 1992.

ऑनलाइन संसाधन:

सुसमाचार प्रचार प्रशिक्षण, सुसमाचार पर्चे, और अन्य जानकारी रे कम्फर्ट और किर्क कैमरून द्वारा https://www.livingwaters.com/ पर उपलब्ध है।

चित्रित आरेखों का उपयोग करते हुए बाहरी सुसमाचार प्रचार के बारे में जानकारी के लिए, ओपन एयर प्रचारकों की वेबसाइट http://www.oacgb.org.uk/ और http://www.oacusa.org/ देखें।

नए विश्वासिओं को अनुशासित करने के लिए उत्कृष्ट सामग्री नाथन ब्राउन द्वारा https://comeafterme.com/ पर उपलब्ध है।

कार्यभारों का रिकॉर्ड

छात्र का नाम ___________________________

हस्ताक्षर करें जब प्रत्येक कार्य पूरा हो गया है। Shepherds Global Classroom से प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए सभी असाइनमेंट सफलतापूर्वक पूरे होने चाहिए।

पाठ	कार्यभार 1	कार्यभार 2	कार्यभार 3
1			
2			
3			
4			
5	(परीक्षा)		
6			
7			
8			
9			
10			(परीक्षा)
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			

Shepherds Global Classroom से समापन प्रमाणपत्र के लिए आवेदन हमारे वेबपेज www.shepherdsglobal.org पर पूरा किया जा सकता है। प्रमाण पत्र एसजीसी के अध्यक्ष से डिजिटल रूप से उन प्रशिक्षकों और सुविधाकर्ताओं को प्रेषित किए जाएँगे जो अपने छात्र की ओर से आवेदन पूरा करते हैं।

मसीह पर केंद्रित। प्रशिक्षण। हर जगह।

shepherds GLOBAL CLASSROOM

SHEPHERDSGLOBAL.ORG